मानव संस्कार ग्रन्थमाला-सातवाँ पुष्प

वैदिक प्रार्थनाएँ एवं धार्मिक कर्म

मांगलिक सुअवसरों पर प्रयोग होने वाली वैदिक प्रार्थनाएँ

मन्त्र उच्चारण सहायता
एवं
मन्त्र भावार्थ सहित

संकलनकर्ता
मदन लाल अनेजा

प्रकाशक :
मानव संस्कार फाउन्डेशन
दिल्ली-110051,
Website - **www.manavsanskar.com**
e-mail - **manavsanskar.mla@gmail.com**
www.facebook.com/vaidicvichaar

प्रकाशक :

मदन लाल अनेजा

मानव संस्कार फाउन्डेशन

4 ए (तीसरी मंजिल) नया गोविन्द पुरा,

राम मन्दिर गली, दिल्ली-110051,

मो0- 09873029000,

Website -

www.manavsanskar.com

e-mail -

manavsanskar.mla@gmail.com

© सर्वाधिकार- मदन लाल अनेजा

पुस्तक मिलने का पता :-

1. विक्रान्त अनेजा

सी-79, तक्षशिला अपार्टमेन्ट,

प्लाट नं0-57, आई0पी0

एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

2. मदन लाल अनेजा

कुटिया नं0 -179, मुख्य शाखा,

आर्य वानप्रस्थ आश्रम,

ज्वालापुर, हरिद्वार

3. विशाल अनेजा

3 ए (तीसरी मंजिल) नया गोविन्द पुरा,

राम मन्दिर गली, दिल्ली-110051,

मो0- 09873029000,

All rights reserved. No part of this publication be reproduced, stored in a retrievel system, translated or transmitted in any form or by any means,electronic, mechanical, photocopying, recordng or otherwiese without the prior permission of the writer.

प्रथम संस्करण : नवम्बर 2020

(वेद प्रचार-प्रसार हेतु नि:शुल्क वितरण)

All books of Manav Sanskar Foundation
can be down-loaded free of cost

at :

www.manavsanskar.com

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	भूमिका	3–5
2.	प्रार्थना का अर्थ	6–7
3.	वैदिक प्रार्थना 1 व 2	8–9
4.	ईश्वर स्तुति–प्रार्थना–उपासना मन्त्राः	10–20
5.	ब्रह्म यज्ञ (वैदिक सन्ध्योपासना)	21–39
6.	हवन करने से पहले की तैयारी	40–41
7.	यज्ञ सम्बन्धित कुछ आवश्यक बातें	42–44
8.	यज्ञोपवीत मन्त्र	44
9.	देव यज्ञ : अग्निहोत्र – हवन	45–66
10.	मंगल कामना	66–67
11.	यज्ञ–प्रार्थना	68
12.	शान्ति पाठ	69
13.	बलवैश्वदेवयज्ञ	70
14.	विशेष यज्ञ–मन्त्राः	71–82
15.	अथ स्वस्तिवाचनम्	83–97
16.	अथ शान्तिकरणम्	98–109
17.	अमावस्या पर दी जाने वाली आहुतियाँ	110–112
18.	पौर्णमासी पर दी जाने वाली आहुतियाँ	113–116
19.	नामकरण संस्कार	117–120
20.	मुण्डन (चूड़ा कर्म) संस्कार	121–124
21.	जन्म दिवस पर दी जाने वाली आहुतियाँ	125–128
22.	भूमि पूजन के मन्त्र	129–131
23.	गृह प्रवेश की आहुतियाँ	132–137

24. व्यापार कार्य आरम्भ करने की आहुतियाँ 138–141
25. नवसंवत्सरारम्भ पर्व पर दी जाने वाली आहुतियाँ.... 142–143
26. श्रावणी पर्व पर दी जाने वाली आहुतियाँ 144–147
27. दीपावली पर्व पर दी जाने वाली आहुतियाँ.... 148–151
28. मकर संक्रान्ति पर्व की आहुतियाँ..... 152
29. वसन्त पंचमी पर्व की आहुतियाँ..... 153
30. होली पर्व की आहुतियाँ..... 154–156
31. संगठन–सूक्त (एकता संगठन के मन्त्र)..... 157–158
32. शान्ति पाठ 158
33. शान्ति गीत 159
34. प्रात:काल प्रार्थना एवं चिन्तन के मन्त्र..... 159–160
35. रात्रि शयनकालीन मन्त्रा: 161–162
36. भोजन से पूर्व बोलने वाला मंत्र 163
37. आत्मोन्नति के लिए संकल्प की आहुतियाँ.... 164
38. अच्छे स्वास्थ्य के लिए आहुतियाँ..... 165–166
39. वैवाहिक वर्षगांठ पर दी जाने वाली आहुतियाँ 167
40. देश–विदेश तथा दूरस्थ स्थान पर जाते समय
विदाई समारोह हेतु दी जाने वाली आहुतियाँ..... 167–168
41. मंगल गीत..... 168
42. गृहस्थधर्म पञ्चक..... 169
43. नामकरण संस्कार गीत 170
44. राष्ट्रीय प्रार्थना 171
45. त्वमेव माता च पिता त्वमेव..... 171
46. आर्य–ध्वज गीत..... 172
47. जयघोष..... 173
48. आर्यसमाज के नियम 174

भूमिका

मनुष्य के पास अपनी दो चीजें हैं–अपना शरीर और आत्मा। दैनिक जीवन को वेदानुसार जीने से शरीर स्वस्थ और आत्मा पवित्र बनती जाती है। जीवन को उत्तम बनाने के लिए हमें वैदिक नित्य कर्मों को अपनी दिनचर्या में स्थान देना चाहिए।

समाज में सभी धार्मिक एवं नित्य कर्मों में प्रयोग होने वाले वैदिक मन्त्रों की एक से एक उत्तम व्याख्या हिन्दी भाषा में आजकल उपलब्ध है। परन्तु साधारण योग्यता रखने वाले मनुष्य के लिए वैदिक मन्त्रों का सही उच्चारण करना कठिन है। मन्त्रों की व्याख्याओं को समझना और भी कठिन है, विशेषकर संस्कृत भाषा के ज्ञान के अभाव में। यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है।

उपरोक्त कठिनाई को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पुस्तक को लिखने का प्रयास किया गया है ताकि अधिक से अधिक आर्यजन विभिन्न प्रकार के धार्मिक कर्मकाण्डों में प्रयोग होने वाले वैदिक मन्त्रों का उच्चारण सरलता से कर सकें। उनको कण्ठस्थ कर सके, उनके अर्थ, सरल भावार्थ और उद्देश्य को समझ कर अपने जीवन में आध्यात्मिक उन्नति कर सकें। ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त कर सकें।

पुस्तक में वैदिक प्रार्थनाओं, सन्ध्या और यज्ञ (हवन) के अतिरिक्त अधिकतर सुअवसरों पर प्रयोग होने वाले वैदिक मन्त्रों को भी सम्मिलित किया गया है।

प्रत्येक वैदिक मन्त्र के बाद मन्त्र के शब्दों का सन्धि–विच्छेद–

सरल पाठ (मन्त्र उच्चारण में सहायता) भी दिया गया है ताकि वे आर्यजन जिनको संस्कृत का पर्याप्त ज्ञान नहीं है, मंत्र का उच्चारण करना सीख सकें। स्वयं भी कर्मकाण्ड कर सकें। सामान्य व्यक्ति में वेदों के प्रति जागरूकता लाने और आध्यात्मिक उन्नति के लिए, प्रत्येक मन्त्र का हिन्दी में सरल भावार्थ भी दिया गया है।

आज की युवा पीढ़ी संस्कृत भाषा के शास्त्रों का अध्ययन करने और वेदों की ईश्वर-कृत वाणी को समझने में कठिनाई का अनुभव करती है। इसलिए अधिकतर मन्त्रों के भावार्थ अंग्रेजी भाषा में भी देने का प्रयत्न किया गया है। आशा करता हूँ कि विदेशों में रहने वाले भारतीय भी इस पुस्तक से अत्यन्त लाभान्वित होंगे।

पाठकों से निवेदन है कि सरल पाठ (उच्चारण में सहायता) एवं भावार्थ को क्रमशः व्याकरण व वैदिक शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से न देखें क्योंकि पुस्तक में सामान्य व्यक्ति द्वारा वैदिक मन्त्रों व उनके भावार्थ को सुगमता से कंठस्थ करने व समझने की भावना को ही प्रमुख महत्त्व दिया गया है।

वेद और आर्ष ग्रन्थों में सामान्य व्यक्ति की रुचि उत्पन्न हो, उपासना व वैदिक प्रार्थनाओं में उसकी आस्था बढ़े, संस्कृत भाषा का कम ज्ञान होने पर भी व्यक्ति सामाजिक कर्मकाण्ड करने की योग्यता स्वयं प्राप्त कर सके, समाज में आध्यात्मिक अज्ञानता कम हो सके, इन्हीं उद्देश्यों के साथ इस पुस्तक को समाज के सामने प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

वैदिक प्रार्थनाओं व उनमें प्रयोग हुए मन्त्रों के हिन्दी/अंग्रेजी में सरल भावार्थों के संकलन करने में लेखक ने अनेक पुस्तकों की सहायता ली है जिनमें मुख्य हैं-(1) दैनिक यज्ञ पद्धति-सम्पादक-मूलचन्द गुप्त, (2) 'पञ्चयज्ञ प्रकाश'-सम्पादक- पं आरीक्षत शास्त्री, (3) 'वैदिक सन्ध्या-हवन-यज्ञ' आर्यसमाज द्वारका, नई दिल्ली एवं (4) 'आखिर क्यों' - लेखक-डॉ. आनन्द अभिलाषी-पूर्व प्रधान, आर्यवानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार।

मैं इन सभी वैदिक विद्वानों और सम्पादकों को नमन करता हूँ। अपना आभार प्रकट करता हूँ जिनकी पुस्तकों से सामग्री लेकर मैंने यह संकलन तैयार किया है और इस पुस्तक को, भारतीय ऋषियों की परम्परा के अनुसार, जनकल्याण हेतु नि:शुल्क प्रकाशित करने का निश्चय किया है।

मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए-भारत एवं विदेश में-उपयोगी सिद्ध होगी।

- मदन लाल अनेजा

प्रार्थना का अर्थ

'प्रार्थना' शब्द का अर्थ 'मांगना' या 'याचना' नहीं है परन्तु 'चाहना' है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्रार्थना को 'हृदय के भाव के सम्मुख रखना' कहा है। महात्मा नारायण स्वामी (संस्थापक आर्य विरक्त (वानप्रस्थ+संन्यास) आश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार) ने प्रार्थना को 'इच्छाशक्ति का विकास' कहा है जिससे जीवन की दिशा को नया मोड़ मिलता है, जिसमें उसकी सफलता निहित है। इच्छाशक्ति से पूर्ण पुरुषार्थ की कामना उत्पन्न होती है और उत्तम कर्मों की सिद्धि होती है। महर्षि दयानन्द के अनुसार प्रार्थना से अभिमान का नाश होता है जो मनुष्य का भयंकरतम शत्रु है। प्रार्थना अन्तःकरण को शुद्ध एवं सशक्त बनाती है और यह पापमय जीवन से उबारने के लिए दिव्य नौका का काम करती है। स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं कि आत्मशुद्धि के लिए 'प्रार्थना' से बढ़कर कोई अन्य शस्त्र संसार में नहीं है।

प्रार्थना केवल सर्वशक्तिमान, सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक परमेश्वर से ही करनी उचित है। प्रार्थना द्वारा की गई पुकार को परमात्मा अवश्य सुनता है। सन्धिवेला (प्रातः एवं सायं) प्रार्थना के लिए एक विशेष महत्त्व रखता है। निश्चित समय पर प्रार्थना करने से सम्पूर्ण जीवन प्रार्थनामय हो जाता है जिससे कि शक्ति और शान्ति की प्राप्ति होती है। प्रार्थना के लिए एकान्त स्थान का होना भी आवश्यक है जिससे मन की एकाग्रता उत्पन्न होती है। अन्तःकरण से मूक प्रार्थना में तल्लीन होकर मनुष्य स्वयं को भूलकर विश्वात्मा

से आत्मिक वार्तालाप करता है।

पापमय जीवन का त्याग कर निष्काम भावना से ही प्रार्थना स्वीकार होती है। प्रार्थना से पूर्व प्राणायाम, आचमन तथा मार्जन मन की शीघ्र शान्ति में सहायक होते हैं। इससे आहार, विचार तथा आचार में शुद्धता आती है तथा साधक इससे ऊँचा उठता है। प्रार्थना में परमात्मा से अपनी हितकर मेधा बुद्धि की कामना करनी उचित है। प्रार्थना की स्वीकृति में विलम्ब से हमें व्याकुल नहीं होना चाहिए। सच्चे मन से की गई प्रार्थना कभी बेकार नहीं जाती। समुद्र में गोता बार-बार लगाने से मोती अवश्य हाथ लगते हैं।

न्यायकारी परमात्मा की कर्मफल व्यवस्था में सच्ची आस्था रखने वाला पापों के फल भोग से बचने की प्रार्थना कभी नहीं करता। वह तो आगामी पापों से छुटकारा पाने की प्रार्थना करता है और वह अवश्यमेव स्वीकृति होती है। प्रार्थना का तात्पर्य उद्योग तथा पुरुषार्थ की उत्पत्ति एवं उपाय करना है। पुरुषार्थ सदा प्रारब्ध से प्रबल होते हैं। प्रार्थना वह कुंजी है जिसके द्वारा सुख विशेष के द्वार खुल जाते हैं। परमात्मा पुरुषार्थी की सहायता अवश्य करते हैं।

वैदिक प्रार्थना-1

हे सकल जगत के उत्पत्तिकर्ता परमात्मन्, इस अमृत वेला में आपकी कृपा और प्रेरणा से आपको श्रद्धा से नमस्कार करते हुए उपासना करते हैं कि हे दीन बन्धु आपकी पवित्र ज्योति जगमगा रही है। सूर्य, चन्द्र, सितारे आपके प्रकाश से इस भूमंडल को प्रकाशित कर रहे हैं, भगवान् आप हमारी सदा रक्षा करते हैं। आप एक रस हैं, आप दया के भण्डार हैं, दयालु भी हैं और न्यायकारी भी हैं। आप सब प्राणिमात्र को उनके कर्मों के अनुसार गति प्रदान करते हैं, हम आपको, संसार के कार्य में फंसकर भूल जाते हैं परन्तु आप हमारा कभी त्याग नहीं करते, हम यही प्रार्थना करते हैं कि मन, कर्म, वाणी से किसी को दु:ख न दें, हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण व व्यवसनों और दु:खों को दूर करें और कल्याण कारक गुण, कर्म और शुभ विचार प्राप्त करायें।

प्रभु हमारी वाणी में मिठास हो, हमारे आचार तथा विचार शुद्ध हों, हमारा सारा परिवार आपका बनकर रहे, उनको मेधा बुद्धि प्रदान करें और दीर्घ आयु तक हम शुभ मार्ग पर चलते रहें और सुखी जीवन व्यतीत करें। हमारे कर्म भी उज्जवल और स्वच्छ हों, सर्वपालक सर्वपोषक सारे जगत् के रचने वाले पिता दुष्ट कर्मों से बचाकर हमको उत्तम बुद्धि और पराक्रम प्रदान कीजिये। हमको केवल मात्र आपका सहारा है। हमारी कर्म तथा ज्ञान इन्द्रियों को शुभ मार्ग पर चलने की प्रेरणा देवें और इनको बल देवें ताकि सब शुभ सुनें, शुभ देखें, शुभ मार्ग पर चलें, शुभ सोचें और निष्काम भाव से प्राणी मात्र की सेवा करते हुए अन्त में आपकी ज्योति को प्राप्त हों।

ओ३म् शान्ति:! शान्ति:! शान्ति!

वैदिक प्रार्थना-2

हे सर्वाधार, सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर! आप अनन्तकाल से अपने उपकारो की वर्षा किये जाते हो। प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को आप ही प्रतिक्षण पूर्ण करते हो। हमारे लिए जो कुछ शुभ और हितकर है उसे आप बिना माँगे स्वयं हमारी झोली में डालते जाते हो, आपके आँचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है। आपकी चरण-शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है।

हे जगत्पिता परमेश्वर! हममें सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो। हम आपकी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बनें। अन्तःकरण को मलिन बनाने वाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें। अपने हृदय की आसुरीय प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो! हम आपको ही पुकारते हैं और आपका ही आँचल पकड़ते हैं।

हे परम पावन प्रभो! हममें सात्त्विक प्रवृत्तियाँ जाग्रत हों। क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहंकार-शून्यता इत्यादि शुभ भावनाएँ हमारी सम्पत्ति हों। हमारा शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हो, मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो, आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो। आपके संस्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों। हृदय दया तथा सहानुभूति से भरा हो। हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो। विद्या और ज्ञान से हम परिपूर्ण हों। हमारा व्यक्तित्व महान् तथा विशाल हो।

हे प्रभो! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो। दीनातिदीनों के मध्य में विचरने वाले आपके चरणारविन्दों में हमारा जीवन अर्पित हो। इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करें।

ओ३म् शान्तिः! शान्तिः !! शान्तिः !!

ईश्वर-स्तुति-प्रार्थनोपासनामन्त्राः

(Prayer and Adoration of God)

ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना उपासना के मन्त्रों का उच्चारण अर्थ सहित करने से सभी प्रकार के अभिमान और अहंकार को दूर करने में सफलता मिलती है। इसलिए इन मन्त्रों का पाठ अर्थ सहित अथवा सरल भावार्थ सहित प्रतिदिन श्रद्धा और भक्ति से करें।

ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना-उपासना के आठ मन्त्रों का पाठ प्रत्येक संस्कार, विशेष अनुष्ठान, मांगलिक अवसर आदि के प्रारम्भ में भी किया जाता है। अग्निहोत्र (यज्ञ) के प्रारम्भ में भी इन मन्त्रों का पाठ किया जाता है। यद्यपि ये मन्त्र अग्निहोत्र का अंग नहीं हैं। इसलिए अग्निहोत्र से पहले आचमन मन्त्र 'शन्नो देवी.' का उच्चारण करके सन्ध्योपासना में बताई गई विधि से 3 बार आचमन करने के पश्चात् इन मन्त्रों का पाठ किया जाता है।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव।।1।। (यजुर्वेद 30/3)

सरल पाठ

ओ३म् विश्वानि देव सवि तरदुरि तानि परासुव।
यद भद्रं तन्न आसुव।।

हे (सवितः) सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता समग्र ऐश्वर्ययुक्त देव शुद्धस्वरूप सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके (नः) हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को (परासुव) दूर कर दीजिए (यत्) जो (भद्रम्) कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं (तत्) सब हमको (आसुव) प्राप्त कीजिये।

तू सर्वेश सकल सुखदाता, शुद्ध स्वरूप विधाता है।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, शरण तेरी जो आता है।
सारे दुगुर्ण दुर्व्यसनों से, हमको नाथ बचा लीजे।
मङ्गलमय गुण-कर्म-पदारथ, प्रेम-सिन्धु हमको दीजे।

सरल भावार्थ

ओ३म्। हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्यों व सुखों के दाता, सर्वशक्तिमान सविता देव। आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन एवं दुखों को दूर कर दीजिए, और जो कुछ अच्छा और कल्याणकारक है वह हमें प्राप्त कराइए।

Aum. O God Almighty, The Creator of the Universe and Dispenser of all happiness! We pray Thee to dispel (wipe off) all our bad habits, bad deeds and calamities and bestow upon us what is blessed, good, auspicious and beneficial.

ओ३म्! हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।2।।

– यजु0 13/4

सरल पाठ

ओ३म् हिरण्य गर्भः सम वर्त ताग्रे
भूतस्य जातः पति रेक आसीत्।
स दा धार पृथिवी द्या मु तेमां कस्मै
देवाय हविषा विधेम।।2।।

जो (हिरण्य गर्भः) स्वप्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्य-चन्द्राद्रि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो (भूतस्य) उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का (जातः) प्रसिद्ध (पतिः) स्वामी (एकः)

एक ही चेतन स्वरूप (आसीत्) था, जो अग्रे सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व (समवर्तत) वर्तमान था, (सः) वह (इमामं) इस (पृथिवीम्) भूमि (उत) और(द्याम्) सूर्यादि को (दाधार) धारण कर रहा है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) शुद्ध परमात्मा के लिए (हविषा) ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से (विद्येम) विशेष भक्ति किया करें।

तू ही स्वयं प्रकाश सुचेतन, सुखस्वरूप दुःखत्राता है।
सूर्य-चन्द्रलोकादिक को, तू रचता और टिकाता है।।
पहले था, अब भी है तू ही, घट-घट में व्यापक स्वामी।
योग, भक्ति, तप द्वारा तुझको, पावें हम अन्तर्यामी।।

सरल भावार्थ

ओ३म्। हे सर्वव्यापक उत्पत्ति कर्ता प्रकाशक प्रभो! आप ही ने प्रकाश करने वाले सूर्य चन्द्रादि को रचा एवं धारण किया है। इस धरती एवं आकाश को आप ही धारण कर रहे हो। आप जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व भी विद्यमान थे। हमें उसी सुखस्वरूप भगवान की उपासना करनी चाहिए।

Aum. Oh the all pervading God, the Creator and supporter of the earth and heaven, all luminous bodies like the Sun, the Moon thou art the master of whole Universe. Thou existed before creation. We should with fervent devotion, adore you.

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।3।।

यजु0 25/13

सरल पाठ

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः, कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(यः) जो (आत्मदाः) आत्मज्ञान का दाता, (बलदाः) शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा, (यस्य) जिसकी (विश्वे) सब (देवाः) विद्वान् लोग (उपासते) उपासना करते हैं, और (यस्य) जिसका (प्रशिषम्) प्रत्यक्ष सत्स्वरूप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, (यस्य) जिसका (छाया) आश्रय ही (अमृतम्) मोक्ष-सुखदायक है (यस्य) जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही (मृत्युः) मृत्यु आदि दुख का हेतु है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकल ज्ञान के देनेहारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए (हविषा) आत्मा और अन्तःकरण से (विधेम) भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।

तू ही आत्मज्ञान बल दाता, सुयश विज्ञजन गाते हैं।
तेरी चरण शरण में आकर, भवसागर तर जाते हैं।।
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे विसराने में
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु, तुझसे लगन लगाने में।

सरल भावार्थ

ओ३म् जो आध्यात्मिक एवं शारीरिक बल देने वाला है, सम्पूर्ण विश्व जिस प्रभु की उपासना करता है, जिसकी शरण से सुख और मोक्ष मिलता है। उसके आश्रय के बिना अज्ञान, दुःख एवं मृत्यु है। हम लोग उस सुख स्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के लिए शुद्ध अन्तः करण से भक्ति विशेष करें।

Aum. God is the Imparter of spiritual knowledge and

physical strength. The whole world adores Him whose protection provides emancipation and whose indiffrence causes all kinds of miseries and death. We should meditate with faith and devotion upon that God.

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव।
य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।4।।

यजु0 23/3

सरल पाठ

ओ३म् यः प्राणतो नि मिषतो महि त्वै क इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्वि पदश चतुष् पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(यः) जो (प्राणतः) प्राणवाले और (निमिषतः) अप्राणिरूप (जगतः) जगत् का (महित्वा) अपनी अनन्त महिमा से (एकः इत्) एक ही (राजा) विराजमान राजा (बभूव) है, (यः) जो (अस्य) इस (द्विपदः) मनुष्यादि और (चतुष्पदः) गौ आदि प्राणियों के शरीर की (ईशे) रचना करता है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकलैश्वर्य के देनेहारे परमात्मा के लिए (हविषा) अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसी की आज्ञा-पालन में समर्पित करके (विधेम) विशेष भक्ति करें।

तूने अपनी अनुपम माया, से जग-ज्योति जगाई है।
मनुज और पशुओं को रचकर, निज महिमा प्रगटाई है।
अपने हिय-सिंहासन पर, श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं।
भक्ति भाव से भेंटें लेकर, शरण तुम्हारी आते हैं।

सरल भावार्थ

ओम् ही इस सारे संसार का एक मात्र राजा है। वह ही चर

और अचर जगत् का निर्माता है। वह हमारे एक-एक श्वास तथा पलक झपकने तक का मूल कारक है। ओ३म् ही सब जीवों का-चाहे दो पाए अथवा चौपाए हों-स्वामी है। हम उस सुखस्वरूप परमात्मा की उपासना करते हैं।

Aum. Oh God! you are the sole Ruler of all creation, animate and inanimate, of the very breathing and winking of every living being, bestowing corporal existence on all creatures-biped (like men) and quadrupeds (like the cow). We meditate with faith and devotion upon that God-the personification of all bliss.

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।5।।

सरल पाठ

येन द्यौ रुग्रा पृथिवी च दृढ़ा, येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः, कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(येन) जिस परमात्मा ने (उग्रा) तीक्ष्ण स्वभाव वाले (द्यौः) सूर्य आदि (च) और (पृथिवी) भूमि को (दृढ़ा) धारण किया, (येन) जिस जगदीश्वर ने (स्वः) सुख को (स्तभितम्) धारण किया और (येन) जिस ईश्वर ने (नाकः) दुःख रहित मोक्ष को धारण किया है, (यः) जो (अन्तरिक्षे) आकाश में (रजसः) सब लोक-लोकान्तरों को (विमानः) विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस (कस्मै) सुखदायक (देवाय) कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए (हविषा) सब सामर्थ्य से (विधेम) विशेष भक्ति करें।

तारे, रवि चन्द्रादि बनाकर, निज प्रकाश चमकाया है।
धरणी को धारण कर तूने, कौशल अलख जगाया है।
तू ही विश्व-विधाता पोषक, तेरा ही हम ध्यान धरें।
शुद्ध भाव से भगवान्! तेरे, भजनामृत का पान करें।

सरल भावार्थ

ओ३म् ने उग्र स्वभाव वाले सूर्य और पृथ्वी को धारण किया हुआ है। उस सुखस्वरूप परमात्मा ने दुःख रहित मोक्ष को धारण किया है। वह आकाश में लोक लोकान्तरों को निर्मित कर भ्रमण कराता है हम लोग उस सुखस्वरूप परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।

Aum. Oh God, the Sustainer, we adore you with all the strength of our body, mind and soul that Blissful Supreme being, the lord of all our desires, by whom the Sun, the Earth and other planets are regulated and fixed in their respective orbits. You are the fountain-head of all genuine happiness and deliverance and primary cause of millions of planetary systems.

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।6।।

ऋग्0 10/121/10

सरल पाठ

प्रजापते न त्व देता न्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत् कामास्ते जुहु मस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।

हे (प्रजापते) सब प्रजा के स्वामी परमात्मन्। (त्वत्) आपसे (अन्यः) भिन्न दूसरा कोई (ता) उन (एतानि) इन (विश्वा) सब

(जातानि) उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों को (न) नहीं (परिबभुव) तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। (यत्कामाः) जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होके हम लोग भक्ति करें (ते) आपका (जुहुमः) आश्रय लेवें और वाञ्छा करें, (तत्) उस-उसकी कामना (नः) हमारी सिद्ध (अस्तु) होवे, जिससे (वयम्) हम लोग (रयिणाम्) धनैश्वर्यों के (पतयः) स्वामी (स्याम) होवें।

तुझसे बड़ा न कोई जग में, सबमें तू ही समाया है।
जड़ चेतन सब तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है।
हे सर्वोपरि विभो! विश्व का, तूने साज सजाया है।
धन दौलत भरपूर दीजिए, यही भक्त को भाया है।

सरल भावार्थ

ओ३म् ही इस संसार को बनाने वाला है। वह ही सबसे महान् है। उस जैसा न तो इस संसार में कोई हुआ है, न है और न ही कभी होगा।

जिस जिस पदार्थ की कामना करने वाले हम आपका आश्रय लें और प्रार्थना करें वे सब हमारी कामनाएं पूर्ण हों जिससे हम धन ऐश्वर्यों के स्वामी बनें।

Aum. O God, the Creator of the Universe, you are the Supreme. No one has ever been equal to you, No one is and no one will be. May the things we desire and for which pray to Thee be ours. May we be lords and protectors of bounteous wealth and other things of the world.

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।7।।

– यजु0 32/10

सरल पाठ

स नो बन्धुर जनिता स विधाता धा मानि वेद भुव नानि विश्वा।
यत्र देवा अमृत मान शाना स्तृतीय धामन्न ध्यैरयन्त।।

हे मनुष्यो! (सः) वह परमात्मा (नः) अपने लोगों को (बन्धुः) भ्राता के समान सुखदायक, (जनिता) सकल जगत् का उत्पादक, (सः) वह विधाता सब कर्मों को पूर्ण करने हारा, (विश्वा) सम्पूर्ण (भुवनानि) लोकमात्र के (धामानि) नाम, स्थान और जन्मों को (वेद) जानता है और (यत्र) जिस (तृतीये) सांसारिक सुख-दुःख से रहित नित्यानन्द-युक्त (धामन्) मोक्ष-स्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में (अमृतम) मोक्ष को (आनशानाः) प्राप्त होके (देवाः) विद्वान लोग (अध्यैरयन्त) स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिल के सदा उसकी भक्ति किया करें।

तू गुरु है, प्रजेश भी तू है, पाप पुण्य फल दाता है।
तू ही सखा बन्धु मम तू ही, तुझसे ही सब नाता है।
भक्तों को इस भव बन्धन से, तू ही मुक्त कराता है।
तू है अज अद्वैत महाप्रभु, सर्वकाल का ज्ञाता है।

सरल भावार्थ

ओ३म् ही हमारा सच्चा और वास्तविक मित्र है। वह ही सकल जगत् का उत्पादक, सम्पूर्ण लोक मात्र के नाम, स्थान, जन्मों को जानने वाला है। सब विद्वान् लोग समस्त सांसारिक इच्छाओं का त्याग कर ज्ञान एवं मोक्ष की प्राप्ति हेतु उसकी उपासना करते हैं।

Aum. God is our real and sincere friend and Kinsman. He is the Producer and Disposer of the entire Universe.

He knows all the known and unknown worlds and prevades these worlds. All the learned men meditate upon God for the attainment of knowledge and salvation.

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम।।8।।

यजु0 40/16

सरल पाठ

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयो ध्यस्म् ज्जुहु राण मेनो भूयिष् ठान्ते नम उक्तिं विधेम।।

हे (अग्ने) स्वप्रकाशक, ज्ञानस्वरूप, सब जगत के प्रकाश करनेहारे (देव) सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जिससे (विद्वान्) सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके (अस्मान्) हम लोगों को (राये) विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की (प्राप्ति) के लिए (सुपथा) अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से (विश्वानि) सम्पूर्ण (वयुनानि) प्रज्ञान और उत्तम कर्म (नय) प्राप्त कराइये और (अस्मत्) हमसे (जुहुराणम्) कुटिलतायुक्त (एनः) पापरूप कर्म को (युयोधि) दूर कीजिए। इस कारण हम लोग (ते) आपकी (भूयिष्ठाम्) बहुत प्रकार की स्तुतिरूप (नमः उक्तिम्) नम्रतापूर्वक प्रशंसा (विधेम) सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें।

तू है स्वयं प्रकाश रूप प्रभु, सबका सिरजन हार तू ही।
रसना निशि-दिन रटें तुम्हीं को, मन में बसता सदा तू ही।
कुटिल पाप से हमें बचाते, रहना हरदम दयानिधान।
अपने भक्तजनों को भगवन्! दीजे यही विशद वरदान।

सरल भावार्थ

ओ३म्। हे अग्निदेव (ईश्वर)। आप स्वप्रकाश स्वरुप एवं ज्ञानमय हैं। आप हमें ज्ञान मय, धर्ममय सच्चे रास्ते पर ले चलिए ताकि हमसे कुटिलता युक्त पाप रूप कर्म दूर हों।

इस कारण हम आपकी बहुत प्रकार की स्तुति और प्रशंसा सदा करते रहें और सर्वदा आनन्द में रहें।

Aum. O God! You are the self-illuminating, You are Agnidev, the personification of knowledge. Kindly lead us on the path followed by the wise. We pray to Thee to keep us off from crooked and vicious ways so that we may meditate upon you and enjoy prominent bliss.

।।इतिश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनाप्रकरणम्।।

जो मनुष्य ईश्वर की स्तुति,
प्रार्थना और
उपासना नहीं करता,
वह कृतघ्न और महामूर्ख होता है।

– ऋषि दयानन्द

ब्रह्म यज्ञः (वैदिक सन्ध्योपासना)

(The Twilight Prayer)

भली-भाँति ध्यान किया जाए परमेश्वर का जिसमें, वह सन्ध्या है।

सन्ध्या ध्यान योग की सर्वांगपूर्ण सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक प्रक्रिया है। सन्ध्या में आत्मा का जागरण होता है। पाप का विमोचन होता है। ईश्वर से मिलन होता है। सन्ध्या में सफलता के लिए जीवन में यम-नियम का पालन करना अनिवार्य है। प्रत्येक आर्य को प्रतिदिन प्रातः सायं दोनों सन्धि वेलाओं में सन्ध्योपासना करनी चाहिए।

सन्ध्या आरम्भ करने से पूर्व अपने शरीर की यथोचित शुद्धि करें। एकान्त, पवित्र और शान्त स्थान पर आसन बिछाएं। आसन पर सुविधापूर्वक बैठकर सन्ध्या प्रारम्भ करें।

।। अथ गायत्री मन्त्रः।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

(यजु0 36/3, ऋ0 3/62/10)

सरल पाठ

ओ३म् भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचो दयात्।

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम, दुखियों के कष्ट हरता है तू।
तेरा महान् तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, तू हो रहा है विद्यमान।

तेरा ही धरते ध्यान हम, मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठमार्ग पर चला।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे प्राण-स्वरूप, दु:ख-विनाशक और आनन्दस्वरूप भगवन्! हम सब उस जगत् उत्पादक, वरण करने योग्य दिव्य गुणों से युक्त परमेश्वर का ध्यान करें अथवा अपनी आत्मा में धारण करें, जिससे कि वह परमेश्वर हमारी बुद्धियों को उत्तम कामों में प्रेरित करे।

Aum is cause of our very existence, the shedder of miseries and the showerer (imparter) of happiness (Bliss). He is the most acceptable and the most worth-knowing. We should remember him. May he always inspire our intellectual faculties and lead them on to do only what is good.

आचमनमन्त्रः
(Sipping of Water)

जलपात्र से दाहिने हाथ की हथेली में थोड़ा जल लेकर निम्नलिखित मन्त्र को एक ही बार बोलकर तीन आचमन करें। आचमन करते हुए होठों से जल को सुड़कने की ध्वनि न करें। आचमन करने के बाद हाथ को जल से धो लें। इससे कण्ठ से कफ की थोड़ी-सी निवृत्ति होती है। यदि जल न हो तो आचमन न करें। मन्त्रोच्चारण अवश्य करें और इसके बाद मन्त्र के अर्थ पर विचार करें -

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टयआपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः।। यजु0 36/13

सरल पाठ

शं नो देवी र भिष्टय, आपो भवन्तु पीतये।

शंयो रभि स्र वन्तु नः।।17।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! सर्व-प्रकाशक, सुख-शान्तिदायक सर्वव्यापक देव! आप हम पर सब प्रकार की सुख शान्ति की वर्षा करें तथा हम मनोवांछित पूर्ण सुख शान्ति को प्राप्त करें।

Aum. May the gracious, omnipresent omnipotent and glorius God bestow blessings upon us and may God lead us to our desired goal of attaining perfect peace.

May the omnipotent God, the Illuminator of and the Bestower of bliss upon all, be so gracious as to shower the prosperity and happiness desired by us in our earthly life and also the perfect bliss of final emancipation.

इन्द्रियस्पर्शमन्त्राः
(Touching of Organs)

बाँए हाथ की हथेली में थोड़ा जल लेकर सीधे हाथ की मध्यमा और अनामिका (दूसरी और तीसरी) अंगुलियों के अग्र भाग से जल स्पर्श करके पहले दाहिने और फिर बाँए अंगों का निम्नलिखित मन्त्रों के बोलने के बाद स्पर्श करें-

ओ३म् वाक् वाक्।	इससे मुँह का दाँया भाग फिर बाँया भाग
ओ३म् प्राणः प्राणः।	इससे नाक का दाँया और फिर बाँया भाग
ओ३म् चक्षुः चक्षुः।	इससे पहले दायीं आँख और फिर बायीं आँख
ओ३म् श्रोत्रम् श्रोत्रम्।	इससे दाँया कान और फिर बाँया कान
ओ३म् नाभिः।	इससे नाभि को स्पर्श करें।

ओ३म् हृदयम्।	इससे हृदय को स्पर्श करें।
ओ३म् कण्ठः।	इससे कण्ठ (गला) का स्पर्श करें।
ओ३म् शिरः।	इससे मस्तक (सिर) को स्पर्श करें।
ओ३म् बाहुभ्यां यशोबलम्।	इससे पहले दायीं भुजा फिर बायीं भुजा को स्पर्श करें।
ओ३म् करतलकरपृष्ठे।	इससे दोनों हथेली और उनके पृष्ठभाग को स्पर्श करें।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे ईश्वर! हमारी समस्त इन्द्रियाँ-वाणी, नासिका, नेत्र, कान, नाभि, हृदय, कंठ, सिर, बाहें, हाथ और हथेली सब बलवान् हों और ये सब कीर्ति एवं ऐश्वर्य का कारण बनें।

Aum. Oh Almighty God, we pray for vitality and glory to our sense organs. i.e. tongue, respiratory system eyes, ears, nasal, heart, throat, head, arms and palms.

मार्जनमन्त्राः
(Purification of Organs)

पुनः इसी प्रकार बायीं हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की उन्हीं दोनों अंगुलियों से शरीर के अंगों पर निम्नलिखित प्रत्येक मन्त्र बोलने के बाद मार्जन करें, अर्थात् जल छिड़कें/स्पर्श करें।

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि।	इस मन्त्र से सिर पर,
ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोः।	इससे दोनों नेत्रों पर,
ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे।	इससे कण्ठ पर,
ओ३म् महः पुनातु हृदये।	इससे हृदय पर,

ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम्। इससे नाभि पर,
ओ३म् तपः पुनातु पादयोः। इससे दोनों पैरों पर,
ओ३म् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। इससे पुनः सिर पर और,
ओ३म् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र। इस मन्त्र से सम्पूर्ण शरीर
पर जल के छीटें देवें।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे ईश्वर! आप प्राणदाता हैं आप हमारे सिरों में (बुद्धियों में) पवित्रता दीजिए। हे सुखदाता आनन्दस्वरूप प्रभो! आप हमारी आँखों में पवित्रता एवं महानता प्रदान करें। हे जगत् उत्पादक प्रभो! हमारी नाभियों में और पैरों में पवित्रता एवं सन्मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करें। हे सत्यमय एवं सर्वव्यापक प्रभो! आप हमारे अंग-प्रत्यंग में तथा सर्वत्र पवित्रता प्रदान करें।

Aum. O' the Creator of the universe, purify our head and bless it with clarity of thoughts. O' the Blissful, bless us with clear vision in our eyes and purity & sweetness in our throat. May the Great Lord purify our hearts. May the Maker of all things purify my navel. May the stern and righteous Lord grant us strength in our feet. Once again we pray to the truthful God to purify our heads. May the all-pervading Lord purify from end to end i.e. all parts of our body and all places.

प्राणायाममन्त्राः

(The Breathing Exercises)

ओ३म् भूः। ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः। ओ३म् महः।
ओ३म् जनः। ओ३म् तपः। ओ३म् सत्यम्।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे प्रभो! आप जीवन दाता, दुख विनाशक, आनन्द दाता, सबसे महान्, सबके उत्पादक, न्यायस्वरूप तथा सत्यस्वरूप हैं।

Aum. O' God-Creator of life! The Shedder of all miseries! O' God of happiness! O' the greatest of all, Maker of all Stern in justice and truth.

।।अघमर्षण-मन्त्राः।।

(Uprooting the Sins)

ओम् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्पसोअध्यजायत।
ततो रात्रयजायत ततः समुद्रो अर्णवः।।1।।

सरल पाठ

ओ३म् ऋतं च सत्यं चा भी द्धात् तपसो अध्य अजायत। ततो रात्रयजायत। ततः समुद्रो अर्णवः।।1।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! उस भगवान की महिमा से प्राकृतिक, नैतिक एवं सामाजिक नियम, उत्पत्ति, प्रलय, रात्रि और फिर जलमय सागरों की रचना की गई।

Aum. Absolute truth and relative truth, creation and Dissolution came into existence through the glory of God, and then night and all oceans were produced.

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।2।।

सरल पाठ

समुद्रा दर्ण वा दधि संवत् सरो अजायत।
अहो रात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी।।2।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! जलमय समुद्रों की रचना पश्चात् उस शासक प्रभु ने समय विभाजन किया और फिर सालों, दिनों और रात्रियों की रचना की।

Aum. After creating the seas and oceans, the Ruler of the universe divided time and then producced Years, Days and Nights without effort.

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्
दिवं च पृथिवींञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।।

सरल पाठ

सूर्या चन्द्र मसौ धाता यथा पूर्वम् कल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्ष मथो स्वः।।3।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! उस रचयिता ने पहिले के भाँति सूर्य, चन्द्रमा, आकाश, पृथ्वी और अन्तरिक्ष को फिर रचा।

Aum. the maker, formed as before, the Sun, the Moon, the Sky, the Earth and Space.

।। आचमन मन्त्रः।।

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः।। यजु0 36/12

सरल भावार्थ

ओ३म्! सर्व-प्रकाशक, सुख-शान्तिदायक सर्वव्यापक देव! आप हम पर सब प्रकार की सुख शान्ति की वर्षा करें तथा हम मनोवांछित पूर्ण सुख शान्ति को प्राप्त करें।

May the all-pervading Divine Mother, be gracious enough to gratify our inner craving and shower blessings all around us.

मनसापरिक्रमामन्त्राः

(Mental Circumambulation)

नीचे लिखे छह मन्त्रों से सर्वव्यापक परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना करें। इन छह मन्त्रों से परम प्रभु ओ३म् की सत्ता को सब दिग्-दिगन्तरों में अनुभव करते हुए सम्पूर्ण विश्व के साथ द्वेष-भावना को नष्ट करके मैत्रीभाव स्थापित कर निर्भय, निःशङ्क, उत्साही, आनन्दित और पुरुषार्थी रहें।

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।1।।

– अथर्व0 3/26/1

सरल पाठ

ओ३म् प्राची दिग् अग्निः अधिपति रसितो रक्षिता आदित्या इषवः। तेभ्यो नमो धि पति भ्यो नमो रक्षितृ भ्यो नम इषु भ्यो नम ए भ्यो अस्तु। यो स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष् मस्तं वो जम्भे दध्मः।।1।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! पूर्व दिशा का अधिपति, प्रकाशक, नायक, ज्ञानदाता अग्निदेव ओर सूर्य के रूप में विराजमान है, जो अपनी किरणरूपी बाणों से हमारी रक्षा करता है। दिशा से स्वामी, रक्षक तथा उसके साधनों को हमारा नमस्कार होवे। जो हमसे द्वेष करता है या हम किसी से द्वेष करते हैं, उस व्यक्ति को हे भगवन्! हम आपके न्याय पर छोड़ते हैं।

Aum. Agni, the eternal source of continuous progress, is always before us in the East in the shape of the Sun. The rays of the sun are its arrows to protect us. We adore you, O Agni, in gratitude for thy kind rule, kind protection and blessed gift of life. O God! we humbly thank thee, and place him, who hates us, or whomever we hate at thy disposal.

ओ३म् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्यः।।2।। –अथर्ववेद 3/26/2

सरल पाठ

ओ३म् दक्षिणा दिग् इन्द्रो धिपतिस् ति रश्चि राजी रक्षिता पितर इषवः। ते भ्यो नमो धि पति भ्यो नमो रक्षितृ भ्यो नम इषु भ्यो नम ए भ्यो अस्तु। यो स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष् मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

सरल भावार्थ

ओ३म् (उपासक) अपने दाहिने हाथ अर्थात् दक्षिण दिशा

की ओर ईश्वर को इन्द्र के रूप में देखता है, जो धन-ऐश्वर्य का स्वामी है और दुष्ट लोगों से हमारी रक्षा करता है। आप विद्वानों के लक्ष्य-प्राप्ति में मार्गदर्शक हैं। हम इस दिशा के स्वामी, रक्षक तथा उसके साधनों को बारम्बार नमस्कार करते हैं। हम अपने पारस्परिक द्वेष भाव को आपके न्याय पर छोड़ते हैं।

Aum. Indra, Thou art our right in the South. You protect us from crooked and wicked people. You are the suppressor of evil forces and the learned elders are providers of the strength to achieve our goals. We submit to Thou those whom we hate and leave these to thy justice who hate others.

ओ३म् प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपति पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।3।।

– अथर्ववेद 3/26/3

सरल पाठ

ओ३म् प्रतीची दिग् वरुणो धिपतिः पृदाकू रक्षिता अन्न मिषवः। ते भ्यो नमो धि पति भ्यो नमो रक्षितृ भ्यो नम इषु भ्यो नम ए भ्यो अस्तु। यो स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष् मस्तं वो जम्भे दध्मः।।3।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! पश्चिम दिशा के स्वामी वरुण आप सर्वश्रेष्ठ हैं। आप भयानक एवं निष्ठुर प्राणियों से हमारी रक्षा करने वाले हो। हम अपने रक्षक का ध्यान एवं उपासना करते हैं। हमारा उनको बारम्बार नमस्कार

हो। हम अपने पारस्परिक द्वेष को आपके न्याय पर छोड़ते हैं।

Aum. May Varun, the supreme lord of the West, protect us from cruel and dangerous people. Thou creates food which gives us life on earth. We adore Varuna who is controller and protector of the universe. We leave all our ill-feelings among us at your command.

ओ३म् उदीची दिक्सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिता-शनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।4।। – अथर्ववेद 3/26/4

सरल पाठ

ओ३म् उदीची दिक् सोमो धिपतिः स्वजो रक्षिता शनिरिषवः। ते भ्यो नमो धि पति भ्यो नमो रक्षितृ भ्यो नम इषु भ्यो नम ए भ्यो अस्तु। यो स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष् मस्तं वो जम्भे दध्मः।।4।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे उत्तर दिशा के स्वामी, सुख-शान्ति दाता सोम देव! आप हम पर सुख शान्ति की वर्षा करें। हे सोमदेव! हम कुकर्मों एवं बुराइयों से सदैव दूर रहें। संसार के रक्षक व धारक सोमरूपी प्रभु की हम स्तुति करते हैं। हम आपका ध्यान एवं आपको बारम्बार नमस्कार करते हैं। हम अपने शत्रुओं को तथा अपने शत्रुभाव को आपके न्याय पर छोड़ते हैं।

Aum. O Soma, the Lord of the North, the showerer of peace and calmness, we pray to bestow peace upon us. The desire to rise higher like flames are means to attain glory in life. We worship Soma, the protector and controller of the universe. We leave all those who are inimical to us and whom we hate, to thy justice.

ओ३म् ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।5।।

– अथर्ववेद 3/26/4

सरल पाठ

ओ३म् ध्रुवा दिग् विष्णु रधि पति कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। ते भ्यो नमो धि पति भ्यो नमो रक्षितृ भ्यो नम इषु भ्यो नम ए भ्यो अस्तु। यो स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष् मस्तं वो जम्भे दध्मः।।5।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! नीचे की दिशा के स्वामी विष्णो! आप ध्रुव एवं निश्चल हैं। हम आपके धैर्य एवं दृढ़ता की कामना करते हैं। जिस प्रकार आप पेड़ पौधों से हमारी रक्षा करते हैं, उसी प्रकार हम भी प्राणिमात्र का भला करें। संसार के रक्षक पोषक विष्णो! हम आपकी स्तुति एवं उपासना करते हैं। हम अपने सामाजिक द्वेषभाव को आपके न्याय पर छोड़ते हैं।

Aum. O All pervading Vishnu, we worship you for your stability and firmness. The pious and omnipresent God is the Lord here, the nourisher of our life with trees and plants, adviser of good deeds and is our protector. We worship you again and again. We leave all our ill-feelings among us for your justice.

ओ३म् ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।6।। – अथर्ववेद 3/26/4

सरल पाठ

ओ३म् ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पति रधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षम् इषवः। ते भ्यो नमो धि पति भ्यो नमो रक्षितृ भ्यो नम इषु भ्यो नम एभ्यो अस्तु! यो स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष् मस्तं वो जम्भे दध्मः।।6।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे सबके स्वामी, रक्षक बृहस्पति देव! आप वर्षा रूपी बाणों से हमारी रक्षा करते हो। आपकी ज्ञानरूपी वर्षा से हमारे मन का अन्धेरा मिटता है। हे रक्षक धारक बृहस्पति! हमारा नमस्कार आपको बारम्बार हो। हम अपने शत्रुता भाव को आपके न्याय व दया पर छोड़ते हैं।

Aum. Brhaspati, you are the Lord of us all. You are our saviour. Rain is your arrow.You remove our ignorance with the shower of knowledge. we bow before you again and again. We leave all including ourselves who have grudge for your judgement.

उपस्थानमन्त्राः

(Experiencing Nearness to God)

इन चार मंत्रों का उच्चारण करते हुए ऐसा अनुभव करें कि परमेश्वर के निकट मैं और मेरे अति निकट परमात्मा है। मानों मैं

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की गोद में बैठा हूँ।

ओं उद्वयंतमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम्।
देवंदेवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।1।।

– यजु0 35/14

सरल पाठ

ओ३म् उद् वयं तम सस् परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यम् अगन्म ज्योतिर् उत्तमम्।।1।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे ज्योति स्वरूप सूर्य! आप सारे संसार में रमे हैं। आप ज्ञान एवं कल्याण के भण्डार हैं। आप सब ज्योतियों की ज्योति हैं। आप सर्वोपरि हैं। हम उस ज्ञान–ज्योति के लिए आपकी उपासना करते हैं।

Aum.The Sun is pervading the whole world with its light. May we rise above the veil of darkness and ignorance and behold thy brilliance and bliss. The sun is the greatest and the best among all.

उदु त्यं जातवेदसंदेवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम।।2।। – यजु0 33/31

सरल पाठ

उदुत्यं जात वेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्।।2।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे सूर्य! आप ज्ञान ज्योति के स्रोत हैं। आप इस विश्व की सम्पूर्ण ज्योतियों की ज्योति हैं, हम विश्व की प्रत्येक वस्तु में आपकी महानता को देखते हैं। हम उस ज्ञान–ज्योति हेतु आपका

ध्यान करते हैं। हम संसार के समस्त पदार्थ अपने भिन्न-भिन्न रचनादि गुणरूपी पताकाओं द्वारा सर्वज्ञ और चराचर के स्वामी की सत्ता का भान कराते हैं।

Aum. O God, really you are the revealer of the Vedas, possessor of supernatural character and establisher of distinctive attributes which act as sign-posts (flags) and show the soul of the universe.

ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षं सूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।।3।। – यजु0 7/42

सरल पाठ

ओ३म् चित्रं देवानाम् उदगा दनीकं चक्षुर् मित्रस्य वरूणस्य अग्नेः। आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थु षश्च स्वाहा।।3।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे ईश्वर! आप अद्भुत् स्वरूप एवं महानतम हैं। आपकी महानता सूर्य, जल एवं अग्नि में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। आपकी शोभा पृथ्वी, आकाश एवं अन्तरिक्ष में सदैव विद्यमान है। आपकी महिमा जड़ एवं चेतन सभी में प्रकट होती है। हे संसार के जीवनदाता प्रभो! आप हमारे हृदयों में यथावत् प्रकाशित रहें।

Aum. O God ! Thou art wonderous, the ever-wakeful Eye, and the support of all the heavenly bodies, even the sun, the moon and fire. You hold the heaven, and the earth and space. Your glory is revealed in every creation of the

world. thou art the soul of all the moveable and unmoveable objects. May we act, think and speak rightly.

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतम् प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाःस्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।4।।

– यजु0 36/24

सरल पाठ

ओ३म् तत् चक्षुः देव हितं पुरस्तात्शुक्रम उच्चरत् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतम् प्रब्रवाम शरदः शतम् अदीना स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।4।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! ईश्वर सृष्टि की रचना के पूर्व विद्यमान था। वह सर्वद्रष्टा और सर्वज्ञ है। वह शुद्ध पवित्र हितकारी है, उसकी कृपा से हम सौ वर्ष तक जीवित रहें, सौ वर्ष तक सुनते रहें और सौ वर्ष तक बोलने की शक्ति रहे। सौ वर्ष के भी अधिक समय तक देखते, सुनते, बोलते तथा पराश्रित न रहकर जीवन व्यतीत करें।

Aum. O Thou, the seer of all, benefactor of righteous and learned, and the maker of the Universe, you were present even before the creation of the universe. You are Auspicious and Supreme. May we see a hundred autumns (years). May we live, hear and speak a hundred autumns and even more than hundred years without being (burden) dependent on any one.

।। गुरुमन्त्रः ।।

(The Prayer for Virtuous intellect)

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। – यजु0 40/17

सरल पाठ

ओ३म् भूर् भुवः स्वः। तत् सवितर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे सच्चिदानन्द! पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा द्युलोक के स्वामिन्! आप प्राणस्वरूप, दुःखहर्ता एवं आनन्दस्वरूप हो। आप कृपया हमारी बुद्धियों को उत्तम गुण, कर्म तथा स्वभावों की ओर प्रेरित व प्रवृत्त करें।

Aum. Om is the cause of our very existence and dearer to us than our life itself, wiper of all our pains and sorrows and Bestower of happiness. Thou art our God who alone is to be adored and worshipped. There is none beside. We should meditate upon you the most acceptable and the most knowlegeable God. May that imparter of bliss, inspire and lead our intellects.

समर्पणम्

(The offering)

उपरोक्त प्रकार के सब मन्त्रों के अर्थों के चिन्तन से परमेश्वर की सम्यक् उपासना करके आगे समपर्ण करें। इससे उपासक अपने अहंकार

से मुक्त होने का प्रयत्न करता है। शुभ कर्मों की ओर प्रेरित होता है।

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।।

सरल पाठ

हे ईश्वर दया निधे! भवत् कृपया अनेन जप् उपासनादि कर्मणा धर्म अर्थ काम मोक्षाणं सद्यः सिद्धिर् भवेन्नः।।

सरल भावार्थ

हे करुणामय प्रभो! आपकी असीम कृपा से इस जप और उपासनादि कार्य से हमें तुरन्त धर्म, अर्थ, काम व मोक्षरूप चतुवर्ग की सिद्धि प्राप्त हो।

Aum.O the compassionate God, the infinite Fount of mercy, by thy grace whatever good deed done by us, and this performance of our devotional exercise of the recitation of the texts of the holy Vedas. Thy adoration and other acts, we wholeheartably offer to Thee, may we with your blessings, attain Dharma, Artha, Kama and Moksha.

नमस्कारमन्त्रः
(Obeisance)

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

– यजु0 16/41

सरल पाठ

ओ३म् नमः शम् भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! मोक्ष स्वरूप ईश्वर को नमस्कार, सांसारिक सुख देने वाले प्रभु को नमस्कार, आनन्द देने वाले प्रभु को नमस्कार और अत्यन्त कल्याणकारक ईश्वर को हमारा बारम्बार नमस्कार होवे।

Aum.We bow to Thee and thank the Compassionate God, the Giver of happiness, the Blissful God, the Auspicius God. We pray and thank the Giver of perfect peace and tranquility.

इति ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्योपासन) विधिः।।

परमात्मा के उपकारों का धन्यवाद, अपने दुर्गुणों का चिन्तन और आदर्श मानव बनने का संकल्प, यही सच्ची सन्ध्या है/प्रार्थना है।

– मदन लाल अनेजा

देवयज्ञ:अग्निहोत्र–हवन करने से पहले की तैयारी

1. हवन में प्रयोग होने वाले बर्तन/वस्तुएँ –

(i) एक छोटा हवन कुण्ड। साईज=9"x9" गहराई=3" और एक नालीदार हवनकुण्ड का स्टैण्ड (जल सिंचन के लिए)।

(ii) आहुति हेतु घी डालने के लिए हैंडल वाला (चौड़े तले वाला) घृतपात्र।

(iii) सामग्री की आहुति डालने के लिए 6" डायामीटर की 1" गहरी प्लेट (यजमानों की संख्या के अनुसार)

(iv) आचमन पात्र 3" चौड़ी कटोरी (यजमानों की संख्या के अनुसार) हाथ धोने के लिए

(v) जल पात्र 2" गहरी व 2" चौड़ी कटोरी (यजमानों की संख्या के अनुसार)

(vi) स्रुवा (चम्मच) 10" से 12" लम्बा–घी की आहुति डालने के लिए। यदि छोटे बच्चे को भी सामग्री की आहुति डालनी हो तो उसके द्वारा सामग्री डालने के लिए एक स्रुवा और लें ताकि सामग्री की आहुति डालते समय उसका हाथ न जले।

(vii) जल (हवन कुण्ड के चारों तरफ छिड़कने के लिए) पात्र (छोटा लोटा)।

(viii) एक चिमटा व एक ज्योति पात्र (दिया, दीपक)।

(ix) सामग्री रखने के लिए एक खुले मुँह वाला 2 किलो वाला प्लास्टिक का डिब्बा।

(x) एक छोटा 1 किलो का प्लास्टिक का डिब्बा–मुश्क कपूर, ज्यौत वट, छुहारे और माचिस रखने के लिए।

(xi) एक प्लास्टिक की टोकरी–समिधायें रखने के लिए।

क्रम सं0–(i) से (vii) तक बताये गये पात्र यदि तांबे के हों तो अति उत्तम है।

(xii) चार सूती कुशन या लकड़ी की चौकियाँ (बैठने के लिए)।

(xiii) आसन स्वच्छ साफ हों। आसन– काले, नीले, फटे, गन्दे न हों।

(xiv) एक प्लास्टिक की टोकरी हवन में प्रयोग हुये खाली बर्तनों को रखने के लिए।

2. हवन की तैयारी –

(i) शुद्ध साफ हवन कुण्ड स्थापित करें। रखें।

(ii) हवन कुण्ड में 5–10 ग्राम सामग्री या 4–5 लकड़ी के छोटे–छोटे टुकड़े डालें।

(iii) 2–3 टिक्की मुश्क कपूर की डालें और 3–4 टिक्की अलग से रखें।

(vi) प्रत्येक जल पात्र में लगभग आधा जल रखें। उसके साथ आचमन पात्र (कटोरी) रखें।

(v) 5 समिधायें (कुण्ड के आकारानुसार–लगभग 6"–7" लम्बी और 1"–1½" मोटी) व 4–5 लकड़ी के छोटे–छोटे टुकड़े हवन कुण्ड के पास रखें।

(vi) हैण्डल वाले घी पात्र में घी गर्म करके कुण्ड के साथ रखें। घी पात्र में तीन समिधायें भी रख दें। घी को हवन कुण्ड की अग्नि पर गर्म नहीं करना चाहिये।

(vii) रुई की बट घी में डुबोकर दीपक पात्र में रखें।

(viii) हवन सामग्री को प्लेट में डालकर रखें। सामग्री गौ घृत मिश्रित कर लेनी चाहिये।

यज्ञ सम्बन्धित कुछ आवश्यक बातें -

1. यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया के साथ-साथ एक प्रधान धार्मिक कार्य भी है। यह ठीक विधि विधान, अनुशासन एवं शक्ति के साथ की जानी चाहिये।
2. यज्ञ की आवश्यकता और उपयोगिता हमारे जीवन को स्वस्थ, पुष्ट और सुखमय बनाने में भोजन व औषधि से भी अधिक उपयोगी है।
3. यज्ञ आध्यात्मिक लाभ के साथ-साथ वायु और जल प्रदूषण को भी दूर करता है। अत: प्रत्येक आर्य को प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिए।
4. यज्ञ का स्थान स्वच्छ व पवित्र होना चाहिये। दैनिक यज्ञ का समय निश्चित होना चाहिये।
5. आयुर्वेद में गाय का घी हवन में प्रयोग करना अधिक उचित माना गया है। इसमें अधिकतम विष प्रतिरोधक शक्ति होती है। अत: घी की आहुति देने वाला चम्मच/स्रुवा कुछ बड़ा हो तो अच्छा है।
6. आम, पीपल, बरगद, बेल, गूलर, पलाश की लकड़ी हवन के लिए उत्तम है। इनसे बहुत कम कार्बन डाई आक्साइड निकलती है। आवश्यकता से अधिक या मोटी समिधाएँ भी यज्ञ कुण्ड में नहीं डालनी चाहियें।
7. समिधायें सूखी, कीट रहित, बिना गांठ वाली, पवित्र व हवन कुण्ड के आकार के अनुसार होनी चाहिए। किसी भी आर्यसमाज से या बाजार से समिधाएं ले सकते हैं। घर पर हवन कुण्ड के आकार के अनुसार (कुल्हाड़ी से) उन्हें छोटा व पतला करके

पहले से ही रख लेना चाहिये।

8. तांबे के हवन कण्ड में कीटनाशक शक्ति अधिक होती है। अत: लोहे की अपेक्षा तांबे का कुण्ड प्रयोग करना अच्छा है। हवन कुण्ड अधिक गहरा नहीं होना चाहिये।
9. यज्ञ सामग्री ऋतुओं के अनुसार होने से उत्तम लाभ देती है। आजकल MDH की सामग्री अच्छी है। इसमें ऋतु के अनुसार अन्य सामग्री, जड़ी बूटियाँ मिलाई जा सकती हैं।
10. जलती हुई तीव्र अग्नि में ही आहुति देनी चाहिए ताकि धुंआ कम से कम हो। धुंआ कम करने के लिए अधिक घी व सूखी समिधा का प्रयोग करें। हवन करते समय हवन कुण्ड में स्रुवा या चिमटे से हवन अग्नि को नहीं हिलाना चाहिये।
11. हवन करते समय यज्ञोपवीत पहनना चाहिये। श्वास प्रश्वास का भी उचित प्रयोग करना चाहिये।
12. यज्ञ कर्म के समय मन स्थिर व शान्त रखना चाहिए। कमर, गर्दन व सिर सीधा रखना चाहिये।
13. यज्ञ पूर्ण श्रद्धा, प्रेम व ईश्वर प्रणिधान की भावना से करना चाहिये। यज्ञ करते समय गप-शप या सांसारिक बातें नहीं करनी चाहियें। यज्ञ प्रार्थना में ताली बजाना वर्जित है।
14. यज्ञ में काम आने वाले पात्र घर में प्रयोग नहीं करने चाहियें।
15. यज्ञ पूर्ण होने पर पुरोहित को उदारता के साथ, पर्याप्त दक्षिणा अवश्य देनी चाहिये। पर्याप्त दक्षिणा के बिना यज्ञ निष्फल माना जाता है।
16. यज्ञ करते समय कुर्ता पजामा या धोती कुर्ता ही पहनना चाहिये। काले वस्त्र व पेन्ट नहीं पहनने चाहिये।

17. यज्ञ वेदी पर एक से अधिक यजमानों (मुख्य यजमान) का बैठना अवैदिक है।
18. यज्ञ करते समय या यज्ञ के बाद हवन कुण्ड के आसपास गिरी सामग्री को हवन कुण्ड में नहीं डालना चाहिये।
19. हवन मन्त्रों के उच्चारण के बीच में प्रवचन करना (सलाह देना) निषेध है।
20. पुरोहित/ब्रह्मा यजमानों को विधि निर्देश आदि दे सकता है।
21. यज्ञ-प्रक्रिया में बारम्बार 'इदन्न मम' वाक्य का प्रयोग होता है। इसका अर्थ है-इसमें मेरा कुछ नहीं, अर्थात् लोक- कल्याण के लिए कार्य करना। यह भावना यज्ञ का सार है।

    पूर्ण लाभ यज्ञ के मन्त्रों का ठीक अर्थ जानकर उसी के अनुसार आचरण करने से मिलता है, समाज-सेवा करने से मिलता है।

यज्ञोपवीतमन्त्रः

ओ३म् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।
ओ३म् यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।

सरल भावार्थ

1. यज्ञादि शुभ कार्यों में अधिकारी बनने के लिए इस ब्रह्म सूत्र को जो विद्या प्राप्ति का सूचक है, तथा अत्यन्त पवित्र और हितकारी है, उसे मैं धारण करता हूँ। प्रभु कृपा से यह मुझे बल और तेज प्रदान करे।

2. हे ब्रह्म सूत्र! यह यज्ञोपवीत मैं यज्ञ कार्यों के लिए ग्रहण किया हूँ तथा अपने को धर्म की प्रतिज्ञा में बाँधता हूँ।

देवयज्ञः अग्निहोत्र-हवन

(The daily sacrifice)
(Oblation in fire)

(प्रत्येक मन्त्र बोलने से पहले सीधे हाथ की हथेली में थोड़ा सा जल लें और मंत्र बोलने के बाद पियें)

।।अथ आचमनमन्त्राः।।

(SIPPING OF WATER)

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।।1।। (तैत्तिरीयो0 1/32)

ओ३म्! हे अविनाशी प्रभो! आप ही मेरे आधार हैं। यह जल हमारे लिए सुखदायक हो जो सबका आधारभूत है।

(पहला आचमन आत्मा की शन्ति के लिए)

Aum. O Immortal God! Thou art my sustainer and shelter.

ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा।।2।। (तैत्तिरीयो0 1/33)

ओ३म्! हे अविनाशी प्रभो! आप ही मेरे रक्षक हैं। आप विश्व के धारक और पोषक हैं। हमारा भी पालन कीजिए।

(दूसरा आचमन मानसिक शान्ति के लिए)

Aum. O Immortal God! Thou art my protector.

ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।।

ओ३म्! हे अविनाशी प्रभो! मै सत्य, कीर्ति और सबको आश्रय देनेवाली श्री को प्राप्त करूं। मेरी प्रार्थना सत्य एवं पूर्ण हो।

(तीसरा आचमन शारीरिक शान्ति के लिए)

Aum. O God, may I live under your protection, attain truth, good name, prosperity and spiritual distinctions for own as well as other's good. May this prayer of mine come true.

।।अङ्गस्पर्शमन्त्राः।।

(Touching Various Organs of the Body)

ओ३म् वाङ्मऽआस्येस्तु।।1।। इस मन्त्र से होठों को जल स्पर्श करें।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे सर्वशक्तिमान्! आपकी कृपा से मेरे मुख में वाक् शक्ति, अर्थात् अच्छा एवं मीठा बोलने की शक्ति बनी रहे।

Aum. Oh Almighty God, by Thy grace may my tongue be ever blessed with good speech.

ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽअस्तु।।2।। इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्र (पहले दायां फिर बायां) को जल स्पर्श करें।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे प्रभो! आपकी कृपा से मेरी नासिका में प्राणशक्ति बनी रहे।

Aum. Oh Almighty God, by Thy grace may my nostrils be blessed with good breathing.

ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।।3।। इस मन्त्र से दोनों आँख (पहले दायीं फिर बायीं) को जल स्पर्श करें।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे प्रभु! मेरी आँखों में दृष्टि (नेत्र) शक्ति बनी रहे।

Aum. O God, bless my eyes with perfect power of vision.

ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।।4।। इस मन्त्र से दोनों कान (पहले दायां फिर बायां) स्पर्श करें।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे प्रभो! मेरी कानों में श्रवण शक्ति बनी रहे।

Aum. Oh Almighty God, by Thy grace may my ears be blessed with good hearing.

ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु।।5।। – इस मन्त्र से दोनों भुजाएँ स्पर्श करें। (पहले दायां फिर बायां)

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे प्रभो! मेरी भुजाओं में बल शक्ति बनी रहे।

Aum. O God bless my arms with good strength.

ओ३म् ऊर्वोमऽओजोऽस्तु।।6।। इस मन्त्र से दोनों जंघाओं को स्पर्श करें। (पहले दायां फिर बायां)

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे प्रभो! मेरी जंघाओं में सामर्थ्य बना रहे।

Aum. O God bless my legs with good strength.

ओ३म् अरिष्टानि मेङ्गानि तनस्तन्वा मे सह सन्तु।।7।। इस मन्त्र से सारे शरीर पर जल छिड़कें।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे प्रभो! आपकी कृपा से मेरे शरीर के अंग-प्रत्यंग रोगरहित हों और मेरा शरीर पूर्णतया स्वस्थ हो।

Aum. O God, may these and all other limbs of my body be free of sickness and grant sound health.

ओ३म् भूर्भुवः स्वः।

इस मन्त्र से दीप प्रज्जवलित करें

सरल भावार्थ

ओ३म्! प्रभु प्राण स्वरूप, दुख विनाशक और सुखों की वर्षा करने वाला है।

Aum. Oh! life-breath of all, the Dispeller of miseries and imparter of bliss.

अग्नि प्रज्वालन
(Ignition of Fire)
(Placing Fire in the Fire-pan)

इस मंत्र से हवन कुण्ड में अग्नि प्रज्ज्वलित करें अर्थात् स्रुवा (चम्मच) में कपूर रखकर, दीपक से जलाकर कपूर को हवन कुण्ड में डालें।

ओं भूर्भुवः स्वद्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठे अग्निम्
अन्नादमन्नाद्यायादधे।। – यजुर्वेद 3/5

सरल पाठ

ओ३म् भूरभुवः स्वर द्यौ रिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवी देव यजनि पृष्ठे अग्निम् अन्नादम् अन्नाद्याय आदधे।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे प्रभो! आप द्वारा निर्मित इस पृथ्वी पर जहाँ सब

विद्वान् लोग यज्ञ किया करते हैं, मैं अग्नि का आधान कर रहा हूँ ताकि मुझे अन्नादि ऐश्वर्य की प्राप्ति हो। मैं भी प्राणस्वरूप, दुःख विनाशक और सुख स्वरूप बन सकूं। साथ ही मेरा हृदय द्युलोक-सा विशाल और पृथ्वी सदश धैर्ययुक्त और श्रेष्ठ हो।

Aum. Oh giver of life i.e. life breath of all, the dispeller of miseries and the Bestower of happiness. I kindle sacrificial fire on this land on which the virtuous people perform sacrifices and do good deeds, praying that I may be blessed with food and prosperity. May may heart be as great as this earth.

अग्नि समिन्धन
(अग्नि प्रदीप्त करने का मन्त्र)
(Inflamming the Sacrificial Fire)

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए यज्ञकुण्ड में जलते हुए कपूर और छोटी-छोटी समिधाओं के ऊपर स्रुवा से 2 या 3 बार घी डालें।

ओ३म् उदबुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्त्ते सँसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।। - यजु0 15/54

सरल पाठ

ओ३म् उद् बुध्यस्व अग्ने प्रति जागृहि, त्वम इष्टा पूर्त्ते संसृजे था मयं च। अस्मिन् त्सधस्थे अध्युत्तर अस्मिन्, विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे अग्नि! तू अच्छी तरह से प्रदीप्त हो। तुम्हारी

सहायता से यजमान यज्ञादि तथा लोकोपकार के कार्यों को करने के लिए उत्कृष्ट स्थान पर जहाँ नीच का भाव समाप्त हो जाता है, तुम सब लोग बैठो।

Aum. O Agni, please blaze well and rise high. May Yajmana, the performer, the host with your help, be able to perform all sacrificial duties and serve humanity. May this performer and other enlightened people sit together this stage irrespective of their social status.

समिदाधान मन्त्राः
(Offering of Fire-sticks)

इस मन्त्र से पहली समिधा घृत में भिगोई हुई हवन कुण्ड़ में रखें।

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।1।।

– आश्वलायन गृह्यसूत्र 1.10.12

सरल पाठ

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जात वेदस्
तेने ध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय। चास्मान् प्रजया
पशुभि र्ब्रह्म वर्चसेन, अन्नाद् येन समेधय स्वाहा।
इदम अग्नये जातवेदसे-इदन्नन मम।

सरल भावार्थ

ओ३म्! समस्त पदार्थों में विद्यमान अग्ने। यह आत्मा तुम्हारी समिधा है, जैसे यह जलकर प्रकाश एवं उष्णता देती है, वैसे मैं भी

सत्यज्ञान और प्रकाश सारे संसार में फैलाऊँ। हे सर्वज्ञ अग्निदेव! आप हमें अन्न, धन, सन्तान, पशु एवं ब्रह्मवर्चस से समृद्ध कीजिए। यह मेरा आहुति सर्वज्ञ जातवेदा अग्नि के लिए है। यह सब आपका ही है, मेरा कुछ नहीं।

Aum. Oh Almighty God, just as Samidha (Wood) is fuel for fire this Atma (Soul) is your fuel. O Agni, blaze brighter and brighter and bless us with worthy offspring with divine glory, plenitful food and spiritual advancement. This oblation is for Agni-the Jatavaydas the Knower of every thing and this is not mine, it belongs to God.

द्वितीय समिधा

इन दोनों मंत्रों के बाद दूसरी समिधा घृत में भिगोई हुई हवन कुण्ड़ में रखें।

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा।। इदमग्नये इदन्न मम।।2।। यजु0 3/1

सरल पाठ

ओ३म् समिधा अग्निं दुवस्यत घृतैर् बोधया ता तिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।

ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे-इदन्न मम।।3।।

सरल पाठ

ओ३म् सु समिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जात वेद से स्वाहा। इदम अग्नये जात वेद से-इदं न मम।

सरल भावार्थ

ओम्! हे यजमान! जैसे आप घर आये अतिथि का प्रेम और

आदर से सेवा-सत्कार करते हो वैसे ही आप समिधा और घी से इस अग्नि का स्वागत कीजिए। तुम अच्छे द्रव्यों की आहुति दो।

जब अग्नि पूर्णरूपेण प्रदीप्त हो जाये तो इसमें अच्छी तरह तपाए हुए घी की आहुतियाँ दीजिए। ये आहुतियाँ ज्ञानस्वरूप अग्निदेव के लिए हैं, इनमें मेरा कोई स्वार्थ अथवा स्वत्व नहीं है।

Aum. Oh Yajman welcome Agni with Samidha and ghee as you welcome unexpected guests with hospitality. This oblation is for Agni which pervades everything.This is not mine, it is yours.

तृतीय समिधा

इस मंत्र से तीसरी समिधा घृत में भिगोई हुई अग्नि को अर्पण करें।

ओ३म् तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे-इदन्न मम।।4।।

- यजु0 3/3

सरल पाठ

ओ३म् तं त्वा समिद् भिर अंगिरो घृतेन वर्द्ध याम सि। बृहच्छो चा यविष्ठ्य स्वाहा। इदमअग्नये अंगिरसेइदं न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे समस्त पदार्थों का संश्लेषण एवं विश्लेषण करने में समर्थ अग्निदेव! तुम सब पदार्थ में विद्यमान रहकर सबको गति दे रहे हो। इन आहुतियों से मेरा कोई स्वार्थ नहीं, ये सब परमात्मा के लिए हैं।

Aum. Oh all-pervading Agni, we offer you oblations of wood and ghee to enable you to grow further and further. You are most helpful in joining and disjoining objects and setting them into motion. This oblation is for Agni, the motive power and not for myself.

पञ्चघृताहुतयः (पांच बार)

(Oblations of Ghee - Classified butter)

निम्न मन्त्र से केवल घी की पाँच आहुतियाँ दें। एक-एक बार मन्त्र को बोलने के बाद (प्रत्येक मंत्र उच्चारण के पश्चात्) एक-एक आहुति दें -

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।1।।

- आश्वलायन गृह्यसूत्र 1/10/12

सरल पाठ

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जात वेदस् तेने ध्यस्व
वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर ब्रह्म
वर्चसेन, अन्नाद येन समेधय स्वाहा।
इदम अग्नये जातवेदसे-इदं न मम।

सरल भावार्थ

ओ३म्! समस्त पदार्थों में विद्यमान अग्ने। यह आत्मा तुम्हारी समिधा है, जैसे यह जलकर प्रकाश एवं उष्णता देती है, वैसे मैं भी सत्यज्ञान और प्रकाश सारे संसार में फैलाऊँ। हे सर्वज्ञ अग्निदेव! आप हमें अन्न, धन, सन्तान, पशु एवं ब्रह्मवर्चस से समृद्ध कीजिए। यह मेरा आहुति सर्वज्ञ जातवेदा अग्नि के लिए है। यह सब आपका ही है, मेरा कुछ नहीं।

Aum. Oh Almighty God, Just as Samidha (Wood) is fuel for fire this Atma(Soul) is your fuel. O Agni, blaze brighter and brighter and bless us with worthy offspring

with diving glory, plentiful food and spiritual advancement. This oblation is for Agni-the Jatavaydas the Knower of every thing and this is not mine, it belongs to God.

।।जल-प्रसेचन मन्त्राः।।

(Sprinkling of water)

निम्न मन्त्रों को एक-एक बार बोलने के बाद क्रमशः पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण दिशा में-अग्नि कुण्ड के चारों ओर लोटे से जल सिंचन करते हैं।

(इससे (पूर्व में) दक्षिण से उत्तर की ओर जल छिड़कें)

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व।। - आपस्तम्ब गह्यसूत्र - 3/1/3

सरल पाठ

ओ३म् अदिते अनु मन्य स्व-

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे अखण्ड ज्ञानमय परमात्मन्! हमारी प्रार्थना स्वीकार कीजिए।

Aum. O Unimpairable Almighty God! Accede to our request.

(इससे (पश्चिम में) दक्षिण से उत्तर की ओर जल छिड़कें)

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व।। - आपस्तम्ब गह्यसूत्र 3/1/3

सरल पाठ

ओ३म् अनुमते अनु मन्य स्व-

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे दयालु इन्द्र! हमारे ऊपर दया दृष्टि रखें।

Aum. O Favourable God! Listen to our prayers.

(इससे (उत्तर में) पश्चिम से पूर्व की ओर जल छिड़कें)

ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व।। (आपस्तम्ब गृह्यसूत्र 1/3/1-3)

सरल पाठ

ओ३म् सरस्वती अनु मन्य स्व-

सरल भावार्थ

ओम्! हे सरस्वती! हमारी प्रार्थना सुनिए।

Aum. Oh All-knowledge Almighty God! Kindly accede to our request.

(इससे दक्षिण-पूर्व से प्रारम्भ करके दक्षिण-पश्चिम-उत्तर-पूर्व-दक्षिण-पूर्व चारों और जल छिड़कें)

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतः नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।

(यजु0 30/1)

सरल पाठ

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञं पतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर् वाचं नः स्वदतु।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे सकल जगत्-उत्पादक, वेदवाणी के स्रोत, बुद्धि को पवित्र करने वाले वाणी के रक्षक प्रभो! हमारी बुद्धियों को पवित्र कीजिए तथा हमारी वाणी को मधुर बनाइये।

Aum. Oh Almighty God! creator of the Universe, the Purifier of man's mind, and may the Protector of the Eternal Vedic Law, enable us to realise fully in our lives the truth of this Holy Vedic Speech. Kindly bestow sweetness in our speech.

।। आघारावाज्यभागाहुति-मन्त्राः।।

(Offering of Classfied butter - Ghee)

इस मन्त्र से (वेदी के उत्तर भाग में) पश्चिम से पूर्व की ओर) अग्नि में केवल घी की आहुति दें-

ओ३म् अग्नये स्वाहा।। इदमग्नये-इदन्न मम।।1।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे अग्नि! मैं आपका आह्वान करता हूँ। यह आहुति अग्नि के लिए है, मेरा कुछ नहीं।

Aum. Oh Agni, I offer these oblations for you. This is not mine, it is wholly for you.

इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग में अग्नि में केवल घी की आहुति दें।

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय-इदन्न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे सोमदेव! मैं आपके लिए आहुति के रूप में समर्पण करता हूँ। यह सब आपके लिए है, मेरा इसमें कुछ नहीं।

Aum.I call upon Soma. This oblation is for you and nothing for myself.

इस मन्त्र से वेदी के बीच में घी की आहुति दें।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम।।3।।

(यजु0 22/32; कात्या0 श्रो0 अ0 3 सू0 12)

सरल भावार्थ

ओ३म्! मैं प्रजापति परमेश्वर की आहुतियों के रूप में अपना सब कुछ समर्पित हूँ। सब कुछ तो आपका ही दिया हुआ है, मेरा तो कुछ नहीं।

Aum.Oh Prajapati, the Creator of the Universe. This

oblation is for you only and nothing for myself.

इस मन्त्र से भी वेदी के बीच में घी की आहुति दें

ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदन्न मम।।4।।

(यजु0 22/27; कात्या0 श्रो0 अ0 3 सू0 19)

ओ३म्! हे इन्द्रदेव! मैं आपका आह्वान करता हूँ, यह आपके लिए है, मेरे लिए नहीं।

Aum.I call upon Indra, the Master of all power and self. This oblation is not for me, everything belongs to you Indra.

दैनिक अग्निहोत्र-यज्ञ

।।प्रातः कालीन होममन्त्रा।।

(Oblations for the Morning Sacrifice)

घी और सामग्री दोनों से आहुति दें।

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।।1।।

ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।2।।

ओ३म् ज्योतिः सूर्य सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।3।।

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा।।4।।

सरल पाठ

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर् ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।।1।।

ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर वर्चः स्वाहा।।2।।

ओ३म् ज्योतिः सूर्य सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।3।।

ओ३म् सजूर् देवेन सवित्रा सजू रुष सेन्द्र वत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा।।4।।

चारों मन्त्रों के सरल भावार्थ

ओ३म्! मैं सूर्यदेव का आह्वान करता हूँ, सूर्य रोशनी (ज्ञान) है और रोशनी ही सूर्य है। **(मन्त्र-1)**

Aum.I call upon Soorya. Soorya is knowledge and light is Soorya.

ओ३म्! हम सूर्य भगवान् का आह्वान करते हैं। सूर्य चमक (तेज) है और तेज ही सूर्य है। **(मन्त्र-2)**

Aum. I call upon Soorya. Soorya is glory and splendour and this glory is Soorya.

ओ३म्! हम सूर्य का आह्वान करते हैं। प्रकाश सूर्य और सूर्य ही प्रकाश है। **(मन्त्र-3)**

Aum. We call upon Soorya. Light is Surya and Surya is Light.

ओ३म्! अपने दिव्य प्रकाश और प्रेरणा शक्ति के साथ अति सुशोभित ऊषा की प्रभा के साथ सूर्य नारायण इस आहुति को प्राप्त करें। **(मन्त्र-4)**

Aum. May this sun with dawn accept our oblation and diffusue the fragrance of Yajya far and wide.

।। सायंकालीन होममन्त्राः।।

(Oblations for the Evening Sacrifice)

घी और सामग्री-दोनों से आहुति दें।

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।1।।

ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।2।।

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।3।।

(मौन आहुति)

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्रयेन्द्रवत्या। जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।।4।।

सरल पाठ

ओ३म् अग्निर् ज्योति ज्योतिर् अग्निः स्वाहा।।1।।

ओ३म् अग्निर् वर्चो ज्योतिर् वर्चः स्वाहा।।2।।

ओ३म् अग्निर ज्योतिर् ज्योतिर् अग्निः स्वाहा।।3।।

ओ३म् सजूर देवेन सवित्रा सजू रात्र्य एन्द्र वत्या। जुषाणो अग्निर् वेतु स्वाहा।।4।।

चारों मन्त्रों के सरल भावार्थ

ओ३म्! हम अग्निदेव का आह्वान करते हैं। अग्नि प्रकाश है और प्रकाश अग्नि है। **(मन्त्र-1)**

Aum.We call upon Agni. Agni is light and light is Agni.

ओ३म्! हम अग्निदेव को पुकारते हैं। अग्नि तेज है और तेज ही अग्नि है। **(मन्त्र-2)**

Aum.Oh Agni! You are Tejas'and 'Tejas' is Agni.

ओ३म्! हे अग्निदेव! आप ज्योतिस्वरूप हो। आपकी ज्योति ही अग्निरूप है।**(मन्त्र-3)**

Aum.We call upon Agni. Agni is Knowledge and knowledge is Agni.

ओ३म्! हे अग्निदेव! आप ईश्वर का ही रूप हो। आप अपने दिव्य प्रकाश तथा संसार की उत्पादक तथा प्रेरक शक्ति के साथ चमकती हुई और सुशोभित रात्रि के साथ इस आहुति को प्राप्त होकर इन आहुतियों को सर्वत्र प्रसारित करें।**(मन्त्र-4)**

Aum. Oh the Supreme Light. You are resplendent like the lustrous thermic force in the world. May this thermic force, accept our oblation and diffuse the fragrance of the Yajya to the whole world.

।।प्रातः सायंकालीन मन्त्राः।।

(Oblations for both Morning & Evening Sacrifice)

निम्नलिखित मन्त्रों से प्रातः-सायं आहुति देनी चाहिए-

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।।1।।

ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा।। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।।2।।

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।। इदमादित्याय व्यानाय इदत्र मम।।3।।

ओ३म् भुर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापान व्यानेभ्यः स्वाहा।। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणपान- व्यानेभ्यः इदन्न मम।।4।।

सरल पाठ

ओ३म् भूर् अग्नये प्राणाय स्वाहा।

इदं अग्नये प्राणाय इदं न मम।।

ओ३म् भुवर् वायवे अपानाय स्वाहा।।

इदं वायवे अपानाय-इदं न मम।।

ओ३म् स्वरा दित्याय व्यानाय स्वाहा।।

इदं आदित्याय व्यानाय इदं न मम।।

ओ३म् भूर् भुवः स्वरग्नि वाय्वा दित्येभ्यः प्राण अपान व्याने भ्यः स्वाहा।।

इदं अग्नि वाय्वा दित्ये भ्यः प्राण अपान व्याने भ्यः इदं न मम।।

चारों मन्त्रों के सरल भावार्थ

ओ३म्! मैं प्राणपद संसार रचियता अग्नि का आह्वान करता

हूँ। यह हवि अग्निदेव के लिए है। मेरा इसमें कुछ नहीं। **(मन्त्र-1)**

Aum. I call upon Agni, the creator and life-breath of the universe. This oblation is for Agni. This is not mine, it belongs to you.

ओ३म्! दु:ख विनाशक, समस्त संसार को जीवन प्रदान करने वाली वायु की पवित्रता एवं अपान वायु की शद्धता के लिए मैं वायु देव को यह आहुति देता हूं। यह मेरे लिए नहीं है।**(मन्त्र-2)**

Aum.I call upon Vayu, the dispeller of suffering for Apana (intaking breath). This oblation is for you and does not belong to me.

ओ३म्! मै सुखों के दाता आदित्यदेव का व्यान के लिए आह्वान करता हूँ। यह आहुति आदित्य और व्यान के लिए है, मेरे लिए नहीं।**(मन्त्र-3)**

Aum.I call upon Aditya, the Bestower of bliss on his devotees for Vyana (out going-breath). This offer is for Aditya only and nothing for myself.

ओ३म्! समस्त संसार के जीवनदाता, दु:खहर्ता, सुखदाता परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए अनुकूलता तथा प्राण, अपान और व्यान की शुद्धि के लिए यह आहुति है। यह मेरे लिए नहीं है। **(मन्त्र-4)**

Aum. I call upon Agni, the Maker, Vayu the Shedder of miseres and Aditya, the bestower of all bliss for prana. Apana and Vyana respectively. This offer is for Agni, Vayu and Aditya only and nothing for myself.

समर्पण मन्त्र

ओ३म् आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।।5।।

सरल पाठ

ओ३म् आपो ज्योति रसो अमृतं ब्रह्म भुर् भुवः स्वरों स्वाहा।।5।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! जल समान शान्तिदायक, प्रकाशस्वरूप, आनन्द रस के देने वाला, मुक्ति प्रदाता, सबसे महान्, प्राणाधार, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, सर्वरक्षक परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए यह आहुति है।

Aum. A call upon the creator and the preserver of the universe. God is all-prevading. He is the highest source of intelligence. May God protect his devotees.

प्रार्थना मन्त्र

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधाविन कुरु स्वाहा।।6।।

सरल पाठ

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविन कुरु स्वाहा।।6।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे प्रकाशस्वरूप, ज्ञानस्वरूप प्रभो! जिस मेधा बुद्धि को विद्वान् और पितर लोग प्राप्त करते हैं और उपयोग करते हैं। वही धारणावती बुद्धि मुझे प्रदान कर मेधावी बनाइये। यह मेरी आपसे हार्दिक प्रार्थना है।

Aum. I call upon you, O Agni Grant me that superior discriminating intellect which enlightened ancesstors posessed. This is my heartfelt prayer to Thee.

ओ३म् विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।।7।।

सरल पाठ

ओ३म् विश्वानि देव सवितर् दुरि तानि परा सुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।।7।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर, आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दु:खों को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह हमको प्राप्त कराइये।

Aum. O God Almighty, the creator of the Universe and Bestower of happiness. We pray Thee to keep us far from bad habits, Vices and calamities and bestow, upon us what is blessed and auspicious.

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमः उक्तिं विधेम स्वाहा।।8।।

सरल पाठ

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयु नानि विद्वान्। युयो ध्यस्म ज्जुहुराण मेनो, भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।8।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे स्वप्रकाश स्वरूप एवं ज्ञानमय अग्निदेव! आप कृपया हमें उस मार्ग पर ले जाइये जो सुपथ हो ताकि हम अच्छे कामों से इस संसार में सम्पदा एवं ज्ञान प्राप्त कर सकें। हमारी सब प्रकार की कुटिलताएँ और पाप कर्म दूर कीजिए। हम सर्वदा आपका भजन एवं आपकी उपासना करते रहें।

Aum. O God! the self-illuminating Agni, the personification of knowledge. Kindly lead us on the right path which leads to real knowledge and worldly riches through rightous acts. Shed away all our crooked ill-feelings and sins. Kindly bestow upon us the intellect which may help meditating upon you.

नोट :-

(1) जो साधक अधिक आहुति देना चाहते हैं, वे गायत्री मंत्र से आहुति दे सकते हैं।

(2) यदि साधक अधिक हैं, तो ऐसे सभी साधक क्रमशः यज्ञ वेदी पर बैठकर गायत्री मंत्र से आहुतियाँ दे सकते हैं।

गायत्री मन्त्र

ओ३म् र्भू भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

सरल पाठ

ओ३म् भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

।। पूर्णाहुति-मन्त्रः ।।

1. केवल घृत द्वारा आहुति दें।
2. दैनिक यज्ञ में इस मन्त्र को छोड़ सकते हैं।

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।। (ब्राह्मणग्रन्थ)

सरल पाठ

ओ३म् पूर्ण मदः पूर्ण मिदं पूर्णात् पूर्ण मुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्ण मादाय पूर्ण मेवा व शिष्यते।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! यह ब्रह्म पूर्ण है, यह जगत् भी पूर्ण है। पूर्ण ब्रह्म से पूर्ण ही प्रकट होता है। पूर्ण में से पूर्णता को लेने पर पूर्ण ही शेष रहता है।

Aum. He, the Almighty possessor of perfect power and fully perfect in fulfilling the needs and desires of all the creatures from that Supreme power emerges the perfect, leaving which, we, the Pursha-Purana remains in the same status and glory.

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।1।
ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।2।
ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।3।

सरल भावार्थ एवं प्रार्थना

हे प्रभो! जो प्रार्थनायें हमने भिन्न-भिन्न मन्त्रों द्वारा इस यज्ञ में की हैं, वे सच्चे हृदय की पुकार हैं। स्वीकार कीजिये। प्रभो! मेरे द्वारा दी गई सम्पूर्ण सामग्री सबके लिए कल्याणकारी हो। इसको विस्तार दीजिये।

शेष घृत छोड़ने का मन्त्र

(इस मंत्र को बोलते हुए कुण्ड के अन्दर चारों तरफ घी की धारा छोडें)

ओ३म् वसोः पवित्रमसि शतधारं
वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः।
पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

घृत लगाने का मन्त्र

तेजोऽसि तेजोमयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यमयि धेहि।
बलमसि बलमयि धेहि। ओजोऽसि ओजोमयि धेहि।
मन्युरसि मन्युंमयि धेहि। सहोऽसि सहोमयि धेहि।।

मंगल कामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःखभागभवेत।।
सबका भला करो भगवान्, सब पर दया करो भगवान।
हे ईश! सब सुखी हों कोई न हो दुखारी।
सब हों नीरोग भगवन धनधान्य के भण्डारी।।
सब भद्रभाव देखें सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे सष्टि में प्राणधारी।।

सुखी बसे संसार सब

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन पूरी होय।।1।।
विद्या, बुद्धि, तेज, बल, सबके भीतर होय।
दूध-पूत, धन-धान्य से, वञ्चित रहे न कोय।।2।।
आपकी भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग-द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर।।3।।
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश।।4।।
हमें बचाओ पाप से, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाय कर, सब को करो निहाल।।5।।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार।
धैर्य हृदय में वीरता, सबको दो करतार।।6।।
नारायण तुम आप हो, पाप विमोचन हार।
क्षमा करो अपराध सब, कर दो भव से पार।।7।।
हाथ जोड़ विनति करूं, सुनिये कृपा-निधान।
साधु-संगत सुख दीजिए, दया नम्रता दान।।8।।

यज्ञ प्रार्थना

पूजनीय प्रभो! हमारे भाव उज्जवल कीजिए।
छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिए।।1।।

वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक-सागर से तरें।।2।।

अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर उपकार को।
धर्म-मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को।।3।।

नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।।4।।

भावना मिट जायें मन से पाप-अत्याचार की।
कामनाएं पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नार की।।5।।

लाभकारी हो हवन हर जीवधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किए।।6।।

स्वार्थ-भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।।7।।

प्रेम रस में तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे।
नाथ 'करुणारूप' करुणा आपकी सब पर रहे।।8।।

शान्ति पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति- रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।18।। यजु0 36/12

सरल पाठ

द्यौः शांतिर अन्तरिक्षं शांतिः पृथिवी शान्तिर् आपः शान्तिर् ओषधयः शांति। वनस्पतयः शान्तिर् विश्वे देवाः शान्तिर् ब्रह्म शांतिः सर्व शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधि।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

भावार्थ-हे प्रभो! आपकी कृपा से द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक, पृथिवी लोक, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ, यह विशाल विश्व, संसार का सब कुछ, उसका कोना-कोना शांति का ही स्वर आलापे! मुझे सब जगह से शांति ही शांति प्राप्त हो जो निरन्तर बढ़ती ही रहे।

।। बलिवैश्वदेवयज्ञः।।

(BHUTAYAJNA)

प्रभु की आज्ञा है कि मनुष्य को दिये गये भोगों को अकेले नहीं खाना चाहिये। उन्हे दीन–दु:खियों एवं अभावग्रस्तों को बाँटकर स्वयं उपभोग करना चाहिए। इस कर्तव्य को स्मरण कराने के लिए इन दस मन्त्रों से घृतमिश्रित भात से यदि भात न बना हो तो क्षार और लवणान्न को छोड़ कर जो कुछ मिष्ठान्न आदि पाकशाला में बना हो, उसकी दस आहुति दी जाती हैं।।

ओ३म् अग्नये स्वाहा।। ।।1।।
ओ३म् सोमाय स्वाहा।। ।।2।।
ओ३म् अग्निषोमाभ्यां स्वाहा। ।।3।।
ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।। ।।4।।
ओ३म् धन्वन्तरये स्वाहा।। ।।5।।
ओ३म् कुह्वै स्वाहा।। ।।6।।
ओ३म् अनुमत्यै स्वाहा।। ।।7।।
ओ३म् प्रजापतये स्वाहा।। ।।8।।
ओ३म् सह द्यावा पृथिवीभ्यां स्वाहा।। ।।9।।
ओ३म् स्विष्टकृते स्वाहा।। ।।10।।

।। विशेषयज्ञ-मन्त्राः।।

(Oblations for Special Sacrifices)

।।व्याहृत्याहुति-मन्त्राः।।

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा।। इदमग्नये इदं न मम।।1।।

सरल पाठ

ओ३म् भूर् अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम।

सरल भावार्थ

ओ३म्! मैं प्राणाधार अग्निदेव के लिए आहुति समर्पित करता हूँ। यह मेरे लिए नहीं।

Aum. Oh Agni,the imparter of life. This oblation is for Agni and not for me. Everything belongs to you.

ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा।। इदं वायवे इदं न मम।।2।।

सरल पाठः

ओ३म् भूवर् वायवे स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे गतिशील प्रभो! यह आहुति वायु के लिए अर्पित करता हूँ। यह आहुति वायु के लिए है, मेरे लिए नहीं।

Aum.I call upon Agni, Vayu and Aditya for long life, perfect happiness and riches respectively, What I offer is for all of you and nothing for myself.

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा।। इदमादित्याय इदं न मम।।3।।

सरल पाठः

ओ३म् स्वरा दित्याय स्वाहा। इदं आदित्याय इदं न मम।

सरल भावार्थ

ओ३म्! मैं आनन्दस्वरूप सुखदाता आदित्य देव का आह्वान करता हूँ। यह आहुति आदित्य के लिए है। मेरा तो कुछ भी नहीं। सब कुछ तो आपका है।

Aum. Oh Aditya, the giver of happiness! This oblation is for you. This is not mine, this belongs to you.

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदं न मम।।4।।

(तै0उ0 शिक्षा0 5; तै0 आ0 10/2)

सरल पाठ

ओ३म् भूर भुवः स्वर अग्नि वाय्वादित्येभ्यः स्वाहा। इदं अग्नि वाय्वादित्य भ्यः इदं न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे भूः भुवः स्वः स्वरूप देव! मैं फिर इन तीनों लोकों के लिए आहुति देता हूँ। यह आहुति त्रिलोकी अर्थात् अग्नि, वायु एवं आदित्य के लिए है। मेरा अपना तो कुछ नहीं, सब कुछ तो प्रभु का है।

Aum.I call upon Agni, Vayu and Aditya for long life, perfect happiness and riches respectively. What I offer is for all of you and nothing for myself.

।। स्विष्ट्कृदाहुतिः।।

(केवल घृत या भात से ही आहुति दें)

ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरारिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्।

अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे।
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां
कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।
इदमग्नये स्विष्टकृते-इदन्न मम।

सरल पाठ

ओ३म् यदस्य कर्मणो अत्य री रिचं यद्वा न्यून मिहा करम्। अग्निष्टत् स्विष्ट कृत् विद्यात् सर्व स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्ट कृते सुहुत हुते सर्व प्रायश्चित्त आहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त् समर्द्धय स्वाहा। इद अग्नये स्विष्ट कृते-इदं न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे ज्ञानस्वरूप प्रभो! आप इस यज्ञ से सम्बन्धित मेरी सभी मनोकामनाओं को जानते हैं, कृपा करके उन्हें पूरा कीजिए। मैंने यज्ञ कर्म में जो कुछ भी विधि से अधिक या न्यून किया हो, वह दयालु परमात्मा उसे पूर्ण कर दें। जो कुछ भी है उसे स्वीकार कीजिए। यह आहुति अग्निस्वरूप प्रभु के लिए है। यह सब कुछ जो मेरे पास है, वह आपको ही समर्पित है और इसमें मेरा कुछ नहीं।

Aum.Oh all-knowing God, fulfiller of all noble desires, you know all what I seek. Please fulfil them. Please accept the offerings which I have offered you reverently. Please condone whatever excess or shortcoming there may have been in this Yajya. Make this Yajya a success. You are the destroyer of all evils and bestower of goodness in making. O Agni, the fulfiller of all wishes this oblation is for you. This is not mine, it belongs to you.

।। प्राजापत्याहुति-मन्त्रः।।

(मौन आहुति)

निम्नलिखित मन्त्र को मन में बोलकर प्रजापत्याहुति दें-

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा।। इदं प्रजापतये इदं न मम।।

- पार0 गृह्य0 1/9/3

सरल भावार्थ

ओ३म्! मैं प्रजापति परमेश्वर का आह्वान करता हूँ, यह आहुति प्रजापति को समर्पित है। मेरा तो अपना कुछ नहीं।

Aum. Oh Prajapati, the Supreme Lord ! I call upon you. This oblation is Thine and Thine only. Nothing is mine here.

आज्याहुति मंत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्न आयुंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः।आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदं न मम।।

सरल पाठ

ओ३म् भूर्भूवः स्वः। अग्नआयूं षि पवस, आसुवोर् जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा। इदं अग्नये पवमानाय-इदं न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे प्राणाधार, दुःखविनाशक और दुखों की वर्षा करने वाले प्रभो! आप हमारी आयुओं को पवित्र करो, ऐश्वर्य तथा शक्ति प्रदान करो, हमारे अवगुणों और दुर्जिनों को दूर करो। यह परम पुनीत शान्तिदायक अग्निदेव के लिए आहुति है मेरा नहीं।

Aum.God is the very breath of life, the shedder of miseries and the Bestower of happiness. O God, bestow

upon life and vigour save us from distresses, Calamities and mishaps. This is my earnest prayer. I offer this oblation to Agni, the Giver of peace. This is Thine and Thine only. Nothing is mine here.

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्निऋषिः पावमानः, पाञ्चजन्य पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदं न मम।।

सरल पाठ

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्नि ऋषिः पवमानः, पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदं न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे प्राणप्रद, दुःखहर्ता और सुखदाता पवमान अग्निदेव! आप सबको पवित्र करने वाले हो, आप हमारे पुरोहित–अग्रणी हो। आप न्यायकारी और सत्यस्वरूप हो। हे शान्ति एवं न्याय के देव अग्नि! मैं यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ। इसमें मेरा कुछ भी नहीं।

Aum. God is the cause of life, the dispeller of all miseries and doer of good deeds. Oh God, you are the Supreme Lord who loves righteousness and justice. You are our guide. I offer this oblation to Agni, the source of peace and justice. This oblation is purely for you and does not belong to me.

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।

सरल पाठ

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सु वीर्यम्। दधद् रयिं मयि पोषम् स्वाहा। इदं अग्नये पवमानाय–इदं न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे सर्वाधार दु:ख विनाशक, सुखस्वरूप, प्रकाशमय प्रभो! आप हम पर सर्वदा प्यार और दया का हाथ रखिए। आप हमें पवित्र कर बल और ओज प्रदान कीजिए। आप हमें धन, ऐश्वर्य और शारीरिक सुख दीजिए। मैं यह आहुति शान्तिदायक अग्निदेव को देता हूँ। सब कुछ तो आपका ही है। मेरा तो कुछ भी नहीं।

Aum. God is the Giver of life. the Remover of miseries, and the Giver of happiness. O God, may you rule over us in love and kindness. Purify us, give us strength and energy. Bless us with all kinds of riches and vigour. I offer this oblation to Agni, the source of peace. This is for you and not for me.

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते-जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा। इदं प्रजापतये-इदन्न मम।।

सरल पाठ

ओ३म् भूर् भुवः स्वः। प्रजापते न त्व देता न्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत् कामास्ते जुहु मस्तन्नो अस्तु, वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा। इदं प्रजापतये-इदं न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! प्रभु जीवनदाता, दु:खों का नाश करने वाला और सुखों की वर्षा करने वाला है। हे प्रजा के स्वामी! आपसे भिन्न दूसरा कोई इन सब उत्पन्न हुए जड़ चेतनादि जगत् को बनाने हारा और व्यापक नहीं है। आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले हम आपका आश्रय लें, वह सब हमारी कामनाएँ पूर्ण हों। हम ऐश्वर्य के स्वामी बनें।

Aum. God is the Giver of life, the Dispeller of miseries, and fount-source of happiness. O God, Lord of all creatures, none other than thou excels all these and other created things. Thou art above all, Thou art supreme. May you fulfil all our cherished desires and may we become masters of bounteous wealth and other material things of the world. This oblation is for Prajapati, the Lord of the universe. This oblation is for you and not for me.

अष्टाज्याहुति मंत्र

निम्नलिखित मन्त्रों से सर्वत्र मंगल कार्यों में आठ आज्याहुतियाँ दें –

ओ३म् त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेळोऽवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्याम्-इदन्न मम।1।

सरल पाठ

ओ३म् त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्, देवस्य हेडो अवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो वह्वितमः शो शुचानो, विश्वा द्वेषांसि प्रभु मुग्ध्यस् मत् स्वाहा।। इदम अग्नी वरुणाभ्याम्-इदं न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्। हे प्रकाशस्वरूप अग्निदेव! आप हमको विद्वानों के अनादर से दूर रहने की प्रेरणा दीजिए। विद्वानों और आदरणीयों में आप सर्वोत्तम हैं। हमारे हृदयों में समस्त वैर-द्वेष घृणा आदि दूर कीजिए। यह आहुति अग्नि और वरुणदेव के लिए हैं, मेरी नहीं हैं।

Aum. O Agni Dev, you know everything, kindly grant us knowledge that we may not dishonour any respectful and enlightened scholar. Thou art most honourable. Please drive away all ill-feelings from our minds. This oblation is for Agni and Varuna both and not for myself.

ओ३म् स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा।।
इदमग्निवरुणाभ्याम् इदं न मम।।2।। (ऋ0 4/1/4-5)

सरल पाठ

ओ३म् स त्वं नो अग्ने अवमो भवोति, ने दिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो, वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा इदम अग्नी वरुणाभ्याम्-इदं न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे सर्वरक्षक, सब सुखों के दाता! आप हमारे रक्षक बनिये। उषा काल में आप हमारे बहुत ही पास हैं। हमें ऐसी बुद्धि प्रदान कीजिए कि हम सर्वदा विद्वानों का संग करें। यह आहुति अग्नि एवं वरुणदेव के लिए है। मेरा कुछ भी नहीं, सब कुछ प्रभु का ही तो है।

Aum.O shining God! protect us with all means of protection. You are very near to us in this ceremony. Accept this offrering. Grant us intelligence so that we may remain in the company of the enlightened. This oblation is for Agni and Varun and not for myself.

ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके स्वाहा। इदं वरुणाय-इदन्न मम।।3।।

सरल पाठ

ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी, हवम अद्या च मृडय। त्वाम वस्युरा चके स्वाहा।। इदं वरुणाय-इदं न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे वरुणदेव! आप मेरी पुकार को सुनो और मुझे

सुखी करो। मैं आपसे रक्षा चाहता हुआ आपको सच्चे दिल से पुकार रहा हूँ। यह आहुति वरुण के लिए है, मेरी नहीं।

Aum.Oh Lord Varun, listen to my prayer and make me happy to-day. I call upon you for my protection and invoke you from my heart. This oblation is for Varun and not of myself.

ओ३म् तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंसः मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा।। इदं वरुणाय इदं न मम।।4।।

– ऋ0 1/24/11

सरल पाठ

ओ३म् तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमा नस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेड मानो वरुणेह बोध्यु रुशंस मा न आयुः प्रमोषी स्वाहा।। इदं वरुणाय-इदं न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे वरणीय प्रभो! वेद मन्त्र का पाठ करने वाला मैं यही चाहता हूँ कि आपको प्राप्त करूँ। यह यजमान भी आप ही को पाना चाहता है। आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार करें और हमारी आयु को नष्ट न करें। यह हवि वरुण के लिए है, मेरे लिए नहीं।

Aum. Oh Reverable God! I adore you with these Ved Mantras to attain you. The host of yajya seeks the same. We pray kindly not to decline our prayer and bless our lives. This belongs to You. Varun.

ओ३म् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया पाशा विततता महान्तः। तेभिर्नोऽद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः

स्वर्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुदभ्यः स्वर्केभ्यःइदन्न मम।।5।।

– कात्या0 श्रौ0 25/1/11

सरल पाठ

ओ३म् ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं, यज्ञियाः पाशा विततता महान्ताः। ते भिरनो अद्य सवितोत विष्णुर् विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वे भ्यो देवे भ्यो मरुदभ्यः स्वर्केभ्यः भ्यः-इदं न मम।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे वरुण देव! आप संसार के रचयिता एवं सर्वव्यापक हो। आप हमें तथा समस्त प्रशंसित विद्वानों को इस संसार के पापों एवं हजारों-लाखों बन्धवों से मुक्त करावें। आप सर्वोपरि हैं। यह सब कुछ जो मेरे पास है वरुण, विष्णु और मरुद्गण के लिए है, मेरा तो अपना कुछ भी नहीं।

Aum. Oh Creator of the universe and Omnipersent God! May you and the enlightened scholars be kind and gracious enough to free us from hundreds and thousands of worldly hindrances and sins pertaining to Yajyas. Whatever I offer is for Varun, Vishnu and Maruts. This is not mine, everything belongs to you all.

ओ ३म् अयाश्चाग्ने अस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज स्वाहा! इदमग्नये अयसे इदं न मम।।6।। – कात्या0 श्रौ0 25/1/11

सरल पाठ

ओ३म् अया श्चा अग्ने अस्य नभि शस्ति पाश्च सत्य मित्त्व मया असि। अया नो यज्ञं वहास्य या नो धेहि भेषजँ स्वाहा।। इदं अग्नये अयसे-इदं न मम।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे ज्ञानमय सर्वव्यापक प्रभो! हम आपसे रक्षा की कामना करते हैं और इस यज्ञ की पूर्ण सफलता की आपसे प्रार्थना करते हैं। आप सर्वदा निर्दोषी जनों की रक्षा करते हैं। आप हमें ऐसी बुद्धि एवं शक्ति प्रदान करें ताकि हम पापों, रोगों और बुराइयों में न फँसे। यह हवि अग्निदेव के लिए है। इसमें मेरा कुछ नहीं है।

Aum. You are Omnipersent and Omniscient. We seek your protection and pray to make this Yajya a great success. You always protect innocent and guiltless beings. Kindly provide us with remedial force against sins, sufferings and diseases. This oblation is for you, Agni. his does not belongs to me, everything belongs to you.

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदित्ये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणायाऽऽदित्यायऽदित्ये च इदं न मम।।7।।

– ऋ0 1/24/15

सरल पाठ

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाश मस्मदवा धमं विमध्यमं श्रथाय। अथा वयम आदित्य व्रते तवा नाग सो अदित्ये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणाय आदित्याय आदित्ये च-इदं न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे वरणीय वरुणदेव! आप कृपया मेरे सभी बन्धनों को शिथिल कर दें! हम आपके अनुशासन और नियमों में रहते हुये हमेशा निष्पाप और सर्वथा बन्धनमुक्त हो सकें। यह हवि वरुण आदित्य और अदिति के लिए है, मेरे लिए कुछ नहीं।

Aum. O Reverable God Varun! Loosen all our bonds and worldly attachments. May we always remain disciplined so that we may be able to attain liberation. This oblation is for Varun, Aditya and Aditi and not for myself. Eeverything belongs to you all.

ओ३म् भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञꣳहिꣳसिष्ट मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा।। इदं जातवेदोभ्याम् इदं न मम।।8।। (यजु0 5/3)

सरल पाठ

ओ३म् भवतः नः समन सौ सचेत सा वरे पसौ। मा यज्ञं हिं सिष्टं मा यज्ञ पतिं जात वेदसौ शिवौ भवतम अद्यः नः स्वाहा। इदं जात वेदो भ्याम्-इदं न मम।।

सरल भावार्थ

ओ३म्! हे ज्ञानमय प्रभो! हमारी प्रार्थना है कि सब विद्वान्गणों में मनसा, वाचा और कर्मणा एक हों। आप हमारे यज्ञों में और हमारी उन्नति में सहायता कीजिए! यह हवि अग्निदेव एवं विद्वानों के लिए है। सब कुछ प्रभु का है, मेरा अपना तो कुछ नहीं।

Aum. Oh Agni Dev! You are the master of all knowledge. We pray that all the enlightened scholars be united in their thoughts and deeds. May you be helpful and benevolent in our Yagya. This oblation is for Agni and for the enlightened scholars and not for myself.

अथ स्वस्तिवाचनम्

(Bliss and Prosperity)

स्वस्ति वाचनम् और शान्ति करणम् के मन्त्रों के द्वारा समाज कल्याण व सभी जीवों की सुख–शान्ति की प्रार्थना की जाती है। ये मन्त्र विशेष यज्ञों में ही प्रायः पढ़े जाते हैं।

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।।1।। ऋग्0 1/1/1

सरल पाठ

अग्निम् इडे पुरोहितं, यज्ञस्य देवम ऋत्विजम्। होतारं रत्न धात मम।।

भावार्थ– मैं यज्ञ के आरम्भ में इस महान् सृष्टि–यज्ञ के नेता, विधाता और उसके धारण करने वाले प्रकाश–स्वरूप प्रभु की स्तुति करता हूँ।।

ओ३म् स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये।।2।। ऋग्0 1/1/ए

सरल पाठ

स नः पितेव सूनवे अग्ने सू पायनो भव।
सच स्वा नः स्वस्तये।।2।।

भावार्थ– आप हमारे लिए उसी प्रकार सूपायन अर्थात् सुगमता से जिसके पास जाया जा सके, ऐसे हूजिये, जैसे पिता के पास पुत्र अपनी प्रार्थना लेकर झट से बिना झिझक के चला जाता है। हम आपके द्वारा दिये गये पदार्थों से कल्याण को प्राप्त हों, उनका अपनी भलाई के लिए उपयोग करें।

ओ३म् स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना।।3।।

सरल पाठ

स्वस्ति नो मिमीता मश्विना भगः, स्वस्ति देव्य दितिर नर्वणः।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः, स्वस्ति द्यावा पृथिवी सुचेतुना।।

भावार्थ- हे प्रभो! सूर्य चन्द्र, धन सम्पत्ति, देवी पृथिवी, अचल पर्वत आदि पुष्टि कर्त्ता जीवन दाता देव और प्रकाश प्रकाशक लोक, ये सभी हमारे लिए कल्याणकारी होवें।

ओ३म् स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः।।4।।

- ऋग्0 5/51/12

सरल पाठ

स्वस्तये वायुम् उप ब्रवा महै, सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये, स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः।।

भावार्थ- हे प्रभो! हम कल्याण के लिये वायु, सोम और भुवन के पति सूर्य को बुलाते हैं, अर्थात् इनके गुण ज्ञान द्वारा इनका सद् उपयोग लेते है। वेद ज्ञान के रक्षक आचार्य को भी शिष्य प्रशिष्यों सहित कल्याण के लिये आह्वान करते है। श्रेष्ठ ज्ञानी पुरुष हमारे लिये कल्याणकारी होवें।

ओ३म् विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवाः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः।।5।।

ऋग्0 5/51/13

सरल पाठ

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये, वैश्वा नरो वसुः अग्निः स्वस्तये। देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये, स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः।।

भावार्थ- हे प्रभो! सब ज्ञानी जन हमें कल्याण का उपदेश करें। वैश्वानर, वसु, आहार का पाचन अग्नि हमारे लिये कल्याणकारी होवे। स्वरूप से प्रकाश धर्म वाले अग्नि विद्युत सूर्य रूपी दिव्य शक्तियाँ कल्याण के लिए हमारी रक्षा करें और शासक भी कल्याण के लिए पाप कर्म से हमारी रक्षा करें।

ओ३म् स्वस्ति मित्रावरुणास्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि।।6।।

ऋग्0 5/51/14

सरल पाठ

स्वस्ति मित्रा वरुणा स्वस्ति पथ्ये रे वति। स्वस्ति न इन्द्रश् च अग्नि श्च, स्वस्ति नो अदिते कृधि।।

भावार्थ :- हे प्रभो! प्राण, अपान, मार्गों पर निष्कण्टक रूप से विचरने वाली गौवें, सूर्य, विद्युत और पृथिवी हमारे लिये कल्याणकारी होवे।

ओ३म् स्वस्ति पंथामनुचरेम सूर्या चन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि।।7।। ऋग्0 5/51/15

सरल पाठ

स्वस्ति पंथाम अनुचरेम सूर्या चन्द्रम सा विव। पुनर ददता ध्नता, जानता संग मे मीह।।

भावार्थ- हे प्रभो! हम सूर्य व चन्द्र के समान कल्याणकारी मार्ग का अनुसरण करें। हम सदा दानी, जो किसी को पीड़ा न दें तथा ज्ञानी पुरुषों की संगति में रहें।

ओ३म् ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।8।।

- ऋग्0 7/35/15

सरल पाठ

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां, मनोर् यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।
ते नो रासन्ता मुरु गाय मद्य, यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

भावार्थ–संगति करने योग्य मानवों के मध्य भी संगति के योग्य जो उत्कृष्ट पुरुष मनुष्य मात्र के आदरणीय, अमर, यशस्वी और सत्य के जानने वाले विद्वान् हैं वे हमें महानता प्रदान करें और अपने कल्याणकारी उपदेशों के द्वारा हमारे मार्ग भ्रष्ट होने पर मार्ग दर्शन द्वारा हमारी रक्षा करें।

ओ३म् येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये।।9।।

–ऋग् 10/63/3

सरल पाठ

ये भ्यो माता मधु मत् पिन्वते ययः पीयूषं द्यौर दितिर द्रि बर्हाः।
उक्थ शुष्मान् वृषभरान्त् स्वप्न सस्तां आदित्यां अनु मदा स्वस्तये।।

भावार्थ– हे प्रभो! प्रशंसनीय बलों वाले, सुखों की वर्षा करने वाले, शुभ कर्म करने वाले जिन मानव श्रेष्ठों के लिए यह पृथिवी, द्युलोक और मेघों से भरपूर अन्तरिक्ष मधुर रस प्रदान करते हैं, उन अदिति अर्थात् वेदमाता जगज्जननी के श्रेष्ठ पुत्रों को कल्याण के लिए हर्षित करो।

ओ३म् नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः।
ज्योतिरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।।10।।

– ऋग्. 10/63/4

सरल पाठ

नृ चक्ष सो अनि मि षन्तो अर्हणा बृहद् दे वासो अमृत त्व मानशुः।
ज्योति रथा अहिमाया अनाग सो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।।

भावार्थ–जो मानव की भलाई पर लगातार दृष्टि रखते हैं, ऐसे सदा सावधान प्रकाशमय पथ पर विचरने वाले, अहिंसा व्रत वाले, पाप रहित विद्वान् पुरुष जीवन में सर्वोच्च पद प्राप्त करते हैं और मर कर भी अमर हो जाते हैं। ऐसे पुरुष जगत् के कल्याण के लिए ही उत्पन्न होते हैं।

ओ३म् सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपहिह्वृता दधि रे दिवि क्षयम्।
ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये।।11।।

ऋग् 10/63/5

सरल पाठ

ओ३म् सम्राजो ये सृवृधो यज्ञमाय युर परिह् वृता दधि रे दिवि क्षयम्।
ताँ आ विवास मनसा सु वृक्तिर् भिर्महो, आदित्याँ अदितिं स्वस्तये।।11।।

ऋग्0 10/63/5

भावार्थ–हे मानवो! जो शुभ गुणों के प्रकाशमान यशस्वी, दूसरों की उन्नति चाहने वाले, शुभ कर्मों में प्रवृत होते है, भले ही वे इस यज्ञ में पधारे हों या वीर गति प्राप्त कर चुके हों, ऐसे जगत् जननी के श्रेष्ठ पुत्रों को धरती माता का यश निरन्तर बनाये रखने के लिए नमस्कार करो और उनकी यश गाथाओं को गाओ।

ओ३म् को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः षर्षदत्यंहः स्वस्तये।।12।।

ऋग्0 10/63/6

सरल पाठ

को वः स्तोमं राधति यं जु जोषथ, विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन।
को वो अध्वरं तुवि जाता अरं करद्यो नः पर्ष दत्यंहः स्वस्तये।।

भावार्थ–हे विद्वानो! आप लोग जिसकी स्तुतियाँ करते है उन्हें कौन सुनता है, किसके सुनने से प्रार्थनायें सफलीभूत होती हैं? तुमने अनेक जन्म लिये, हर जन्म में नया–नया ज्ञान प्राप्त किया, अनेक यज्ञ रूप कर्मों को तुम इस जन्म में करते हो, जन्म जन्मान्तर से भी करते आ रहे हो। यह सब किसके लिए करते हो? मन्त्र में ही इस प्रश्न का उत्तर निहित करते हुए कहा है– तुम्हारे पापों को वही सुख स्वरूप प्रभु दूर कर तुम्हारी प्रार्थनाओं को सफल बनाता है।

ओ३म् येभ्यो होत्रा प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये।।13।।

ऋग्0 10/63/7

सरल पाठ

येभ्यो होत्रा प्रथमा मा येजे मनुः, समिद्धा अग्नि र् मनसा सप्त होतृभिः।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत, सुगा नः कर्तः सुपथा स्वस्तये।।

भावार्थ–हे प्रभो! जिन मनीस्वियों ने दो आँख, दो कान, दो नासिका तथा एक मुख–इन सात इन्द्रियों को तथा मन को होता बना कर संसार के पदार्थों को अग्नि से शुद्ध करने के लिए जो यज्ञ रचा, उससे तथा आदित्य की रश्मियों से शुद्ध हुए पदार्थों का सेवन कर हम सुखी हों और हमारे जीवन का मार्ग कल्याणमय हो। इस मंत्र का यह भी अभिप्राय है कि यज्ञाग्नि से भोग्य पदार्थों की शुद्धि होती हैं, उनके कीटाणुओं का नाश होकर वे सेवन योग्य हो जाते हैं।

ओ३म् य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये।।14।।

ऋग्0 10/63/8

सरल पाठ

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर् जगतश्च मन्तव।
ते नः कृताद कृतादेन सस् पर्यद्या देवासः पि पृताा स्वस्तये।।

भावार्थ–हे प्रभो! जो मननशील ज्ञानी पुरुष इस स्थावर तथा जंगम जगत के स्वामी हैं वा उस पर शासन करते हैं, ऐसे उत्कृष्ट मेधावी लोग हमारे किए हुए या न किए हुए पाप कर्मों से हमें बचायें।

ओ३म् भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये।। 15।।

– ऋग्. 10/63/9

सरल पाठ

भरे ष्विन्द्रं सुहवं हवामहे अहो मुचं सुकृतं दैव्यं जनम्।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावा पृथिवी मरुतः स्वस्तये।।

भावार्थ–हे प्रभो! जीवन में संघर्ष तथा कठिनाइयों के सामने आ पड़ने पर महा–बलवान, परदुख हर्ता, पापों से बचाने वाले, उत्तम कर्म करने वाले, तेजस्वी, सबके मित्र, अभिलषित वस्तु की प्राप्ति के लिए हम वरणीय पुरुषों को पुकारते हैं उनका सान्निध्य चाहते हैं। ऐसे पुरुषों द्वारा मार्ग–दर्शन होने पर पृथिवी, द्यु–लोक और अन्तरिक्षस्थ दिव्य शक्तियाँ हमारे कल्याण के लिए हों।

ओ३म् सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रा मनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये।।16।।

ऋग्. 10/63/10

सरल पाठ

सुत्रा माणं पृथिवीं द्या मने हसं सु शर्माणम दितिं सु प्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्राम नागसम स्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये।।

भावार्थ-इस मंत्र में 'नाव' शब्द का तीन अर्थों में प्रयोग किया गया है। स्थूल अर्थ में हम ऐसी नौका पर बैठें जो छिद्र रहित हो, चूने वाली न हो, त्रुटि-रहित हो, ठीक से बनी हुई हो-यह पहला अर्थ है।

नाव का प्रयोग यहाँ अपने शरीर के लिए भी किया गया है-हमारे शरीर की नौका दृढ़ हो, त्रुटि रहित हो, भव सागर से पार तार ले जाने वाली हो यह दूसरा अर्थ है।

नाव का प्रयोग यहाँ वेद विद्या के लिए भी किया गया है। वेद का ज्ञान हमारे कल्याण के लिए हो, हमारी तरफ से उसके पालन में कोई त्रुटि न हो ताकि उससे हम भवसागर को पार कर जावें।

ओ३म् विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः।
सत्यया वो देवहुत्या हुवमे श्रृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये।।17।।

ऋग्. 10/63/11

सरल पाठ

विश्वे यजत्रा अधिवोच तोतये त्रा यध्वं नो दुरे वाया अभि ह्रुतः।
सत्यया वो देव हूत्या हुवेम श्रृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये।।

भावार्थ-हे श्रेष्ठ पुरुषों! आप हमें दुखों से बचाने के लिए अधिकार पूर्वक उत्तम उपदेश सुनाओ, आपदाओं से हमें बचाओ। हे विद्वानो! हम दुःख अथवा दुर्गति में जब पड़ें तब आप दुःखियों की सच्ची टेर सुनने वाले हमारे दुःख सुन कर हमारा त्राण करो। अपनी रक्षा और कल्याण के लिए हम दुःखी जन आपको पुकारते हैं।

ओ३म् अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दूर्विदत्रामघाय तः
आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये।।18।।

ऋग् 10/63/12

सरल पाठ

अपामीवा मप विश्वा मना हुतिम पारातिं दूरवि दत्रा मघायतः।
आरे देवा द्वेषो अस्मद् युयो तनो रुणः शर्म यच्छता स्वस्तये।।

भावार्थ–हे प्रभो! आप हमें ऐसी बुद्धि दें जिससे हमारे सब रोग दूर हों। हमारी यज्ञ न करने की, दान न देने की भावना दूर हो। पापी के हृदय में पाप करने की जो भावनायें उठती हैं वे हमारे अन्दर न उठें। हमारे अन्तःकरण में ऐसे द्वन्द्व उत्पन्न कर दें कि हम किसी से द्वेष न करें–ये सब याचनायें हम आपके द्वारा पर सिर निवा कर इसीलिए करते हैं क्योंकि इसी में हमारा सुख और इसी में हमारा कल्याण हैं।

ओ३म् अरष्टिः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये।।19।।

ऋग्0 10/63/13

सरल पाठ

अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर् जायते धर्म णस्परि।
यमा दित्यासो नयथा सुनीति भिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये।।

भावार्थ–श्रेष्ठ व्यक्ति मानव समाज को न्यायोचित मार्ग पर चलने की प्रेरणा करते हैं। न्यायोचित मार्ग पर चलने से कष्ट उठाने पड़ते हैं, परन्तु जो व्यक्ति इस मार्ग से कष्टों का सामना करता हुआ, हार न मानता हुआ उन्नति करता जाता है वह पुत्र–पौत्रों के साथ संसार में आगे–आगे बढ़ता जाता है।

ओ३म् यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शुरसाता मरुतो हिते धने।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये।।20।।

ऋग्0 10/63/14

सरल पाठ

यं देवा सोऽवथ वाज सातौ यं शुर साता मरुतो हिते धने।
प्रातर्या वाणं रथम् इन्द्र सान सिम रिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये।।

भावार्थ–इस मन्त्र में 'रथ' शब्द का प्रयोग द्वयर्थक है। शरीर रूपी रथ को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए अन्न की आवश्यकता है, दो पहियो वाले रथ से अन्न ढोया जाता है, इसलिए रथ शब्द का प्रयोग शरीर तथा रथा दोनों के लिए है। इसी प्रकार युद्ध में शूरवीरों का संग्रह अपने शरीर रूपी रथ की रक्षा के लिए तथा दो पहियों के रथ का प्रयोग सैनिकों के संग्रह के लिए किया जाता है।

ओ३म् स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्व ति।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन।।21।।

ऋग्0 10/63/15

सरल पाठ

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्ति अप्सु वृजने स्वर् वति।
स्वस्ति नः पृत्र कृथेषु यो निषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन।।

भावार्थ–हे प्रभो! उत्तम स्थल प्रदेशों, मरु प्रदेशों, जल प्रदेशों, अन्तरिक्ष और द्युलोक अर्थात् अत्युच्च स्थान में सर्वत्र हमारा कल्याण हो। हमारी प्रजावर्धक नारियों वा उनके गर्भधारक शरीर अवयवों को कल्याणकारी बनाओ तथा दुखों के समय 'मत रोओ, धैर्य रखो'–ऐसा आश्वासन देने वाले प्रभो! हमें धन ऐश्वर्य में स्थापित करो, अर्थात् अति अधिक धन ऐश्वर्य दो।

ओ३म् स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वस्त्यभि या वाममेति।
सा नो अमा सो अरणे निपातु स्वावेशा भवतु देवगोपा।।22।।

ऋग्. 10/63/16

सरल पाठ

स्वस्ति रिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा, रेक्ण स्वस्त्यभि या वाम मेति।
सा नो अमा सो अरणे निपातु, स्वा वेशा भवतु देव गोपा।।

भावार्थ–परमात्मा से प्रार्थना है कि हमारे जीवन का मार्ग कुशलता से निपट जाए। धन धान्य से पूर्ण हमारे घर में अगर कोई विपत्ति आ पड़े तो वह आपकी कृपा से टल जावे और अगर हमारा घर हर तरह से सम्पन्न हो तो भी उसके सौन्दर्य में दिनोंदिन वृद्धि हो। हम चाहे घर में हों या निर्जन वन में हों, प्रभु की रक्षा का हाथ हमारे सिर पर हो, हमारा घर रहने का सुन्दर स्थान हो जहाँ विद्वज्जनों का सत्संग होता रहे।

ओ३म् इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽ अयक्ष्मा वा वस्तेन ईशत माघशँ् सो ध्रुवा ऽ अस्मिन् गौपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।।23।। – यजु0 1/1

सरल पाठ

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार् पयतु श्रेष्ठ तमाय कर्मण आप्याय ध्वमघ्नया इन्द्राय भागं प्रजा वती रनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघसं सो ध्रुवा अस्मिन् गौपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।।

भावार्थ :– हे सर्व रक्षक तथा सर्वव्यापक प्रभो! हम भोग्य पदार्थों की प्राप्ति एवं उनके सदुपयोग से बल तथा ओज प्राप्ति के लिए आपका आश्रय लेते हैं, आपसे याचना करते हैं। हम सदा गतिशील आगे बढ़ने वाले, उन्नति करने वाले हों, इसलिए आप ही हमें अति उत्तम कर्म करने के लिए समस्त वांछित पदार्थ प्राप्त कराओ। हमारी दुधारु गौए हृष्ट पुष्ट हों और राष्ट्र को दूध–घृत

आदि समस्त सेवनीय पदार्थ प्राप्त करायें। हमारी गौएं उत्तम बछड़े-बछड़ी जनने वाली हों, क्षय जैसे बड़े तथा अन्य छोटे रोगों से रहित हों, उन पर कोई चोर या पापी पुरुष शासन न करे, उनका स्वामी न हो। हम जो गौओं का पालन करने हारे हैं, उनके पास गौएं स्थिर रूप से रहें और हे प्रभो! आपका इस प्रकार के गोपालकों पर सदा आशीर्वाद बना रहे।

ओ३म् आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधे, असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।24।।

यजु0 25/14

सरल पाठ

आ नो भद्राः क्रत वो यन्तु विश्वतो, अदब्धासो अपरीतास उद् भिदः।
देवा नो यथा सद मिद् वृधे, असन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।

भावार्थ-हम में से श्रेष्ठ कर्म तथा प्रज्ञा ऐसे फूटें जैसे कोई कर्मिष्ठ व्यक्ति एकदम कोई श्रेष्ठ कर्म करने लगता है या किसी प्राज्ञ के मस्तिष्क से कोई प्रतिभा का विचार फूट पड़ता है। हमारे कर्म ऐसे हों जिन पर कोई आक्षेप न हो सके, जिन का कोई उल्टा परिणाम भी न निकल सके। देव लोक जैसे सदा शुभ कार्यों में हमारी सहायता करते रहते हैं वैसे प्रतिदिन वे हमारी सहायता करते रहें।

ओ३म् देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽ आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।25।।

यजु0 25/15

सरल पाठ

देवानां भद्रा सुमति र्ऋ जूयतां देवानां रातिर भि नो नि वर्तनाम्।
देवानां सख्य मुपसे दिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।

भावार्थ-सरलता से व्यवहार करने वाले विद्वानों की कल्याणकारी शुभमति हमें प्राप्त हो, विद्वानों की उदारता हमें प्राप्त हो, विद्वानों की मित्रता हमें प्राप्त हो और आयुर्विज्ञान के वेत्ता विद्वान लोग रसायन आदि के सेवन कराने से हमारी आयु को स्वस्थ दीर्घ जीवन के लिए बढ़ावें।

ओ३म् तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियन्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुर दब्धः स्वस्तये।।26।।

यजु0 25/18

सरल पाठ

तमीशानं जगतस् तस्थुष स्पतिं धिय न् जिन् वम वसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेद साम सद् वृधे रक्षिता पायुर दब्धः स्वस्तये।।

भावार्थ-चराचर तथा स्थावर जगत् के पालक, कर्म तथा प्रज्ञा के प्रेरक उस ऐश्वर्यो के स्वामी प्रभु को हम रक्षा के लिए पुकारते हैं जो हमारे ज्ञान की वृद्धि के साथ-साथ हमारे कल्याण के लिए हमारी रक्षा तथा हमारा पालन करें।

ओ३म् स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्ठनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।27।।

यजु0 25/19

सरल पाठ

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्व वेदाः।
स्वस्ति नस्ता क्ष्यो अरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर् दधातुः।।

भावार्थ-हे प्रभो! महान् गड़गड़ाहट करने वाली विद्युत एवं जल बरसाने वाली विद्युत, सृष्टि का पोषण करने वाली एवं ज्ञान का साधन रूप सूर्य, जल में भी अप्रतिहत गति वाला बडवानल (समुद्र

स्थित अग्नि) और ब्रह्माण्ड का पालक सूर्य, सब हमारे लिए कल्याण करने वाले होवें अर्थात् हम इनके यथोचित सेवन से सुखी रहें।

ओ३म् भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्ष भिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदांयुः।।28।।

यजु0 25/21

सरल पाठ

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा, भद्रं पश्येमाक्ष भिर्यजत्राः।
स्थिरै रङ्गै स्तुष्टुवां सस्तनू भिर्व्य शेमहि देवहितं यदायुः।28।

भावार्थ–हे दिव्यगुण युक्त सृष्टि के विधाता प्रभो! हम आप की कृपा से कानों से उत्तम शब्द ही सुनें, आँखों से अच्छा ही देखें, स्थिर सृदृड़ अंगों और शरीरों से आप की ही स्तुति करते हुए आपके द्वारा हमारे कर्मानुसार नियत आयु को पूर्ण रूप प्राप्त हों, अकाल मृत्यु के ग्रास न बनें।

ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि।।29।। साम0 5.1/1/1

सरल पाठ

अग्न आ या हि वीतये, गृणानो हव्य दातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि।।29।।

भावार्थ–हे प्रकाश स्वरूप प्रभो! हमारे द्वारा स्तुति किये हुए आप हमें दुखों से बचाने के लिए तथा जीवन यज्ञ के हव्य रूप भोग्य पदार्थों को देने के लिए सब ओर से प्राप्त हूजिये और प्राप्त होकर हमारे हृदय मन्दिर में निश्चय से विराजमान हो जाईये और पुनः हम से दूर मत हूजिए।

ओ३म् त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषांहितः।
देवेभिर्मानुषे जने।।30।। साम0 5.1/1/2

सरल पाठ

त्वम अग्ने यज्ञानां होता, विश्वेषां हितः।
देवेभिर् मानुषे जने।।

भावार्थ-हे प्रकाश स्वरूप प्रभो! आप ही श्रेष्ठ कर्मो के प्रेरक हो, आप ही समम्त जगत् के धारण करने वाले तथा हित करने वाले हो।प्रभो! आप अपने दिव्य गुणों के द्वारा हम उपासकों के मन के बीच स्थिति हो कर हमें प्रेरणा करो कि हम सुपथ के राही बनें, कुपथ का अनुगमन न करें।

ओ३म् ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रुपाणि विभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो ऽ अद्य दधातु मे।।31।।

अथर्व0 1/1/1

सरल पाठ

ये त्रिषप्ताः परि यन्ति, विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पति र् बला तेषां, तन्वो अद्य दधातु मे।।

भावार्थ-प्रकृति के सत्व रज तम सात विकृतियों अर्थात् महान् अंहकार, पांच तन्मात्राओं के साथ गतिमान् होकर 21 संख्यक बन कर सम्पूर्ण सृष्टि के विविध रूपों पदार्थों को उत्पन्न करते हैं। वाचस्पति प्रजापति उनके बलों को वा सामर्थ्यों को मेरे अन्दर धारण करावे। मेरा यह तन भी उन्हीं 21 तत्त्वों से निष्पन्न हुआ है। अतः उनके सामर्थ्यों से युक्त होवें।

इति स्वस्ति वाचनम्

अथ शान्तिकरणम्

(Peace and Harmony)

स्वस्ति वाचनम् और शान्तिकरण के मन्त्र विशेष यज्ञों मे ही प्रायः पढे जाते हैं।

ओ३म् शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ।।1।।

ऋग्0 7/35/1

सरल पाठ

ओ३म् शं न इन्द्राग्नी भवताम वोभिः शं न इन्द्रा वरुणा रात हव्या।
शम इन्द्रा सोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रा पूषणा वाजसातौ।।

भावार्थ–हे प्रभो! आपकी कृपा से विद्युत और अग्नि अपने रक्षा रूप कर्मों के द्वारा हमारे लिए सुखकारी होवें। भोग्य पदार्थों के देने वाले विद्युत और वायु हमारे लिए सुखकारी होवें। विद्युत और सोम रोगों के शमन और भयों को दूर करने वाले साधनों की प्राप्ति के लिए सुखकारी होवें। विद्युत और मेघ ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति कराने वाले कृषि आदि कर्मों में सुखकारी होवें।

ओ३म् शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शं सः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु।।2।।

ऋग्0 7/35/2

भावार्थ–हे प्रभो! आपकी कृपा से सेवन करने योग्य प्रातःकालीन सूर्य, शिक्षा, प्रशंसा, अति मेधावी पुरुष, अनेक विध ऐश्वर्य सत्य कर्मा सुनियन्ता अध्यक्ष की शिक्षा दण्ड नीति और प्रसिद्ध न्यायाधीश हमारे लिए सुखकारी हों।

ओ३म् शं नो धाता शमु धर्त्ता नो अस्तु शं न उरुची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु।।3।।

ऋग्0 7/35/3

भावार्थ–हे प्रभो! आप की दया से वायु, सूर्य, जलों के द्वारा विस्तृत आकाश, महती द्यावा पृथिवी, पर्वत वा मेघ तथा विद्वानों के सुन्दर–सुन्दर उपदेश सब हमारे लिए सुखकारी हों।

ओ३म् शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभिवातु वातः।।4।।

ऋग्0 7/35/4

सरल पाठ

शं नो अग्निर् ज्योतिर नीको अस्तु शं नो मित्रा वरुणा वश्विना शम्! शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभिवातु वातः।

भावार्थ–हे प्रभो! आपकी कृपा से प्रकाश ही जिसका बल है, ऐसी पार्थिव अग्नि, प्राण–अपान, सूर्य चन्द्र, उत्तम कर्म करने वाले के उत्तम आचरण हमारे लिए सुखकारी हों और गतिशील वायु हमारे लिए चारों तरफ से सुख को बहा लाए।

ओ३म् शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।।5।।

ऋग्0 7/35/5

सरल पाठ

शं नो द्यावा पृथिवी पूर्व हूतौ,शम अन्तरिक्षं दृश्यो नो अस्तु।
शं न ओषधीर् वनिनो भवन्तु, शं नो रज ससपति रस्तु जिष्णुः।।

भावार्थ–हे प्रभो! आपकी कृपा से उषा काल के समय प्रकाश और अन्धकार, अन्तरिक्ष दर्शन, औषधियाँ और वृक्ष वनस्पतियाँ

तथा लोक-लोकान्तरों का रक्षक सूर्य हमारे लिए सुखकारी होवे।

ओ३म् शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह श्रृणोतु।।6।।

ऋग्0 7/35/6

सरल पाठ

शं न इन्द्रो वसुभिर् देवो अस्तु, शम आदित्ये वरुणः सुशंसः।
शं नो रुद्रो रुद्रे भिर् जलाषः शनस् त्वष्टा अग्ना भिरिह शृणोतु।।

भावार्थ-हे प्रभो! आपकी जीवनदायनी किरणें हमारे लिए धनादि पदार्थों के साथ, शोभन प्रशंसा करने वाला जल समुदाययुक्त स्तुति योग्य संवत्सर, अभिलाषा पूर्ण करने वाला जीवात्मा प्राणों के साथ सुखकारी हों। संसार के रचने हारे को हम अपनी तोतली वाणी से पुकारते हैं और उससे याचना करते हैं कि वह हमारी प्रार्थना को सुने।

ओ३म् शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्राावाणः शमु सन्तु यज्ञाः।
शं नः स्वरूणा मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः।।7।।

ऋग्0 7/35/7

भावार्थ-हे प्रभो! आपकी कृपा से औषधियों के राजा सोम का रस, वेद के मन्त्र, सोम-रस निकालने के प्रस्तर, यह यज्ञ, यज्ञ में खड़े किए गए यज्ञ स्तम्भ, औषधियाँ, यज्ञ के वेदि-ये सब हमारे लिए सुखकारी हों।

ओ३म् शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।।8।।

ऋग्0 7/35/8

सरल पाठ

शं नः सूर्य उरु चक्षा उदेतु, शं नश्च तस्त्रः प्रदिशो भवन्तु।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु, शं न सिन्धवः शमु सन्त्वापः।।

भावार्थ–हे प्रभो! आपकी कृपा से हमारे लिए सुखकारी सूर्य उदय होवे, चारों दिशाओं में पर्वत, नदियाँ तथा जल सभी हमारे लिए सुखकारी होवें।

ओ३म् शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः।शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः।।9।।

ऋग्0 7/35/9

सरल पाठ

शं नो अदि तिर भवतु व्रते भिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवि त्रम शम्वस्तु वायुः।।

भावार्थ–हे प्रभो! आपकी कृपा से अन्नादि भोग्य पदार्थों के द्वारा पृथिवी, स्तुति–योग्य प्राण, सूर्य, मेघ, द्युलोक और वायु हमारे लिए सुखकारी होवें।

ओ३म् शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातिः।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः।।10।।

ऋग्0 7/35/10

सरल पाठ

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तु उषसो विभातिः।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः।।

भावार्थ–हे प्रभो! आपकी कृपा से अन्धकार तथा कृमियों से रक्षा करने वाला, दिव्य शक्ति वाला उदय होता हुआ सूर्य, प्रचुर प्रकाश वाली प्रभात वेला में बरसने वाला मेघ और लहलहाते खेतों

का मालिक किसान–ये यब प्रजाओं के लिए सुखकारी हों।

ओ३म् शं नो देवा विश्वदेवाः भवन्तु सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिषाचः शमुरातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।11।।

ऋग्0 7/35/11

सरल पाठ

शं नो देवा विश्व देवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धी भिरस्तु।
शम भिषाचः शमु रातिषाचः, शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।11।।

भावार्थ–हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के दान देने वाले दाता जन एवं द्युलोक पृथिवी लोक और अन्तरिक्ष लोक से सम्बद्ध दैवी शक्तियाँ हमारे लिए कल्याणकारी हों।

ओ३म् शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शंन ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।।12।।

ऋग्0 7/35/12

भावार्थ–हे प्रभो! आपकी कृपा से वेद विद्या के पालक, उत्तम साधनों वाले चतुर शिल्पी जन, अश्वादि वाहन, दुग्धादि पदार्थों के देने वाले गौ आदि पशु तथा आवश्यकता पड़ने पर पुकारे जाने पर माता–पिता के समान पालना करने वाले सहायक जन हमारे लिए सुखकारी हों।

ओ३म् शं नो अज एकपाद्देवो अस्तु शंनोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः।
शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा।।13।।

ऋग्0 7/35/13

सरल पाठ

शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु,शं नो अहिर बुध्न्यः शं समुद्रः।
शं नो अपां नपात् पेरुर अस्तु, शं नः पृश्निर् भवतु देवगोपाः।।13।।

भावार्थ- हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुणों वाला सूर्य, मेघ, समुद्र, पालन करने हारा विद्युत् तथा दिव्य शक्तियों से रक्षित पृथिवी हमारे लिए सुखकारी हो।

ओ३म् इन्द्रो विश्वस्य राजति।
शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।।14।। यजु0 36/9

भावार्थ-हे प्रभो! जो प्रदीप्त सूर्य संसार का प्रकाश दे रहा है, वह दोपायों तथा चौपायों के लिए सुख का देने वाला हो।

ओ३म् शन्नो वातः पवतां ॐ शन्नस्तपतु सूर्य्यः।
शंन्नः कनिक्रदद् देवः पर्जन्योऽअभि वर्षतु।।15।। यजु0 36/10

सरल पाठ

शं नो वातः पवतां, शं नस्त पतु सूर्य्यः।
शं नः कनि क्रदद् देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु।।

भावार्थ-हे प्रभो! आपकी कृपा से वायु हमारे लिए सुख को बहा लाये, सूर्य हमारे लिए सुख का ताप दे, गड़गड़ाता हुआ दिव्य मेघ हमारे लिए सुख बरसाये।

ओ३म् अहानिशं भवन्तुः शूँ रात्रीः प्रति धीयताम्। शं न इन्द्राग्नी भावतामवोभिः शन्न ऽ इन्द्रा वरुणा रातहव्या। शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रा सोमासुविताय शाँ योः।।16।।

- यजु0 36/11

सरल पाठ

अहानि शं भवन्तु नः, शं रात्री प्रति धीयताम्। शं न इन्द्राग्नी भवताम वोभिः, शं न इन्द्रा वरुणा रात हव्या। शं न इन्द्रा पूषणा वाज सातौ, शम इन्द्रा सोमा सुविताय शंयोः।।16।।

भावार्थ–हे प्रभो! आपकी असीम कृपा से हमारे दिन सुख से बीतें, रातें भी सुख से बीतें, विद्युत और अग्नि, प्राण और अपान, विद्युत् और मेघ तथा सूर्य और चन्द्र हमारे लिए शान्तिदायक हों।

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपोऽभवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः।।17।। यजु0 36/12

सरल पाठ

शं नो देवी र भिष्टय, आपो भवन्तु पीतये।
शंयो रभि स्र वन्तु नः।।17।।

भावार्थ–हे प्रभो! जिस प्रकार जल शरीर के मलों को दूर करता तथा शरीर को शांति पहुँचाता है, इसी प्रकार हम आप के आनन्द रस का पान करके अपने अन्तःकरण में स्थित मल को दूर कर शारीरिक शांति की तरह आत्मिक शांति प्राप्त करें।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।18।। यजु0 36/12

सरल पाठ

द्यौः शांतिर अन्तरिक्षं शांतिः पृथिवी शान्तिर् आपः शान्तिर् ओषधयः शांति। वनस्पतयः शान्तिर् विश्वे देवाः शान्तिर् ब्रह्म शांतिः सर्व शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधि।।18।।

भावार्थ–हे प्रभो! आपकी कृपा से द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक, पृथिवी लोक, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ, यह विशाल विश्व, संसार का सब कुछ, उसका कोना–कोना शांति का ही स्वर अलापे! मुझे सब जगह से शांति ही शांति प्राप्त हो जो निरन्तर बढ़ती ही रहे।

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत् श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरादः शतमदीनाः

स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।19।। –यजु0 36/24

सरल पाठ

ओ३म् तच् चक्षुर् देव हितं, पुरस्ता च्छुक्रमु उच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवम् शरदः शतं,श्रृणुयाम शरदः शतं, अदीनाः स्याम शरदः शतं भू यश्च शरदः शतात्।।19।।

भावार्थ :- हे प्रभो! आप सब के मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमय शक्ति हैं, हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षु से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बितायें और जन्म जन्मान्तर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदुसुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवशङ्कल्पमस्तु।।20।।

यजु0 34/1

सरल पाठ

यज् जाग्रतो दूर मुदैति दैवं तदु सूप् तस्य तथै वैति।
दूरं गमं ज्योतिषां ज्योति रेकं, तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु।।

भावार्थ–हे प्रभो! मेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुए वा सोते हुए दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान–साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवें।

ओ३म् येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्व यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।21।।

– यजु0 34/2

सरल पाठ

येन कर्माण्य पसो मनी षिणो, यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यद पूर्व यक्षमन्तः प्रजानां, तन्मे मनः शिव संकल्पं मस्तु।।21।।

भावार्थ–हे प्रभो! जिस मन की सहायता से मनस्वी धीर पुरुष विशेष ज्ञान पूर्वक किये जाने वाले यज्ञों में कर्तव्य अर्थात् करने योग्य कर्मों को करते हैं, जो शरीरों के भीतर अपूर्व पूजनीय रूप से विद्यमान हैं, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।22।।

यजु0 34/4

सरल पाठ

यत् प्रज्ञान मुत् चेतो धृति श्च यज् ज्योतिर अन्तर अमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु।।22।।

भावार्थ :- हे प्रभो! जो मेरे मन ज्ञान का साधन और चेतना का आधार है, जो विकट परिस्थितियों में भी मुझे धैर्य देता है, जो अमर ज्योति के रूप में हमारे अन्तःकरण में बैठा हुआ है और जिसके बिना हम अंगुली तक भी नहीं हिला सकते वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला हो।

ओ३म् येनेदम्भूतं भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।23।।

– यजु0 34/4

सरल पाठ

ये नेदं भूतं भुवनं भविष्यत्, परि गृहीत अमृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस् तायते सप्त होता, तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।23।।

भावार्थ :- हे प्रभो! जिस मन ने अपनी चिन्तन शक्ति से भूत, वर्तमान तथा भविष्य को मानों मुट्ठी में पकड़ रखा है, अर्थात् जो तीनों कालों का चिन्तन कर सकता है और जिस मन की सहायता से शरीर-रूपी यज्ञ में आँखें, नाक, कान तथा मुख ''होता'' बन कर जीवन यज्ञ चला रहे हैं वह मेरा मन शुभ विचारों वाला हो।

ओ३म् यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।24।।

यजु0 34/5

सरल पाठ

यस्मिन ऋचः साम यजूं षि यस्मिन् प्रतिष्ठता रथना भा विवाराः।
यस्मिन् श्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु।।

भावार्थ :- हे प्रभो! जिस मन में, रथनाभि में अरों की तरह ऋक्, साम, यजुर्वेद पिरोये हुए हैं, जिसमें हर प्राणी का चिन्तन समाया हुआ है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

ओ३म् सुषारयिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिवार्जिनइव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।25।।

यजु0 34/6

सरल पाठ

सुषा रथिर अश्वान् इव यन् मनुष्यान्, ने नीयते अभी शु भिर्वा जिनइव।
हृत् प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

भावार्थ :- 'हे प्रभो! जैसे उत्तम कुशल सारथी घोड़ों को लगाम की सहायता से जिधर चाहता है घुमा ले जाता है, इसी प्रकार हृदय से जन साधारण, पशु मात्र तथा वनस्पति मात्र के कल्याण की भावना करते रहें। हे प्रभो आप सबका कल्याण करें।

ओ३म् स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते।
शं राजन्नोषधीभ्यः।। 26।। साम0 उत्तरा0 1/1/3

सरल पाठ

स नः पवस्व शं गवे, शं जनाय शमर्वते।
शं राजन्न ओषधीभ्यः।।

भावार्थ–हे परम दीप्तिवान प्रभो! आप हमारे मन को पवित्र करो ताकि हमारे मन में सबके कल्याण की भावना उदय हो। हम हृदय से जन साधारण, पशु मात्र तथा वनस्पति मात्र के कल्याण की भावना करते रहें। हे प्रभो! आप सबका कल्याण करें।

ओम् अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु।।27।।

– अथर्व0 19/15/5

सरल पाठ

अभयं नः करत्य अन्तरिक्षम अभयं द्यावा पृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चाद् अभयं पुरस्ताद् उत्तराद् अधरादभयं नो अस्तु।।

भावार्थ–प्रभो! आपकी कृपा से अन्तरिक्ष आदि लोकों में हमें किसी प्रकार का भय न हो। हमें सामने से, पीछे से, नीचे वा चारों दिशाओं से–कहीं से भी किसी प्रकार का भय न हो।

ओ३म् अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।28।।

अथर्व0 19/15/6

सरल पाठ

अभयं मित्राद् अभयम् मित्राद् अभयं ज्ञाताद् अभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तं अभयं दिवा नः, सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।28।।

भावार्थ– हे प्रभो! आपकी दया से मित्र, शत्रु, उदासीन, ज्ञात और अज्ञात सभी पुरूषों से हमें अभय प्राप्त होवे। ये हमारा अकल्याण न कर सकें। रात्रि के अन्धकार तथा दिन के प्रकाश में हमें अभय प्राप्त होवे। सभी दिशायें हमारी मित्र बन जावें और सब ओर से हमारा कल्याण होवें।

।। इति शान्तिकरणम्।।

ईश्वरीय सान्निध्य पूर्णतया आनन्दित–तृप्त–सन्तुष्ट करता है।
– डॉ. राधावल्लभ चौधरी

अमावस्या पर दी जाने वाली आहुतियाँ

स्थालीपाक (मीठे चावल, खीर आदि) की तीन आहुतियाँ निम्न मन्त्रों से दें –

ओ३म् अग्नये स्वाहा।

ओ३म् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा।

ओ३म् विष्णवे स्वाहा।।

नीचे लिखी गई चार आहुतियाँ घृत की दें –

(1) ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम

(2) ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम

(3) ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय इदं न मम

(4) ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवायवादित्येभ्यः स्वाहा। इदमग्निवायवादित्येभ्यः इदं न मम

विशेष आहुतियाँ

(1) ओ३म् यत् ते देवा अकृण्वन् भागधेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा। तेन नो यज्ञं पिपृहि विश्वावारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरं स्वाहा। इदम् अमावस्यायै इदन्न मम।। अथर्व. 7.79.1

सरल पाठ

ओ३म् यत् ते देवा अकृण्वन् भाग धेयम अमावस्ये संवसन्तः महित्वा। तेन नः यज्ञं पिपृहि विश्व वारे रयिम् नः धेहि सुभगे सुवीरम् सहा। इदम् अमावस्यायै इदम् न मम।।

सरल भावार्थ

हे अमावस्ये! तेरी महिमा से भली प्रकार एकत्र वास करने वाले भौतिक देव जो अपने-अपने कर्त्तृत्व का भाग पूर्ण करते

हैं। उससे हमारे यज्ञ को पूर्ण कर। हे सबको वरने योग्य उत्तम भाग्यवती देवी! उत्तम रक्षक बल युक्त धन हमें दों। सब देव जो हमारा भाग्य बनाते हैं, वह हमें प्राप्त हों, उससे हमारा यज्ञ पूर्ण होवे। हमें ऐसा सुवीर प्रभावी धन प्राप्त होवे।

(2) ओ३म् अहम् एव अस्मि अमावास्या मामावसन्ति सुकृतो मयीमे। मयि देवा उभये साध्याश्चेन्द्रज्येष्ठाः समगच्छन्त सर्वे स्वाहा।। इदम् अमावस्यायै इदन्न मम।। – अथर्व. 7.79.2

सरल पाठ

ओ३म् अहम् एव अस्मि अमावास्या माम आवसन्ति सुकृतः मयि इमे। मयि देवा उभये साध्याः च इन्द्र ज्येष्ठाः समगच्छन्त सर्वे स्वाहा।। इदम् अमावस्यायै इदम् न मम।।

सरल भावार्थ

मैं ही अमावस्या अर्थात् सहवास करने वाली हूँ। मेरी इच्छा करते हुए मैं पुण्य कर्म जन मेरे आश्रय से रहते हैं। साध्य अर्थात् साधना में लगे और इन्द्र अर्थात् परमात्मा को श्रेष्ठ मानने वाले विद्वान लोग सब दोनों प्रकार के ज्ञान योगी व कर्मयोगी देव, मुझमें आकर मिलते हैं।

(3) ओ३म् आगन् रात्रीसंगमनी वसूनामूर्जं पुष्टंम् वसु आवेशयन्ती। अमावस्यायै हविषा विधेमो ऊर्जम् दुहाना पयसा न आगन् स्वाहा। इदम् अमावस्यायै इदन्न मम।।

– अथर्व. 7.79.3

सरल पाठ

ओ३म् आगन्रात्री संगमनी वसूनाम् ऊर्जम्पुष्टम् वसु आवेशयन्ती। अमावस्यायै हविषा विधेम ऊर्जम् दुहाना पयसा न आगन् स्वाहा। इदम् अमावस्यायै इदम् न मम।।

सरल भावार्थ

सब वस्तुओं को मिलाने वाली, पुष्टिकारक और बलवर्धक, अन्नरस या धन देने वाली रात्रि अर्थात् रमणीय वेला आ गई है। अमावस्या के लिए हम हवन से यजन करें। क्योंकि वह अन्नरस देने वाली, दूध के पुष्टिकारक पदार्थों के साथ हमारे पास आ गई है।

अमावस्या के दिन यथायोग्य औषधियों वनस्पतियों से यज्ञ करने से धन और दुग्ध आदि पदार्थों की प्राप्ति होती है।

(4) ओ३म् अमावास्ये न त्वेदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जजान। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम स्वाहा। इदम् अमावस्यायै इदन्न मम।।

सरल पाठ

ओ३म् अमावास्ये न त्वत् एतानि अन्यः विश्वा रूपाणि परिभूः जजान। यत् कामा ते जुहुमः तत् नः अस्तु वयम् स्याम पतयो रयीणाम स्वाहा। इदम् अमावस्यायै इदम् न मम।।

सरल भावार्थ

हे अमावस्ये! तेरे से भिन्न इन सब रूपों को शक्तिमान होकर कोई बात नहीं बना सकता। जो-जो कामना करते हुए हम तेरा यजन करें, वह-वह कामना हमारी पूर्ण हो और हम सकल धन सम्पत्ति के स्वामी बनें।

पूर्णमासी पर दी जाने वाली आहुतियाँ

(निम्नलिखित तीन आहुतियाँ स्थालीपाक (मीठे चावल, खीर आदि) की दें।

ओ३म् अग्नये स्वाहा।

ओ३म् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा।

ओ३म् विष्णवे स्वाहा।

नीचे लिखी गई चार आहुतियाँ घृत की दें।

(1) ओ३म् भूरग्नये स्वाहा।। इदमग्नये इदं न मम।

(2) ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा।। इदं वायवे-इदं न मम।

(3) ओ३म् स्वारादित्याय स्वाहा।। इदमादित्याय इदं न मम।

(4) ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदं न मम।

विशेष आहुतियाँ

(1) ओ३म् पूर्णा पश्चादुत पूर्णा पुरस्तादुन्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय। तस्यां देवैः संवसन्तो महित्वा नाकस्य पृष्ठे समिषा मदेम। इदम् पूर्णमासाय इदन्न मम। – अथर्व. 7.80.1

सरल पाठ

ओ३म् पूर्णा पश्चात् उत पूर्णा पुरस्तात् उत मध्यतः पौर्णमासी जिगाय।

तस्याम् देवैः संवसन्तः महित्वा नाकस्य पृष्ठे सम् इषा मदेम।

इदम् पूर्णमासाय इदम् न मम।

सरल भावार्थ

पीछे से परिपूर्ण और आगे से भी पूर्ण, बीच में से भी परिपूर्ण

पूर्णिमा प्रगट हुई हैं, उसमें देवों का सहवास करते हुए हम सब महिमा भाव से स्वर्ग के पृष्ठ पर अर्थात् सुख के ऊपर इच्छानुसार आनन्द का उपभोग करें।

सब प्रकार ज्योत्सना से परिपूर्ण चन्द्रमा के होने से पूर्णमासी को पूर्णिमा कहते हैं। इस समय जो लोग देवों की संगति करते हैं, वे अपनी महिमा से सर्वविध सुखों को प्राप्त करते हैं।

(2) ओ३म् वृषभं वाजिनं वयं पौर्णमासं यजामहे। स नो ददात्वक्षितां रयिमनुपदस्वतीम्। इदम् पूर्णमासाय इदन्न मम।। – अथर्व. 7.80.2

सरल पाठ

ओ३म् वृषभं वाजिनं वयम् पौर्णमासम् यजामहे।
स नः ददातु अक्षिताम् रयिम् अनुपदस्वतीम्।
इदम् पूर्णमासाय इदम् न मम।।

सरल भावार्थ

सुखवर्षक अन्नवान् पूर्णमास का हम यजन करते हैं। वह हम सबको अक्षय और अविनाशी धनैश्वर्य भोग देवें।

पौर्णमास बल और अन्न से युक्त होता है। इसलिए उस समय यजन करने वाले को इस पूर्णिमा यज्ञ से अविनाशी ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

(3) ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जजान। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्। इदम् पूर्णमासाय इदन्न मम।।

– अथर्व. 7.80.3

सरल पाठ

ओ३म् प्रजापते न त्वत् एतानि अन्यः विश्वा रूपाणि परिभूः जजान। यत् कामाः ते जुहुमः तत् नः अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्। इदम् पूर्णमासाय इदम् न मम।।

सरल भावार्थ

हे सब प्रजा के पालिके पूर्णिमे! तुझसे भिन्न दूसरा कोई सर्वव्यापक, सर्वसामर्थ्यवान होकर इस समस्त जगत के रूपों को-दृश्यों को बनाने हारा नहीं है। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होकर हम तेरा यजन करें, वह-वह कामना हमारी सिद्ध हो और हम धनैश्वर्य के स्वामी बनें।

यहाँ पूर्णिमा को प्रजापति कहा है। वह परमात्मा ही सर्वजगत का निर्माता और विधाता है। उसके यजन पूजन से हमारी सब प्रकार की शुभकामनाएं पूर्ण होती हैं और सब प्रकार के ऐश्वर्य और सम्पत्ति भी उसी की कृपा से प्राप्त होती है।

(4) **ओ३म् पौर्णमासी प्रथमा यज्ञियासीदह्नां रात्रीणामतिशर्वरेषु। ये त्वां यज्ञैर्यज्ञिये अर्धयन्त्यमी ते नाके सुकृतः प्रविष्टाः। इदम् पूर्णमासाय इदन्न मम।।** - अथर्व. 7.80.4

सरल पाठ

ओ३म् पौर्णमासी प्रथमा यज्ञिया आसीत् अह्नाम् (अह्नाम्) रात्रीणाम अतिशर्वरेषु। ये त्वां यज्ञैः यज्ञिये अर्धयन्ती अमी ते नाके सुकृतः प्रविष्टाः। इदम् पूर्णमासाय इदम् न मम।।

सरल भावार्थ

पूर्णिमा दिनों में तथा रात्रियों के गहन अन्धकार में प्रथम अर्थात् मुख्यतः पूजनीय है। हे वन्दनीय! जो जन तुझे यज्ञ द्वारा पूजते हैं, वे ये सत्कर्मी लोग स्वर्ग की पीठ पर प्रविष्ट होते हैं अर्थात् अभ्युदय और निःश्रेयस को प्राप्त करते हैं।

पूर्णिमा दिन में और रात्रि में पूजने योग्य है। हे पूर्णिमा! तेरे शुभ प्रकाश में हम यजन करते हैं। हमें स्वर्ग धाम में प्रवेश प्राप्त होवे।

समृद्ध हो या विपन्न, ईश्वर से वंचित आत्मायें सूखी, भूखी-अतृप्त ही रहेंगी।

- स्वामी ब्रह्मविदानन्द सरस्वती

नामकरण संस्कार

जिस दिन नाम रखना हो, उस दिन बड़ी प्रसन्नता से इष्ट मित्र हितैषी सज्जनों को बुलाकर यथावत सत्कार कर क्रिया आरम्भ की जाये। ईश्वरोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्ति प्रकरण एवं यज्ञ के बाद सम्पूर्ण विधि से आघराज्य भागाहुति 4 और व्याहृति आहुति 4 से 8 आज्याहुति कुल मिला के 16 घृताहुति करें।

तत्पश्चात् बालक को शुद्ध स्नान करा शुद्ध वस्त्र पहना के उसकी माता कुण्ड के समीप बालक के पिता से पीछे से आके दक्षिण भाग में होकर बालक का मस्तक उत्तर दिशा में रख के बालक के पिता के हाथ में देवे और स्त्री पुनः उसी प्रकार पति के पीछे होकर उत्तर भाग में पूर्वाभिमुख बैठे। तत्पश्चात् पिता उस बालक को उत्तर में शिर और दक्षिण में पग करके अपनी पत्नी को देवे।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा।

प्रथम घी का चमचा भर यह मन्त्र पढ़कर चार विशेष आहुतियाँ दें। 1. जन्म तिथि, 2. तिथि के देवता, 3. जन्म नक्षत्र, 4. नक्षत्र के देवता की।

एक आहुति देकर पीछे जिस तिथि, जिस नक्षत्र में बालक का जन्म हुआ हो उस तिथि और उस नक्षत्र का नाम लेकर उस तिथि और नक्षत्र के देवता के नाम से चार आहुति देवें। जैसे किसी का जन्म प्रतिपदा (एक) और अश्वनी नक्षत्र में हुआ हो तो –

ओ३म् प्रतिपदे स्वाहा। ओ३म् ब्रह्मणे स्वाहा। ओ३म् अश्विन्यै स्वाहा। ओ३म् अश्विभ्यां स्वाहा।

सरल पाठ

ओ३म् प्रतिपदे स्वाहा। ओ३म् ब्रह्मणे स्वाहा।
ओ३म् अश्विन्यै स्वाहा। ओ३म् अश्विभ्यां स्वाहा।

तत्पश्चात् स्विष्टकृत मन्त्र की एक आहुति और चार व्याहृति आहुति दोनों मिल के 5 दें। माता बालक को लेकर आसन पर बैठे और पिता बालक की नासिका द्वार से बाहर निकालते हुए वायु का स्पर्श करके बोले –

ओ३म् कोऽसि कतमोऽसि को नामासि यस्य ते नामामन्महि यं त्वा सोमेनातीतृपाम। ओं भूर्भुवः सुप्रजाः प्रजाभिः स्यासुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः।

सरल पाठ

ओ३म् कः असि कतमः असि कस्य असि कः नाम असि। यस्य ते नाम अमन्महि यं त्वा सोमेन अतीतृपाम। ओ३म् भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्यां सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः।

सरल भावार्थ

हे बालक! तू प्रकाश रूप हो, अतिशत प्रकाशरूप हो, तू परमात्मा का है, तू आत्म नाम वाला है जिस तेरे नाम को हम जानते हैं, जिससे तुझको शान्तिदायक पदार्थों से हम तृप्त कर चुके हैं, अनेक गुण युक्त परमात्मा की कृपा से सन्तानों से मैं सुन्दर सन्तान वाला होऊँ।

कोऽसि कतमोऽसयेषोऽस्यमृतोऽसि। आहस्पत्यं मासं प्रविशाऽसौ।

सरल पाठ

ओ३म् कः असि कतमः असि एषः अस्य अमृतः असि। आहस्पत्यं मासं प्रविशा असौ।

सरल भावार्थ

तू कौन है? कौन सा? मरणाधर्मा है वा अमृतधर्मा? तू आत्म स्वरूप है, अमरण धर्मा है। तू ईश्वर करे कि सूर्य के मास का उपभोग करे। (इसके पीछे बालक का नाम बोलना)

ओ३म् सत्वाह्ने परिददात्वहस्त्वा रात्रयै परिददातु रात्रिस्त्वाहोरात्रौ त्वार्द्धमासेभ्यः परिदत्तामर्द्धमासास्त्वा मासेभ्यः परिददातु मासास्त्वर्तुभ्यः परिददत्त्वृत्वतस्त्वा संवत्सराय परिददातु संवत्सरस्त्वायुशे जरायै परिददातु असौ। (बालक का नाम)

ईश्वर करे कि वह सूर्य तुझे दिन के लिए देवे और दिन तुझे रात्रि के लिए देवें, रात्रि फिर तुझे दिन रात के लिए देवें, दिन रात तुझे पक्षों के लिए देवें, पक्ष तुझे महीने के लिए देवें, महीने तुझे वसन्तादि ऋतुओं को देवें, ऋतुएं तुझे वर्ष के लिए देवें, यह वर्ष तुझे आयु वृद्धि के लिए वृद्धावस्था को देवे।

सब आये हुए लोग प्रसन्नवदन आशीर्वाद दें।

हे बालक! त्वमायुष्मान् वर्च्चस्वी तेजस्वी श्रीमान् भूयाः।

सरल पाठ

हे बालक! त्वम् आयुष्मान् वर्च्चस्वी तेजस्वी श्रीमान् भूयाः।

सरल भावार्थ

हे बालक ! तू आयुष्मान्, विद्यावान् धर्मात्मा, यशस्वी, पुरुषार्थी, प्रतापी, परोपकारी और श्रीमान् हो।

मंगल कामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःखभागभवेत।।
सबका भला करो भगवान्, सब पर दया करो भगवान।
सब पर कृपा करो भगवान, सबका सब विधि हो कल्याण।
हे ईश ! सब सुखी हों कोई न हो दुखारी।
सब हों नीरोग भगवन धनधान्य के भण्डारी।।
सब भद्रभाव देखें सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे सष्टि में प्राणधारी।।

शान्ति पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति-रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।18।। यजु0 36/12

सरल पाठ

द्यौः शांतिर अन्तरिक्षं शांतिः पृथिवी शान्तिर् आपः शान्तिर् ओषधयः शांति। वनस्पतयः शान्तिर् विश्वे देवाः शान्तिर् ब्रह्म शांतिः सर्व शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधि।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

भावार्थ–हे प्रभो! आपकी कृपा से द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक, पृथिवी लोक, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ, यह विशाल विश्व, संसार का सब कुछ, उसका कोना–कोना शांति का ही स्वर आलापे! मुझे सब जगह से शांति ही शांति प्राप्त हो जो निरन्तर बढ़ती ही रहे।

मुण्डन (चूडाकर्म) संस्कार

ओ३म् अदितिः श्मश्रु वपत्वाप उन्दन्तु वर्चसा।
चिकित्सतु प्रजापतिदीर्घायुत्वाय चक्षसे।।

सरल पाठ

ओ३म् अदितिः श्मश्रु वपत्वाप उन्दन्तु वर्चसा।
चिकित्सतु प्रजापतिः दीर्घायु त्वाय चक्षसे।।

सरल भावार्थ

जो खण्डित न हो ऐसा छुरा केशों को काटे अपनी स्वच्छता को लिए हुए जल से बालक का सिर गीला करें। मनुष्यादिकों का रक्षक परमात्मा इस बालक के रोगों की निवृत्ति करे, दीर्घ जीवन के लिए और श्रेष्ठ ज्ञान के लिए।

ओ३म् सविता प्रसूतादैव्या आप उन्दन्तु। ते तनूदीर्घायुत्वाय वर्चसे।

सरल पाठ

ओ३म् सविता प्रसूतादैव्या आप उन्दन्तु। ते तनू दीर्घायुत्वाय वर्चसे।

सरल भावार्थ

हे बालक सूर्य से वा ईश्वर से समुत्पादित स्वच्छ तेरे मस्तक को दीर्घ जीवन के लिए और तेज के लिए आर्द्र करें।

ओ३म् ओषधे त्रायस्वैनं मैनं हिꣳसीः।

सरल पाठ

ओ३म् ओषधे त्रायस्वैनं मैनं हिꣳसीः।

सरल भावार्थ

रोग निवारक, कुश, इस बालक की रक्षा कर। इस बालक को पीड़ा मत पहुँचा।

ओ३म् विष्णोर्दꣳष्ट्रोसि।

सरल पाठ

ओ३म् विष्णु दꣳष्ट्रोसि।

सरल भावार्थ

हे क्षुर! तू प्रवेश करने वाले पदार्थ का ईश्वर का दिया काटने का शस्त्र है।

ओ३म् शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते मा मा हिंसीः।

सरल पाठ

ओ३म् शिवो नामासि स्वधितिः ते पिता नमस्ते मा मा हिंसीः।

सरल भावार्थ

हे क्षुर! तू सुन्दर स्वरूप है। तेरा उत्पादक, वज्रमय कठिन लोहा है। तेरे लिये हम आदर करते हैं अर्थात् संभाल कर प्रयोग करते हैं। ईश्वर करे कि तू मुझे तम पीड़ा दे। अर्थात् उत्तम खान से निकला, सुन्दर लोहे से बना जिससे पीड़ा न पहुँचे ऐसा छुरा लेना चाहिए। वस्तुतः इस मन्त्र का अर्थ है कि हे परमात्मन् आपका नाम कल्याणकारी है आप स्वाधिपति..... अखण्ड और अभेद हैं। आपको बार-बार नमस्कार है। आप इस बालक की आयु को बढ़ावें।

ओ३म् स्वधिते मैन्ꣳहिꣳसीः।

सरल पाठ

ओ३म् स्वधिते मैन्ꣳ हिꣳसीः।

सरल भावार्थ

कठिन लोहमय क्षुर! ईश्वर करे कि तू इस बालक को पीड़ा मत पहुँचावे।

ओ३म् निवर्त्तमानम्यायुषेऽन्नाद्याया प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्व सुवीर्याय।

सरल पाठ

ओ३म् निवर्त्तमानम् आयुषे अन्नाद्याया प्रजननाय रायस् पोषाय सुप्रजाः तु सुवीर्याय।

सरल भावार्थ

हे बालक! जीवन के लिए, अन्न के ठीक खाने के लिए, उत्पादन शक्ति के लिए, धन की पुष्टि के लिए–सुपुत्रता के लिए, अच्छे बल के लिए, मैं तेरा मुंडन करता हूँ।

इस मन्त्र को बोल बालक को आशीर्वाद देके बालक के माता–पिता प्रसन्न होकर बालक को प्रसन्न रखें।

(दक्षिण बाजू के केशों को काटें।)

1. **ओ३म् येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्, तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्य गोमानश्ववान यमस्तु प्रजावान्।।**

दूसरी बार केशों को काटें।

सरल पाठ

ओ३म् येना अवपत् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्, तेन ब्रह्माणो वपत् इदम् अस्य गोमानश्ववान यम अस्तु प्रजावान्।।

2. **ओ३म् येन धाता बृहस्पतेरग्नेरिन्द्रस्य चायुषे अवपत्। तेन त आयुषे वपामि सुश्लोक्याय स्वस्तये।।**

(इस मन्त्र से तीसरी बार केशों को काटें।)

सरल पाठ

ओ३म् येन धाता बृहस्पतिः अग्निः इन्द्रस्य च आयुषे अवपत्। तेन त आयुषे वपामि सुश्लोक्याय स्वस्तये।।

3. **ओ३म् येन भूयश्च रात्रयां ज्योक् च पश्यति सूर्यम्।**
तेन त आयुषे वपामि सुश्लोक्याय स्वस्तये।।

(इस मन्त्र से चौथी बार केशों को काटें।)

सरल पाठ

ओ३म् येन भूयः च रात्रयां ज्योक् च पश्यति सूर्यम्
तेन तं आयुषे वपामि सु श लोक्याय स्वस्तये।।

4. **ओ३म् येन पूषा बृहस्पते वायोरिन्द्रस्य चावपत्।**
तेनते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय् दीर्घायुष्ट्वाय वर्चसे।

सरल पाठ

ओ३म् येन पूषा बृहस्पतेः वायु इन्द्रस्य चावपत्।
तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय् दीर्घायुष्ट्वाय वर्चसे।

आशीर्वाद

ओ३म् त्वम् जीव शरदः शतं वर्धमानः।

सरल पाठ

ओ३म् त्वम् जीव शरदः शतं वर्धमानः।

हे वत्स! तू सौ वर्ष तक फलता फूलता या फलती-फूलती रहे।

जन्मदिवस की आहुतियाँ

ओ३म् आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधि निधेह्यस्मै।
रायस्पोषेण सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम्।।

सरल पाठ

ओ३म् आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधि निधेह्यस्मै।
रायः पोषेण सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदः त एव अयम्।।

सरल भावार्थ

हे सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक प्रभुदेव! आप इस यजमान को चिरञ्जीव रखो। दीर्घायु हो। हर प्रकार से स्वस्थ और सुरक्षित रहे। आप समस्त प्राणियों के शरीर की रचना और पालन पोषण करते हैं। इस बालक के शरीर में उत्पत्ति करने की सामर्थ्य स्थापित कर दो। यह सौ वर्ष तक जीवे और धन-धान्य से समृद्धिशाली बने।

ओ३म् शतं जीव शरदोवर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान्।
शतमिन्द्राग्नि सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः।

सरल पाठ

ओ३म् शतम जीव शरदः वर्धमानः शतम हेमन्तान् शतम् उइति वसन्तान्।
शतम् इन्द्राग्नि सविता बृहस्पतिः शत आयुषा हविषा इमम् पुनः दुः।

सरल भावार्थ

हे जीव! (नाम लेकर) तुम सौ हेमन्त और सौ वसन्त ऋतु तक जीते रहो। अग्निदेव, सविता देव, बृहस्पतिदेव तथा यज्ञ देवता को प्रसन्न करते हुए तुम सौ वर्ष तक जीते रहो।

यजमान की प्रार्थना

ओ३म् इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम् सर्वमायुर्जीव्यासम्।

सरल पाठ

ओ३म् इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासम अहम् सर्वम् आयुः जीव्यासम्।

सरल भावार्थ

हे सकल ऐश्वर्य के स्वामी प्रभु! अपनी छत्रछाया और रक्षा में अग्नि, पृथ्वी, सूर्यादि देवताओं द्वारा मुझे दीर्घायु प्रदान करो। मैं सम्पूर्ण आयु पर्यन्त सुखमय जीवन बिताऊँ।

ओ३म् आयुषायुः कृतां जीवायुष्मान् जीव मा मृथाः।
प्राणेनात्मन्वता जीवमा मृत्योरुद्गवशम्।

सरल पाठ

ओ३म् आयुष आयुः कृताम जीव आयुष्मान् जीव मा मृथाः।
प्राणेन आत्मन्वता जीवमा मृत्युः उद्गवशम्।

सरल भावार्थ

मैं दृढ़ संकल्प करता हूँ कि ईश्वर की कृपा से मैं पुरुषार्थी बनूँगा और सात्विक सत्पुरुषों के संग से, उनके समान सत्कर्म करते हुए, अपनी आयु को दीर्घ बनाने का प्रयत्न करूँगा और मृत्यु के वश में नहीं आऊँगा। दृढ़ संकल्प से अग्रसर होते हुए अपने अनेक जन्मदिन मनाऊँगा और निर्मल यज्ञ और कीर्ति प्राप्त करूँगा।

ओ३म् सत्यामा शिषं कृणुता वयोधै कीरिंचिद्धय् वथ स्वेभिरेवैं
पश्चा मृधो अप भवन्तु, विश्वारुस्तद् रोदसी श्रृणुतं विश्वमिन्वे।

सरल पाठ

ओ३म् सत्यम्अशिषम कृणुता वयोधै, कीरिम् च इद्धय् अथ स्वेभिरेवैं
पश्चा मृधो अप भवन्तु, विश्वा रूस्तद् रोदसी श्रृणुतं विश्वमिन्वे।

सरल भावार्थ

मेरे सम्मान के योग्य विद्वान गुणी जन! आप मेरा पथ प्रदर्शन करें। मुझे उपदेश करें, आशीर्वाद दें, जिससे कि मैं इस संसार की आसुरी वृत्तियों का मुकाबला करते हुए दु:खद विपत्तियों को दूर कर सकूँ। विजयी बनूँ। हे देव भद्र, आदर योग्य सज्जनों! मुझे आशीर्वाद दो।

ओ३म् त्र्यायुषम् जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषम् तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्।

ओ३म् सम् मा सिञ्चतु आदित्याः सम्मा सिञ्चतु अग्नयः।
इन्द्रः समस्मान् सिञ्चतु प्रजया च धनेन च दीर्घमायु कृणोतु मे।

ओ३म् सं मा सिञ्चतु पृथिवी सं मा सिञ्चतु या दिशः।
अन्तरिक्षं समस्मान् सिञ्चतु प्रजया.....।

ओ३म् सं मा सिञ्चतु अरुषः सम मा सिञ्चतु ऋषयश्च।
ये पूषा समस्मान् सिञ्चतु प्रजया .....।
ओ३म् सं मा सिञ्चतु प्रदिशः सं मा सिञ्चतु या दिशः।

आशा समस्मान् सिञ्चतु प्रजया .....।

ओ३म् सं मा सिञ्चतु कृष्टयः सं मा सिञ्चतु ओषधी।
सोमः समस्मान् सिञ्चतु प्रजया .....।

ओ३म् सं मा सिञ्चतु नद्यः सं मा सिञ्चतु सिन्धवः।
समुद्रः समस्मान् सिञ्चतु प्रजया .....।

ओ३म् सं मा सिञ्चतु आपः सं मा सिञ्चतु कृष्टया।
सत्यं समस्मान् सिञ्चतु प्रजया। च धनेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे।

आशीर्वाद

सत्यासन्तु यजमानस्य कामाः।
हे (नाम लेकर) त्वयं शरदः शतं वर्धमानः। आयुष्मान् तेजस्वी, वर्चस्वी, परोपकारी, श्रीमान् भूयाः।

भूमि पूजन के मन्त्र

ओ३म् नमो मात्रे पृथिव्यै– कहकर नारियल या गंगा जल का छींटा लगाकर चारों दिशाओं में ईंटें रखें।

1. **ओ३म् इमामुच्छ्रयामि भुवनस्य नाभि वसोर्द्धाराम् प्रतरणीं।**
इहैव ध्रुवाम् निमिनोमिशालां क्षेत्रे विष्ठतु घृतम् उक्षयमाणा।।

सरल पाठ

ओ३म् इमाम् उच्छ्रयामि भुवनस्य नाभि वसोर्द्धाराम् प्रतरणीं।
इह एव ध्रुवाम् निमिनोमिशालांक्षेत्रे विष्ठतु घृतम् उक्षयमाणा।।

2. **ओ३म् अश्वावती गोमती सुनृतावति उच्छ्रयस्व महते सौभगाय।**
आ त्वा शिशुराक्रन्दत्वा गावोधेनवो वाश्यमाना।।

सरल पाठ

ओ३म् अश्वावती गोमती सुनृतावति उच्छ्रयस्व महते सौभगाय।
आ त्वा शिशुः आक्रान्दत्वा गावो धेनवो वाश्यमाना।।

3. **ओ३म् आ त्वा कुमारस्तरुण आ वत्सो जगदैः सह।**
आ त्वा परिस्रुतः कुम्भे आ दघ्नः कलशैरूप।
क्षेमस्य पत्नी वृहती सुवासा रयिं नो धेहि सुभगे सुवीर्यम्।।

सरल पाठ

ओ३म् आ त्वा कुमारः तरुण आ वत्सो जगदैः सह।
आ त्वा परिस्रुतः कुम्भे आ दघ्नः कलशैरूप।
क्षेमस्य पत्नी वृहती सुवासा रयिं नो धेहि सुभगे सुवीर्यम्।।

4. **ओ३म् अश्वावद गोमदूर्जस्वत पर्णं वनस्पतेरिव अभि**
नः पूर्यताम् रयिरिदमनु श्रेयो वसानः।।

सरल पाठ

ओ३म् अश्वावद गोमत ऊर्जस्वत पर्णं वनस्पते इव
अभि नः पूर्यताम् रयिः इदम् अनु श्रेयः वसानः।।

इसके पश्चात् भूमि पूजन करें-

1. **ओ३म् स्योना पृथिवि नो भवान् ऋक्षरा निवेशनी।**

सरल पाठ

ओ३म् स्योना पृथिवि नो भवान् ऋक्षरा निवेशनी।

2. **ओ३म् दृस्व देवि पृथिवी स्वस्तये।**

सरल पाठ

ओ३म् दृस्व देवि पृथिवी स्वस्तये।

3. **ओ३म् ध्रुवा द्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वम् इमाम् श्रुवाम् कुऊ।।**

सरल पाठ

ओ३म् ध्रुवा द्यौः ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वम् इमाम् श्रुवाम् कुऊ।।

4. **ओ३म् स्योनं श्रुवं प्रजायै धारयामि ते अश्मानम् देव्याः पृथिव्या उपस्थे। तमा तिष्ठानुमाद्या सुवर्चा दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु।।**

सरल पाठ

ओ३म् स्योनं श्रुवं प्रजायै धारयामि ते अश्मानम् देव्याः पृथिव्या उपस्थे। तमा तिष्ठानुम आद्या सुवर्चा दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु।।

सब घर में दही व कुशा व जल छिड़कना

1. **ओ३म् श्रीश्च त्वा यशश्च पूर्वे संधौ गोपायतां**

सरल पाठ

ओ३म् श्रीः च त्वा यशः च पूर्वे संधौ गोपायताम्।

2. **ओ३म् यज्ञश्च त्वा दक्षिणा च दक्षिणे संधौ गोपायताम्**

सरल पाठ

ओ३म् यज्ञः च त्वा दक्षिणा च दक्षिणे संधौ गोपायताम्।

3. ओ३म् अन्नश्च त्वा ब्राह्मणश्च पश्चिमे संधौ गोपायताम्

सरल पाठ

ओ३म् अन्नः च त्वा ब्राह्मणः च पश्चिमे संधौ गोपायताम्।

4. ओ३म् ऊर्क च त्वा सूनृता च उत्तरे संधौ गोपायताम्।

सरल पाठ

ओ३म् ऊर्क च त्वा सूनृता च उत्तरे संधौ गोपायताम्।

भारतीय संस्कृति का अमर सन्देश

असतो मा सद् गमय

हे प्रभो! असत्य से मुझे सत्य की ओर चलने
की शक्ति प्रदान करो।

Lead me from falsehood to Truth.

तमसो मा ज्योतिर्गमय

अन्धकार से प्रकाश की ओर गति करने
की मुझे क्षमता प्रदान करो।

Lead me from darkness to Light

मृत्योर्माऽमृतं गमय

मृत्यु से मुझे जीवन की ओर प्रगति करने की
शक्ति प्रदान करो।

Lead me from death to Immorality.

गृह प्रवेश की आहुतियाँ

सामान्य होम के बाद निम्न प्रकार से आहुतियाँ दें –

ओ३म् अच्युताय भौमाय स्वाहा।।

इससे एक आहुति देकर, ध्वजा का स्तम्भ जिसमें ध्वजा लगाई हो, खड़ा करे और घर के ऊपर चारों कोणों पर चार ध्वजा खड़ी करें तथा कार्यकर्त्ता/गृहपति स्तम्भ खड़ा करके उसके मूल में जल से सेचन करे, जिससे वह दृढ़ रहे।

पुनः द्वार के सामने बाहर जाकर नीचे लिखे चार मन्त्रों से जलसेचन करे –

ओ३म् इमामुच्छ्रयामि भुवनस्य नाभिं वसोर्द्धारां प्रतरणीं वसूनाम्।
इहैव ध्रुवां निमिनोमि शालां क्षेमे तिष्ठतु घृतमुच्छ्रयमाणा।।1।।

इस मन्त्र से पूर्व द्वार के सामने जल छिड़कावें।

अश्वावती गोमती सूनृतावत्युच्छ्रयस्व महते सौभगाय।
आ त्वा शिशुराक्रन्दत्वा गावो धेनवो वाश्यमाना।।2।।

इस मन्त्र से दक्षिण द्वार के सामने जल छिड़कावें।

आ त्वा कुमारस्तरुण आ वत्सो जगदैः सह।
आ त्वा परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरुप।
क्षेमस्य पत्नी बृहती सुवासा रयिं नो धेहि सुभगे सुवीर्यम्।।3।।

इस मन्त्र से पश्चिम द्वार के सामने जल छिड़कावें।

अश्वावद् गोमदूर्जस्वत् पर्णं वनस्पतेरिव।
अभि नः पूर्यताꣳरयिरिदमनुश्रेयो वसानः।।4।।

इस मन्त्र से उत्तर द्वार के सामने जल छिटकावें।

तत्पश्चात् सब द्वारों पर पुष्प और पल्लव तथा कदली–स्तम्भ वा

कदली के पत्ते भी द्वारों की शोभा के लिए लगाकर, पश्चात् गृहपति–
हे ब्रह्मन्! प्रविशामीति। ऐसा वाक्य बोले। और ब्रह्मा–
वरं भवान् प्रविशतु।।
ऐसा प्रत्युत्तर देवे। और ब्रह्मा की अनुमति से –
ओ३म् ऋचं प्रपद्ये शिवं प्रपद्ये।।
इस वाक्य को बोल के भीतर प्रवेश करे और जो घृत गरम कर, छान, सुगन्ध मिलाकर रक्खा हो, उसे पात्र में लेके जिस द्वार से प्रथम प्रवेश करे, उसी द्वार से प्रवेश करके अग्न्याधान, समिदाधान, जलप्रोक्षण, आचमन करके घृत की आघारावाज्य–भागाहुति चार और व्याहृति आहुति चार, नवमी स्विष्टकृत आज्याहुति एक, अर्थात् दिशाओं की द्वारस्थ वेदियों में अग्न्याधान से लेके आहुतिपर्यन्त विधि करके, पश्चात् पूर्वदिशा द्वारस्थ कुण्ड में –
ओ३म् प्राच्या दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा।
ओ३म् देवेभ्य स्वाह्येभ्यः स्वाहा।।
इन दो मन्त्रों से पूर्व द्वारस्थ वेदी में दो घृताहुति देवे। वैसे ही–
ओ३म् दक्षिणाया दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा।
ओ३म् देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः स्वाहा।।
इन दो मन्त्रों से दक्षिण द्वारस्थ वेदी में एक–एक मन्त्र करके दो आज्याहुति और –
ओ३म् प्रतीच्यां दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा।
ओ३म् देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः स्वाहा।।
इन दो मन्त्रों से दो आज्याहुति पश्चिम दिशा द्वारस्थ कुण्ड में देवें।
ओ३म् उदीच्यां दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा।

ओ३म् देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः स्वाहा।।

इनसे उत्तर दिशास्थ वेदी में दो आज्याहुति देवे। पुनः मध्यशालास्थ वेदी के समीप जाके स्व-स्व दिशा में बैठ के-

ओ३म् ध्रुवायां दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा।

ओ३म् देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः स्वाहा।।

इनसे मध्य वेदी में दो आज्याहुति।

ओ३म् ऊर्ध्वायां दिशः शालायां नमो महिम्ने स्वाहा।

ओ३म् देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः स्वाहा।।

इनसे भी दो आहुति मध्यवेदी में। और -

ओ३म् दिशोदिशः शालायां नमो महिम्ने स्वाहा।

ओ३म् देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः स्वाहा।।

इनसे भी दो आज्याहुति मध्यस्थ वेदी में देके, पुनः पूर्व दिशास्थ द्वारस्थ वेदी में अग्नि को प्रज्जवलित करके वेदी के दक्षिण भाग में ब्रह्मासन तथा होता आदि के आसन पूर्वोक्त प्रकार बिछवा, उसी वेदी के उत्तर भाग में एक कलश स्थापन कर स्थालीपाक बनाके, प्रथम निष्क्रम्यद्वार के समीप जा, ठहर कर ब्रह्मादि सहित गृहपति मध्यशाला में प्रवेश करके ब्रह्मादि को दक्षिणादि आसन पर बैठा, स्वयं पूर्वाभिमुख करके संस्कृत घी, अर्थात् जो गरम कर, छान, जिसमें कस्तूरी आदि सुगन्ध मिलाया हो, पात्र में लेके सबके सामने एक-एक पात्र भरके रक्खें और चमचा में लेके -

ओ३म् वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा।1।।

वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो।

अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रति नो जुषस्व स्वाहा।।2।।
वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या।
पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा।।3।।

– ऋ0 म0 7। सू0 54।।

अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन्।
सखा सुशेव एधि नः स्वाहा।।4।।

– ऋ0 म0 7 । सू0 55। मं0 1।।

इन चार मन्त्रों से चार आज्याहुति देके, जो स्थालीपाक, अर्थात् भात बनाया हो, उसे दूसरे कांसे के पात्र में लेके, उस पर यथायोग्य घृत सेचन करके अपने-अपने सामने रक्खें और पृथक्-पृथक् थोड़ा-थोड़ा लेकर –

ओ३म् अग्निमिन्द्रं बृहस्पतिं विश्वाँश्च देवानुपह्वये।
सरस्वतीञ्च वाजीञ्च वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा।।1।।

सर्पदेवजनान्त्सर्वान् हिमवन्तँ सुदर्शनम्।
वसूँश्च रुद्रानादित्यानीशानं जगदैः सह।
एतान्त्सर्वान प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वार्जिनिः स्वाहा।।2।।

पूर्वाह्णम्पराह्णं चोभौ मध्यन्दिना सह।
प्रदोषमर्धरात्रं च व्युष्टां देवीं महापथाम्।
एतान्त्सर्वान् प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा।।3।।

ओ३म् कर्तारञ्च विकर्तारं विश्वकर्माणमोषधींश्च वनस्पतिन्।
एतान्त्सर्वान् प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा।।4।।

धातारं च विधातारं निधीनां च पतिँ् सह।
एतान्त्सर्वान् प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा।।5।।

स्योनँ् शिवमिदं वास्तु दत्तं ब्रह्मप्रजापती।
सर्वाश्च देवताश्च स्वाहा।।6।।

स्थालीपाक, अर्थात् घृतयुक्त भात की इन छह मन्त्रों से छह आहुति देकर कांस्यपात्र में उदुम्बर–गूलर और पलाश के पत्ते, शाड्वल–तृणविशेष, गोमय, दही, मधु, घृत, कुशा और यव को लेके उन सब वस्तुओं को मिलाकर –

ओ३म् श्रीश्च त्वा यशश्च पूर्वे सन्धौ गोपायेताम्।

इस मन्त्र से पूर्व द्वार।

यज्ञश्च त्वा दक्षिणा च दक्षिणे सन्धौ गोपायेताम्।।

इससे दक्षिण द्वार।

अन्नञ्च त्वा ब्राह्मणश्च पश्चिमे सन्धौ गोपायेताम्।।

इससे उत्तर द्वार के समीप उनको बखेरे और जलप्रोक्षण भी करे।

केता च मा सुकेता च पुरस्ताद् गोपायेतामित्यग्निर्वै केताऽऽदित्यः सुकेता तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु तौ मा पुरस्ताद् गोपायेताम्।।1।।

इससे पूर्व दिशा में परमात्मा का उपस्थान करके दक्षिण द्वार के सामने दक्षिणाभिमुख होके–

दक्षिणतो गोपायमानं च मा रक्षमाणा च दक्षिणतो गोपायेतामित्यहर्वै गोपायमान ꣳ रात्री रक्षमाणा ते प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु ते मा दक्षिणतो गोपायेताम्।।2।।

इस प्रकार जगदीश का उपस्थान करके पश्चिम द्वार के सामने पश्चिमाभिमुख होके–

दीदिविश्च मा जागृविश्च पश्चाद् गोपायेतामित्यन्नं वै दीदिविः प्राणो जागृविस्तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु तौ मा पश्चाद् गोपायेताम्।।3।।

इस प्रकार पश्चिम दिशा में सर्वरक्षक परमात्मा का उपस्थान करके उत्तर दिशा में उत्तर द्वार के सामने उत्तराभिमुख खड़े रहके–

अस्वप्रश्च माऽनवद्राणश्चोत्तरतो गोपायेतामिति चन्द्रमा वा अस्वप्रो वायुरनवद्राणस्तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु तो मोत्तरतो गोपायेताम्।।4।।

धर्मस्थूणाराज श्रीसूर्यामहोरात्रे द्वारफलके। इन्द्रस्य गृहा वसुमन्तो वरुथिनस्तानहं प्रपद्ये सह प्रजया पशुभिस्सह। यन्मे किञ्चिदस्त्युपहूतः सर्वगणः सखा यः साधुसंमतस्तां त्वा शाले अरिष्टवीरा गृहा नः सन्तु सर्वतः।।5।।

इस प्रकार उत्तर दिशा में सर्वाधिष्ठाता परमात्मा का उपस्थान करके सुपात्र, वेदवित्, धार्मिक होता आदि सपत्नीक ब्राह्मण तथा इष्ट–मित्र और सम्बन्धियों को उत्तम भोजन कराके, यथायोग्य सत्कार करके दक्षिणा दे, पुरुषों को पुरुष और स्त्रियों को स्त्री प्रसन्नतापूर्वक विदा करें और वे जाते समय गृहपति और गृहपत्नी आदि को –

'सर्वे भवन्तोऽत्राऽऽनन्दिताः सदा भूयासुः।।'

इस प्रकार आशीर्वाद देके अपने–अपने घर को जावें।

व्यापार कार्य आरम्भ की आहुतियाँ

प्रार्थना मन्त्र, स्वस्ति वाचन, शान्ति प्रकरण के पश्चात् हवन यज्ञ करके यह विशेष आहुतियाँ दें –

1. **ओ३म् नाभिरहं रयीणां नाभिः समानानाम् भूयासम्।**

सरल पाठ

ओ३म् नाभिः अहं रयीणां नाभिः समानानाम् भूयासम्।

सरल भावार्थ

मैं धनों का केन्द्र अर्थात् विधि और समान स्थिति वालों सखाजनों में प्रमुख हो जाऊँ।

2. **ओ३म् मूर्धा अहं रयीणाम् मूर्धा समानानाम् भूयासम्।**

सरल पाठ

ओ३म् मूर्धा अहं रयीणाम् मूर्धा समानानाम् भूयासम्।

सरल भावार्थ

मैं धनियों का सिर मौर और समान गुण, कर्म, स्वभाव वाले जनों में शिरोमणि बन जाऊँ।

3. **ओ३म् उद्यानं ते पुरुष नावयानम्।**

सरल पाठ

ओ३म् उद्यानं ते पुरुष नावयानम्।

सरल भावार्थ

हे पुरुष! सदा तेरी उन्नति होवे, व्यापार में वृद्धि होवे और कभी अवनति न होवे।

4. **ओ३म् इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न ऐतु पुरएतानों अस्तु।**
नुदन्नरातिं परिपन्थिनं मृगं स ईशानां धनदा अस्तु मह्यम्।

सरल पाठ

ओ३म् इन्द्रम् अहं वणिजं च ऊदयामि स न ऐतु पुरएतानों अस्तु।
नु उदम् नरातिं परिपन्थिनं मृगं स ईशानां धनदा अस्तु मह्यम्।

सरल भावार्थ

हे समग्र ऐश्वर्य युक्त परमात्मन्! मैं इस व्यापार व्यवसाय में आपकी कृपा और आशीर्वाद चाहता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरा मार्गदर्शन करने वाला बना करे। विघ्न बाधाओं को दूर कर दो। लुटेरे, ठग, डाकू आदि न सताएं। मेरी शुभ कमाई हो। दिन प्रतिदिन अधिक हो।

5. **ओ३म् इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे पोषं।**
रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वादमानं, वाचः सुदिनत्वमह्नाम्।

सरल पाठ

ओ३म् इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिम् दक्षस्य सुभगत्वम् अस्मे पोषं रयीणाम्अरिष्टिम्तनूनाम्स्वादमानम, वाचः सुदिनत्वम्अह्नाम्।

सरल भावार्थ

हे समग्र ऐश्वर्य के स्वामी परमात्मन्! हमें सात्विक और श्रेष्ठ धन प्राप्त कीजिये। हम पुरुषार्थी और तपस्वी जीवन बिताएं, आपकी कृपा से हम लाभदायक व्यापार करें। हमें उत्तम ऐश्वर्य प्राप्त हों और हमारे समस्त दिन सुखद हों। यजमान से निम्न मंत्र बुलवायें –

6. **ओ३म् येन धनेन प्रपणं चरामि, धनेन देवा धनम् इच्छमानः।**
तनमे भूयो भवतु मा कनीयो अग्ने सातघ्नो देवान् हविषा निषेध स्वाहा।

सरल पाठ

ओ३म् येन धनेन प्रपणं चरामि, धनेन देवा धनम् इच्छमानः।
तनमे भूयो भवतु मा कनीयो अग्ने सातघ्नो देवान् हविषा निषेध स्वाहा।

7. ओ३म् येन धनेन प्रपणं चरामि, धनेन देवा धनम् इच्छमानः।
तस्मिन्म इन्द्रो रुचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः स्वाहा।

सरल पाठ

ओ३म् येन धनेन प्रपणं चरामि, धनेन देवा धनम् इच्छमानः।
तस्मिन्म इन्द्रो रुचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः स्वाहा।

8. ओ३म् प्र पतेतः पापि लक्ष्मिः नश्येतः प्रामुतः पत।
अयस्मयेन अंकेन द्विषते त्वा सजामसि स्वाहा। इदं लक्ष्म्यै इदं न मम।

सरल पाठ

ओ३म् प्र पतेतः पापि लक्ष्मिः नश्येतः प्रामुतः पत। अयस्मयेन अंकेन द्विषते त्वा सजामसि स्वाहा। इदं लक्ष्म्यै इदं न मम।

9. ओ३म् या मा लक्ष्मीः पतयालूर जुष्टाभि चस्कन्दन वन्दनेव वृक्षम्। अन्यत्र अस्मत् सवित स्तामितो धा हिरण्य हस्तो वसु नो रराणः स्वाहा। इदं लक्ष्म्यै इदं न मम।

सरल पाठ

ओ३म् या मा लक्ष्मीः पतयालूर जुष्टाभि चस्कन्दन वन्दन एव वृक्षम्।
ओ३म् अन्यत्र अस्मत् सवित स्ताम् इतः धा हिरण्य हस्तो वसु नो रराणः स्वाहा। इदं लक्ष्म्यै इदं न मम।

10. **ओ३म् एकशतं लक्ष्म्ये मत्यस्य साकं तन्वा जनुषो अधिः जाताः। तासां पापिष्ठाः निरितः प्र हिण्यः शिवा अस्मभ्यम् जातवेदो नि यच्छ स्वाहा। इदं लक्ष्म्यै इदं न मम।**

सरल पाठ

ओ३म् एकशतं लक्ष्म्ये मत्यस्य साकं तन्वा जनुषो अधिः जाताः।
तासां पापिष्ठाः निरितः प्र हिण्यः शिवा अस्मभ्यम् जातवेदो नि यच्छ स्वाहा। इदं लक्ष्म्यै इदं न मम।

11. **ओ३म् एता एना व्याकरं खिले या विष्ठिता इव रमन्ताम् पुण्या लक्ष्मर्याः पापीस्ता अनीनशं स्वाहा। इदं लक्ष्म्यै इदं न मम।**
12. **ओ३म् यन्मेः किञ्चदुपेप्सितमस्मिन् कर्माणि वृत्रहन। तन्मे समृध्यतां सर्वं जीवितः शरदः शतं स्वाहा।**
13. **ओ३म् सम्पत्तिः भूमिः वृष्टि र्ज्यैष्ठयम् श्रेष्ठयं श्री प्रजाम् इहावतु स्वाहा।**
14. **ओ३म् वसुमत् हिरण्यवत् वयं स्याम् भुवनेषु जीवसे।**

सरल भावार्थ

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन् इस यजमान के लिए चातुर्य की बुद्धि, सौभाग्य की वृद्धि, धनों की वृद्धि, उत्तम आरोग्य शरीर, मधुर वाणी और अच्छे दिन आपकी कृपा से प्राप्त हों। हे दरिद्रता के नाश करने हारे परमेश्वर! इस वाणिज्य कर्म में जो भी यजमान की इच्छित कामनाएं हैं, वह सब पूर्ण करना। सदा यजमान का कल्याण हो। धन दौलत की वृष्टि हो, घर में लक्ष्मी और प्रजा प्राप्त हो, अर्थात् यजमान सदा फले-फूले।

नवसंवत्सरारम्भ पर्व पर दी जाने वाली आहुतियाँ

गृह्यकृत्य–प्रातः पर्वपद्धति में प्रदर्शित सामान्य विधानानुसार गृह के परिमार्जन, शोधन, लेपनादि के पश्चात् नवीन शुद्ध स्वदेशीय वस्त्र परिधानपूर्वक, सपरिवार सामान्य होम करके निम्नलिखित संवत्सर वर्णनपरक मन्त्रों से विशेष अधिक आहुतियाँ दी जाएँ –

संवत्सरोऽयि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि। उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्ताꣳसंवत्सरस्ते कल्पतां प्रेत्या एत्यै सञ्चाञ्च प्र च सारय। सुपर्णचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवः सीद।।1।। – यजुर्वेद 27/45

यमाय यमसूमथर्वभ्योऽवतोकाꣳसंवत्सराय पर्य्यायिणीं परिवत्सरायाविजातामिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्क-द्वरीं वत्सराय विजर्जराꣳसंवत्सराय पलिक्नीमृभुभ्यो-ऽजिनसन्धरꣳ साध्येभ्यश्चर्मम्नम्।।2।। – यजुर्वेद 30/15

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तस्मिन्त्साकं त्रिंशता न शङ्कवोऽर्पिता षष्टिर्न चलाचलासः।।3।। – ऋ0 1/164/48

सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा।
त्रिनामा चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनाधितस्थुः।।4।।
– ऋ0 1/164/2

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्त्ति चक्रं परि द्यामृतस्य।
आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थु।।5।।

पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम्।
अथेमे अन्य उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे षळर आहुतर्पितम्।।6।।

पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने तस्मिन्नातस्थुर्भुवनानि विश्वा।
तस्य नाक्षस्तप्यत भूरिभारः सनादेव न शीर्यते सनाभिः।।7।।

सनेमि चक्रमजरं विवावृत उत्तानायां दश युक्ता वहन्ति।
सूर्यस्य चक्षु रजसैत्यावृतं तस्मिन्नार्पिता भुवनानि विश्वा।।8।।

–ऋ0 1/164/11, 12, 13, 14

संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा रात्र्युपास्महे।
सा न आयुष्मती प्रजां रायस्पोषेण संसृज।।9।।

– अथर्व0 – 3/10/1

यस्मान्मासा निर्मितास्त्रिंशदराः संवत्सरो यस्मान्निर्मितो द्वाद्वशारः।
अहोरात्रा ये परियन्तो नापुस्तेनौदनेनातितराणि मृत्युम्।।10

– अथर्व0 – 4/35/4

श्रावणी उपाकर्म पर दी जाने वाली आहुतियाँ

प्रथम अग्निस्थापनादि करके, आघार और आज्यभागाहुतियों को देकर –

(1) ब्रह्मणे स्वाहा। (2) छन्दोभ्यः स्वाहा।।

ये दो आहुतियाँ देकर, घी की निम्नलिखित दश आहुति दें –

(1) सावित्र्यै स्वाहा। (2) ब्रह्मणे स्वाहा। (3) श्रद्धायै स्वाहा। (4) मेधायै स्वाहा। (5) प्रजायै स्वाहा। (6) धारणायै स्वाहा। (7) सदसस्पतये स्वाहा। (8) अनुमतये स्वाहा। (9) छन्दोभ्यः स्वाहा। (10) ऋषिभ्यः स्वाहा।

तदनन्तद ऋग्वेद की निम्नलिखित 11 ऋचाओं से आहुति दें –

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रे यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः।
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत् प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः।।

– ऋ0 – 10/71/1

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि।।

– ऋ0 – 10/71/2

यज्ञेन वाचः पदवीयमायन्तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम्।
तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्त रेभा अभि सं नवन्ते।।

– ऋ0 – 10/71/3

उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम्।
उतो त्वस्मै तन्वं वि सस्त्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः।।

– ऋ0 – 10/71/4

उत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुर्नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु।
अधेन्वा चरति मायया एष वाचं शुश्रुवाँ अफलामपुष्पाम्।।

– ऋ0 – 10/71/5

यस्तित्याज सचिविदं सखायं नै तस्य वाच्यपि भागो अस्ति।
यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्।।

– ऋ0 – 10/71/6

अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवुः।
आदघ्नास उपकक्षास उ त्वे हृदाइव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे।।

– ऋ0 – 10/71/7

हृदा तष्टेषु मनसो जवेषु यद् ब्राह्मणाः संयजन्ते सखायः।
अत्राह त्वं वि जहुर्वेद्याभिरोह ब्रह्माणो वि चरन्त्यु वे।।

– ऋ0 – 10/71/8

इमे ये नार्वाङ् न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः।
त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञयः।।

– ऋ0 – 10/71/9

सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखायः।
किल्बिषस्पृत् पितुषणिर्ह्वेषामरं हितो भवति वाजिनाय।।

– ऋ0 – 10/71/10

ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान् गात्रयं त्वो गायति शक्वरीषु।
ब्रह्मा त्वो वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां विमिमीत उ त्वः।।

– ऋ0 – 10/71/11

इसके पश्चात् यजुर्वेद के इस मन्त्र से आहुति दें–

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
सनिं मेधामयासिषं स्वाहा।।

– यजुः 0 32/13

यजमान वा गृहपति हवन करें, किन्तु मन्त्र सब बोलें। इसके पश्चात् **सब उपस्थित पारिवारिक जन पलाश की तीन–तीन**

हरी वा शुष्क समिधाओं को घी में भिगोकर सावित्री मन्त्र से आहुति दें। इस प्रकार तीन बार करें। पुनः **स्विष्टकृत आहुति** देकर प्रातराश किया जाए।

'शन्नो मित्रः' इस मन्त्र को पढ़कर उसके पश्चात् मुख धोकर, आचमन करके अपने-अपने आसनों पर बैठकर, **जलपात्रों में कुशाओं को रखकर, हाथ जोड़कर पुरोहित के साथ तीन-तीन बार ओंकार व्याहृतिपूर्वक सावित्री पढकर** वेदों के निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें -

ऋग्वेद

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।।
होतारं रत्नधातमम्।। - ऋ0 - 1/1/1

समानी वा आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

- ऋ0 10/191/4

यजुर्वेद

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानसस्य पशून् पाहि।।

- यजुः0 1/1

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्।। ओं खं ब्रह्म।।

यजुः0 40/17

सामवेद

अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि।। – साम0 1

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः।
सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्म वि शत्रून्ताढि वि मृधो नुदस्व।।
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

– साम0 1873–75

अथर्ववेद

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।।

– अथर्व0 1/1/1

पनाय्यं तदश्विना कृतं वा वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः।
सहस्त्रं शंसा ऊतये गविष्टौ सर्वौं इत्ताँ उपयाता पिबध्यै।।

– अथर्व0 20/143/9

पश्चात् यह मन्त्र[2] पढ़ें –

सह नोऽवतु सह न इदं वीर्यवदस्तु।
ब्रह्मा इन्द्रस्तद्वेद्व येन यथा न विद्विषामहे।।

दीपावली पर्व पर दी जाने वाली आहुतियाँ

सामान्य होम (अग्निहोत्र) करके निम्नलिखित मन्त्रों से स्थालीपाक (खीर) से 38 विशेष आहुतियाँ दी जाएँ।

हवन के अन्य साकल्य (सामग्री) में लाजा (नवीन धानों की खील) विशेषत: मिलाई जाएँ।

(1) ओ३म् परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा न: प्रजां रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा।।

(2) मृत्यो: पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयु: प्रतरं दधाना:।
आप्यायमाना: प्रजया धनेन शुद्धा: पूता भवत यज्ञियास: स्वाहा।।

(3) इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूद् भद्रा देवहूतिर्नो अद्य।
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयु प्रतरं दधाना: स्वाहा।।

(4) इमं जीवेभ्य: परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्।
शतं जीवन्तु शरद: पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन स्वाहा।।

(5) यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथा ऋतव ऋतुभिर्यन्ति साधु।
यथा न: पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूँषि कल्पयैषाम् स्वाहा।।

ऋ0 - 10/18/15

(6) ओ३म् आयुष्मतामायुष्कृतां प्राणेन जीव मा मृधा:।
व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा स्वाहा।।

(7) ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्य: स्वराभरत् स्वाहा।।

- अथर्व0 11/5/19

(8) ओ३म् शतायुधाय शतवीर्याय शतोतयेऽभिमातिषाहे।
शतं यो न: शरदो अजीयादिन्द्रो नेषदति दुरितानि विश्वा स्वाहा।।

(9) ये चत्वारः पयमो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी वियन्ति।
तेषां योआज्यानिमजीतिमावह्यात्तस्मै नो देवाः परिदत्तेह सर्वं स्वाहा।।

(10) ग्रीष्मो हेमन्त उत नो वसन्तः शरद्वर्षाः सुवितन्नो अस्तु।
तेषामृतूनाꣳ शतशारदानां निवात एषामभये स्याम स्वाहा।।

(11) इद्वत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः।
तेषां वयꣳ सुमतौ यज्ञियानां ज्योग जीता अहताः स्याम स्वाहा।।

– गोभिलीयगृह्यसूत्र, प्रपाठक, खण्ड 7/सूत्र 10–11

(12) ओ३म् पृथिवी द्यौः प्रदिशो दिशो यस्मै द्युभिरावृताः।
तमिहेन्द्रमुपह्वये शिवा नः सन्तु हेतयः स्वाहा।।

(13) ओ३म् यन्मे किञ्चिदुपेप्सितमस्मिन् कर्मणि वृत्रहन्।
तन्मे सर्वं समृध्यतां जीवतः शरदः शतं स्वाहा।।

(14) ओ३म् सम्पत्तिर्भूमिर्वृष्टिर्ज्यैष्ठ्यꣳ श्रेष्ठयꣳ श्रीः प्रजामिहावतु स्वाहा।। इदमिन्द्राय-इदन्न मम।।

(15) ओ३म् यस्याभावे वैदिकलौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम्। इन्द्रपत्नीमुपह्वये सीताꣳ सा मे त्वनपायिनी भूयात् कर्मणि स्वाहा।। इदमिन्द्रपत्न्यै-इदन्न मम।।

(16) ओ३म् अश्वावती गोमती सूनृतावती बिभर्ति या प्राणभृतामतन्द्रिता। खलमालिनीमुर्वरामस्मिन् कर्मण्युपह्वये ध्रुवाꣳ सा मे त्वनपायिनी भूयात् स्वाहा।। इदं सीतायै-इदन्न मम।।

(17) ओ३म् सीतायै स्वाहा।

(18) ओ३म् प्रजायै स्वाहा।

(19) ओ३म् शमायै स्वाहा।

(20) ओ३म् भूत्यै स्वाहा।

– पार0 का0 2/क0 17/मन्त्र 7, 9, 10।।

(21) ओ३म् व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्तां स्वाहा। – यजु:0 18/12

(22)ओ३म् वाजो नः सप्त प्रदिशश्चस्त्रो वा परावतः।
वाजो नो विश्वैर्देवैर्धनसाताविहावतु स्वाहा।।

(23)ओ३म् वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाँ २ ऋतुभिः कल्पयाति। वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयं स्वाहा।।

(24)ओ३म् वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा वर्धयाति। वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयं स्वाहा।। – यजुर्वेद 18/32-35

(25)ओ३म् सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक्। धीरा देवेषु सुमन्यौ स्वाहा।।

(26)युनक्त सीरा वियुगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम्। विराजः श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पक्वमा यवन् स्वाहा।।

(27)लाङ्गलं पवीरवत् सुशीमं सोमसत्सरु। उदिद्वपतु गामविं प्रस्थावद्रथवाहनं पीवरीं च प्रफर्व्यम् स्वाहा।।

(28)इन्द्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषाभिरक्षतु।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् स्वाहा।।

(29)शुनं सुफाला वि तुदन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अनु यन्तु वाहान्।
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्तमस्मै स्वाहा।।

(30)शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम्।
शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय स्वाहा।।

(31)शुनासीरेह स्म मे जुषेथाम्।

यद्दिवि चक्रथुः पयस्तेनेमामुपसिञ्चतम् स्वाहा।।

(32)सीते वन्दामहे त्वार्वाची सुभगे भव।

यथा नः सुमना असो यथा नः सुफला भुवः स्वाहा।।

(33)घृतेन सीता मधुना समक्ता विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः।

सा नः सीतेः पयसाभ्याववृत्स्वोर्जस्वती घृतवत्पिन्वमाना स्वाह।।

– अथर्व0 3/17–1–9

(34)इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा।। इदमिन्द्राग्निभ्यां–इदन्न मम।

(35)विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।।

इदं विश्वेभ्यो देवेभ्य–इदन्न मम।

(36)द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा।।

इदं द्यावापृथिवीभ्याम्–इदन्न मम।

(37)स्विष्टमग्ने अभि तत्पृणीहि विश्वाँश्च देवः पृतना अभिष्यक्।

सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिषमध्ये ह्यजरं न आयुः स्वाहा।।

(38)यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्।

अग्निष्टात्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।। इदमग्नये स्विष्टकृते–इदन्न मम। – पार0 – 1/2/10

पूर्णाहुति के पश्चात् खीलों और मिष्ठान्न के (बताशे आदि) हुतशेष को यज्ञमण्डप में उपस्थित जनों में वितरण करके भक्षण किया जाए (खाया जाये)।

मकर संक्रान्ति पर्व की आहुतियाँ

मकर संक्रान्ति के दिन सपरिवार सामान्य हवन करें। इसके बाद निम्नलिखित मन्त्रों से विशेष आहुतियाँ दी जाएँ।

ओ३म् सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू।
अग्नेरन्तः श्लेषोऽसि स्वाहा।
कल्पेतां द्यावापृथिवी स्वाहा।
कल्पन्तामाप ओषधयः स्वाहा।
कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः स्वाहा।।
ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे। हैमिन्तकावृतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभि संविशन्तु तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतं स्वाहा।। – यजु:0 14/27

ओ३म् तपश्च तपश्यश्च शैशिरावृतू, अग्नेरन्तः श्लेषोऽसि स्वाहा।।
कल्पेतां द्यावापृथिवी स्वाहा।
कल्पन्तामाप ओषधयः स्वाहा।
कल्पन्तामग्नयः पृथङ् सम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः स्वाहा।।
ओ३म् ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे। शैशिरावृतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देव अभिसंविशन्तु तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतं स्वाहा।। – यजु0 15/57

तत्पश्चात् तिल के लड्डू (तिलवे) होम-यज्ञ में समागत पुरुषों को हुतशेष के रूप में समर्पण किये जाएँ और स्ववित्तानुसार कम्बल आदि दीन-दु:खियों को दान किए जाएँ।

वसन्त पञ्चमी पर्व की आहुतियाँ

सपरिवार सामान्य होम करके वसन्त वर्णनात्मक निम्नलिखित मन्त्रों से केशरमिश्रित (वा उसके अभाव में हरिद्रा मिश्रित) हलवे के स्थालीपाक से पाँच आहुतियाँ दी जाएँ।

(1) वसन्तेन ऋतुना देव वसवस्त्रिवृता स्तुताः।
रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः।।

– यजुः0 21.23

(2) मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू अग्नेरन्तः श्लेषोऽसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम जयेष्ठ्याय सव्रताः। ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे वासन्तिकावृतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभि-संविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतं स्वाहा।

– यजुः0 13/25

(3) मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः स्वाहा।।

(4) मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता स्वाहा।।

(5) मधुमान् नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ऽअस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः स्वाहा।। – यजुर्वेद 13/27-29

होली पर्व की आहुतियाँ

सामान्य होम करके नवशस्येष्टि के निम्नलिखित मन्त्रों से स्थालीपाक की 31 विशेष आहुतियाँ दें।

विशेष आहुतियों के मन्त्र ये हैं -

(1) ओ३म् शतायुधाय शतवीर्याय शतोतयेऽभिमातिषाहे। शतं यो नः शरदो अजीयादिन्द्रो नेषदति दुरितानि विश्वा स्वाहा।।

(2) ये चत्वारः पथयो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी वियन्ति। तेषां यो अज्यानिमजीतिमावहात्तस्मै नो देवाः परिदत्तेह सर्वे स्वाहा।।

(3) ग्रीष्मो हेमन्त उत नो वसन्तः शरद्वर्षाः सुवितन्नो अस्तु। तेषामृतूनाꣳ शतशारदानां निवात एषामभये स्याम स्वाहा।।

(4) इद्वत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः। तेषा वयꣳ सुमतौ यज्ञियानां ज्योगजीवा अहताः स्याम स्वाहा।।

- गोभिलीयगृह्यसूत्र प्रपाठक 3। खण्ड 7, सूत्र 10, 11, मं. ब्रा0 2.1.9-12

(5) ओ३म् पृथिवी द्यौः प्रदिशो दिशो यस्मै द्युभिरावृताः। तमिहेन्द्रमुपह्वये शिवा नः सन्तु हेतयः स्वाहा।।

(6) ओ३म् यन्मे किञ्चिदुपेप्सितमस्मिन् कर्मणि वृत्रहन्। तन्मे सर्वꣳ समृध्यतां जीवतः शरदः शतꣳ स्वाहा।।

(7) ओ३म् सम्पत्तिर्भूतिर्भूमिर्वृष्टिर्ज्यैष्ठ्यꣳ श्रैष्ठ्यꣳ श्रीः प्रजामिहावतु स्वाहा।। इदमिन्द्राय-इदन्न मम।

(8) ओ३म् यस्याभावे वैदिकलौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम्। इन्द्रपत्नीमुपह्वये सीताꣳ सा मे त्वनपायिनी भूयात् कर्मणि कर्मणि स्वाहा।। इदमिन्द्रपत्न्यै-इदन्न मम।

(9) ओ३म् अश्वावती गोमती सूनृतावती बिभर्ति या प्राणभृतामतन्द्रिता। खलमालिनीमुर्वरामस्मिन् कर्मण्युपह्वये ध्रुवाꣳ सा मे त्वनपायिनी भूयात् स्वाहा।। इदं सीतायै-इदन्न मम।

(10)ओ३म् सीतायै स्वाहा।।

(11)ओ३म् प्रजायै स्वाहा।।

(12)ओ३म् शमायै स्वाहा।।

(13)ओ३म् भूत्यै स्वाहा।। – पार0 कां0 2

(14)ओ३म् व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा।। – यजु:0 18/12

(15)ओ३म् वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्त्रो वा परावतः।
वाजो नो विश्वैर्देवैर्धनसाताविहावतु स्वाहा।।

(16)ओ३म् वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाँ 2।। ऋतुभिः कल्पयाति। वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयꣳ स्वाहा।।

(17)ओ३म् वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा वर्धयाति। वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयꣳ स्वाहा।। यजु:0 18/32-34

(18)सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक्।
धीरा देवेषु सुम्नयौ स्वाहा।।

(19)युनक्त सीरा वि युगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम्।
विराजः श्नुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पक्तमायवन् स्वाहा।।

(20)लाङ्गलं पवीरवत्सुशीमं सोमसत्सरु। उदिद्वपतु गामविं प्रस्थावद्रथवाहनं पीबरीं च प्रफर्व्यं स्वाहा।।

(21)इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु तां पूषाभिरक्षतु।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समां स्वाहा।।

(22)शुनं सुफाला वि तुदन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अनु यनतु वाहान्।
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्तमस्मै स्वाहा।।
(23)शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम्। शुनं वरत्रा बध्यन्तां
शुनमष्ट्रामुदिङ्गय स्वाहा।।
(24)शुनासीरहे स्म मे जुषेथाम्।
यद्दिवि चक्रथुः पयस्तेनमामुप सिञ्चतम् स्वाहा।।
(25)सीते वन्दामहे त्वार्वाची सुभगे भव।
यथा नः सुमना असो यथा नः सुफला भुवः स्वाहा।।
(26)घृतेन सीता मधुना समक्ता विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः।
सा नः सीते पयसाभ्याववृत्स्वोर्जस्वती घृतवत्पिन्वमाना स्वाहा।।

– अथर्व0 3/17/1–9।।

(27)इन्द्राग्रीभ्यां स्वाहा।। इदमिन्द्राग्नीभ्याम्–इदन्न मम।
(28)विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।
इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः–इदन्न मम।
(29)द्यावापृथिवीभ्याꣳ–इदन्न मम।
(30)स्विष्टमग्ने अभितत्पृणीहि विश्वाँश्च देवः पृतना अभिष्यक्।
सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्धे ह्यजरं न आयुः स्वाहा।।
(31)यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरमग्निष्टत्
स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते
सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः
कामान्त्समर्धय स्वाहा।। इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम।

–शत0 कां0 14/9/4/24।

पूर्णाहुति के पश्चात् हुतशेष हलुवे को वितरण करके भक्षण किया जाए। (खाया जाय)।

संगठन-सूक्त

(एकता संगठन के मन्त्र)

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।।1।।

सरल पाठ

ओ३म् सम् समि द्युवसे वृषन्न अग्ने विश्वा न्यर्य आ।
इडस्पदे सम् इध्यसे स नो वसूनि आ भर।।

हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो, बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं, कीजिए धन-वृष्टि को।।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।2।।

सरल पाठ

सम् गच्छ ध्वम् सम् वद ध्वम् सम् वो मनांसि जानताम्।
देवा भागम् यथा पूर्वे, सम् जानाना उपासते।।

प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम, कर्त्तव्य के मानी बनो।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तेमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।3।।

सरल पाठ

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानम् मनः सह चित्तम् एषाम्।
समानम् मन्त्रम् अभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।3।।

हों विचार समान सबके, चित्त मन सब एक हों,
ज्ञान देता हूँ बराबर, भोग्य पा सब नेक हों।

समानी व आकूतिः, समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो, यथा वः सुसहासति।।4।।

सरल पाठ

समानी व आ कूतिः, समाना हृदयानिवः।
समानम् अस्तु वो मनो यथा वः सु सहा सति।।

हों सभी के दिल तथा, संकल्प अविरोधी सदा।
मन भर हों प्रेम से, जिससे बढ़े सुख सम्पदा।।

शान्ति पाठ

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिब्रह्मशान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

भावार्थ

द्युलोक में शान्ति विद्यमान है, अन्तरिक्ष में शान्ति है, पृथ्वी शान्त है, जल शान्त है, औषधियाँ और वनस्पतियाँ शान्ति देने वाली हैं; सभी दिव्य पदार्थ सुसंगत और शान्त हैं; ज्ञान में शान्ति है, विश्व की प्रत्येक वस्तु शान्ति युक्त है, सर्वत्र शान्ति है, वह शान्ति मुझे भी प्राप्त हो।

शान्ति गीत

शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में,
जल में थल में और गगन में।
शान्ति कीजिये प्रभु .....
अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में, ओषधि वनस्पति वन उपवन में,
सकल विश्व में जड़ चेतन में।
शान्ति कीजिये प्रभु .....

ब्राह्मण के उपदेश वचन में, क्षत्रिय के द्वारा हो रण में,
वैश्यजनों के होवे धन में, और शूद्र के हो तन मन में।
शान्ति कीजिये प्रभु .....
शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में, नगर ग्राम में और भवन में
जीवन मात्र के तन में मन में, और प्रकृति के हो कण कण में।
शान्ति कीजिये प्रभु .....

प्रातःकाल प्रार्थना एवं चिन्तन करने के मन्त्र

प्रत्येक व्यक्ति को प्रातःकाल (सूर्य निकलने से 2 घण्टे पहले) निम्न मन्त्रों द्वारा ईश्वर का चिन्तन करना चाहिए। तत्पश्चात् शौच, दन्तधावन, प्राणायान, व्यायाम, योगाभ्यास, स्नान व सन्ध्या करें।

नोट :- यदि मन्त्र उच्चारण करना संभव न हो तो प्रातःकाल एवं रात्री शयन कालीन मन्त्रों के भावार्थों को कंठस्थ करके प्रार्थना/चिन्तन किया जा सकता है।

ओ३म प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरूणा प्रातरश्विना।
प्रतार्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम।।1।।

ऋग्. 7/41/1

भावार्थ- हे ईश्वर! आप स्वप्रकाशस्वरूप-सर्वज्ञ हैं। परम ऐश्वर्य के दाता और परम ऐश्वर्य युक्त हैं। आप सर्वशक्तिमान हैं। हम प्रातः वेला में आपकी स्तुति-प्रार्थना करते हैं।

ओ३म् प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह।।2।।

ऋग्. 7/41/2

भावार्थ- हे ईश्वर! आप तेजस्वी हैं; ज्ञानस्वरूप हैं। आपने सूर्यादि लोकों को (विशेष रूप से-सब ओर से) धारण किया हुआ है। मैं आपकी हृदय से उपासना करता हूँ।

ओ३म् भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नवन्तः स्याम।।3।।

ऋग्. 7/41/3

भावार्थ- हे ईश्वर! आप सबके उत्पादक और सत्याचार में प्रेरक हैं। आप सत्याचरण करने वालों को ऐश्वर्य देने वाले हैं। आपकी कृपा से हम लोग उत्तम मनुष्य बनें।

ओ३म उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम।।4।।

ऋग्. 7/41/4

भावार्थ -हे ईश्वर! आप असंख्य धन देने वाले हो। हम पर कृपा कीजिए। हम ऐश्वर्ययुक्त और शक्तिमान बनें। हम विद्वानों और धार्मिक लोगों की सुमति (अच्छी बुद्धि) में सदा प्रवृत्त रहें।

ओ३म् भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह।।5।।

ऋग्. 7/41/5

भावार्थ -हे ईश्वर! आप समस्त ऐश्वर्य के दाता हैं। आप ही

हमारे पूजनीय हैं। प्रभु हम पर कृपा कीजिये। हम संसार के उपकार में तन, मन, धन से प्रवृत्त होवें। यही आपसे प्रार्थना है।

रात्रि शयन कालीन मन्त्र

निम्नलिखित शिव संकल्प के छः मन्त्रों का पाठ प्रत्येक व्यक्ति को सोने से पूर्व अवश्य करना चाहिये। इन मन्त्रों द्वारा प्रार्थना करने से मन शुद्ध, पवित्र और शान्त होता है। नींद सात्विक व अच्छी आती है।

ओ३म् यज्जाग्रतो दुरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।1।।

यजु0 34/1

भावार्थ :-जो दिव्य मन, जागते हुए मनुष्य का दूर तक जाता है और जो सोते हुए मनुष्य का उसी प्रकार (दूर तक) जाता है। जो इन्द्रियों को ज्योति देने वाला है, वह मेरा मन शुभ विचारों वाला होवे।

ओ३म् येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसकल्पमस्तु।।2।।

यजु0 34/2

भावार्थ :-जिस मन से कर्मठ और धीर विद्वान लोग यज्ञ तथा शास्त्रार्थों में कर्मों को करते हैं। जो अपूर्व और पूज्य मन प्राणिमात्र के अन्दर है। वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला होवे।

ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।3।।

यजु0 34/3

भावार्थ :-जो मन ज्ञान, स्मृति और धारणा शक्ति का साधन है, जो प्राणिमात्र के अन्दर ज्योति रूप से विद्यमान है, जिसके बिना कोई कर्म नहीं किया जा सकता है, वह मेरा मन शुभ विचारों वाला होवे।

ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगहीतममतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्त होता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।4।।

यजु0 34/4

भावार्थ :-जिस शाश्वत मन से भूत काल, वर्तमान काल और भविष्य काल की सारी वस्तुएँ सब ओर से ज्ञात होती हैं, वह मेरा मन शुभ विचारों वाला होवे।

ओ३म् यस्मिन् ऋचः साम यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभविवाराः।।
यस्मिश्चित्ँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।5।।

यजु0 34/5

भावार्थ :-जिस मन में ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद के मन्त्र रथ के नाभि में अरों के तुल्य जुड़े हुए हैं, जिसमें जीवमात्र का सारा ज्ञान ओत-प्रोत है, वह मेरा मन शुभ विचारों वाला होवे।

ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।6।।

यजु0 34/6

भावार्थ :-जो मन मनुष्यों को चलाता है, जैसे उत्तम सारथि घोड़ों को। जो हृदय में रहता है, अत्यन्त फुर्तीला है और अति वेगशाली है, वह मेरा मन शुभ विचारों वाला होवे।

भोजन के समय उच्चारणीय मंत्र

भोजन करने से पूर्व एवं पश्चात् वेद मन्त्र का उच्चारण करने से प्रभु का अनुभव होता है। भोजन के प्रति आदरभाव बढ़ता है। बाँट कर खाने की भावना जाग्रत होती है।

भोजन से पूर्व उच्चारणीय मंत्र

ओ३म् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्र प्रदातारं तारिषऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

यजु0 11/83

भावार्थ

हे अन्न के देने वाले स्वामी! हमें रोग रहित और पुष्टिकारक अन्न के भण्डार को दीजिए। अन्नादि खाद्य पदार्थों का दान करने वालों को खूब बढ़ाइये, उनका कल्याण कीजिए। हमारे दो पग वाले मनुष्यादि तथा चार पग वाले गौ आदि पशुओं के लिए बलकारक अन्न प्रदान कीजिए। पञ्चमहायज्ञों को स्त्री और पुरुष दोनों प्रतिदिन किया करें।

आत्मोन्नति के लिए संकल्प की आहुतियाँ

प्रत्येक व्यक्ति को आत्म उन्नति के लिए प्रयत्न करना चाहिए। यदि कोई ऐसा दुर्गुण हो जो आत्म उन्नति में बाधक हो तो उसे छोड़ने का मन में दृढ़ संकल्प करे और अच्छे आचरण को धारण करें। परमेश्वर से प्रार्थना करें कि जो संकल्प मैंने किया है आप उसे पूरा करने में मेरी सहायता करें। इसी भावना से अग्निहोत्र करते समय स्विष्टकृत् आहुति से पहले निम्नलिखित पाँच मन्त्रों को बोलकर पाँच आहुतियाँ प्रदान करें।

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम् तेनर्ध्यासम्-इदम्-अहम्-अनृतात् सत्यमुपैमि स्वाहा।। इदमग्नये इदं नन मम।।

ओ३म् वायो व्रतपते.....स्वाहा।। इदं वायवे-इदं न मम।।

ओ३म् सूर्य व्रतपते.....स्वाहा।। इदं सर्यूाय-इदं नन मम।।

ओ३म् चन्द्र व्रतपते.....स्वाहा।।इदं चन्द्राय-इदं न मम।।

ओ३म् व्रतानां व्रतपते.....स्वाहा।। इदमिन्द्राय व्रतपतये-इदं न मम।।

मन्त्र ब्राह्मण 1.6

अर्थ-**अग्ने**- हे ज्ञानस्वरूप। **वायो**-हे सर्वत्र गतिशील। **सूर्य**-हे चराचर संसार के उत्पादक। **चन्द्र**-हे आनन्ददायक। **व्रतपते**-हे व्रतों के पति नियमों के पालक परमेश्वर! मैं आपसे प्रार्थना करता हुआ संकल्प कर रहा हूँ कि- **व्रतं चरिष्यामि**-मैं व्रत का पालन करूँगा। **तत्**-उस व्रत को। **ते ब्रवीमि**-आपके सामने बोलकर ग्रहण कर रहा हूँ। **तत्**- उस व्रत को। **शकेयम्**-पालन करने की शक्ति मुझे दो। **तेन**-जिससे मैं। **ऋध्यासम्**- व्रत को पूरा कर सकूँ। **इदम् अहम्**- यह मैं। **अनृतात्**-झूठ से मिथ्या आचरण से। **सत्यम्**- सत्य को,

उत्तम आचरण को। **उपैमि**- प्राप्त कर रहा हूँ।

इसके बाद गायत्री मन्त्र से आहुतियाँ तथा स्विष्ट्कृद् आहुति प्रदान करके अग्निहोत्र की सब विधि पूर्ण करें।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए आहुतियाँ

यदि शरीर में किसी प्रकार का रोग उत्पत्र हो गया है तो उसे प्रयत्नपूर्वक उपचार व सात्त्विक आहार से दूर करें। अग्निहोत्र की स्विष्ट्कृत आहुति से पहले निम्नलिखित मन्त्रों से आहुतियाँ प्रदान करें। सामग्री में रोग निवारक पदार्थ मिलाये जायें।

ओ३म् त्रयम्बकं यजामहं सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। स्वाहा।।

ऋग्वेद 7/59/12

हे सबके रक्षक प्रभो! आप सर्वज्ञ हो, इसी कारण भूत, भवियत् और वर्तमान को भली-भाँति जानते हो। आप ही सुगन्धि और पुष्टि को बढ़ाने वाले हो। हे प्रभो! जैसे पका हुआ फल स्वयं डण्ठल से छूट जाता है, उसी प्रकार आप हमें मृत्यु से छुड़ाकर अमृत रूपी मोक्ष प्रदान करो।

ओ३म् तनुपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि।।
ओ३म् आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि।।
ओ३म् वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि।।
ओ३म् अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण।।

-यजुर्वेद 3/17

भावार्थ-हे सबके रक्षक, परमेश्वर! तुम शरीर की रक्षा करने वाले हो, मेरे शरीर की रक्षा करो।

हे सबके रक्षक परमेश्वर! तुम तेज को देने वाले हो मुझे तेजस्वी बनाओ।

हे ज्ञानस्वरूप प्रभो! मेरे शरीर में जो-जो न्यूनतायें है उनको दूर करके मेरे शरीर को पूर्णरूप से स्वस्थ बनाओ।

ओ३म् भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमा- क्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः स्वाहा।।

भावार्थ-हे सबके रक्षक परमेश्वर! हम कानों से सदा उत्तम मधुर वचनों को सुनते रहें। आँखों से सदा कल्याण देखते रहें। हमारे शरीर के सभी अङ्ग सदा स्वस्थ और सुदृढ हों और हम पूर्ण आयु को प्राप्त करें।

इसके बाद गायत्री मंत्र से आहुतियाँ तथा स्विष्टकृद् आहुति प्रदान करके अग्निहोत्र की सब विधि पूर्ण करें।

आशीर्वाद

यजमान हाथ जोड़कर प्रभु से स्वास्थ्य की कामना करे। अन्य सभी उपस्थित महानुभाव हाथ में फूल/चावल लेकर खड़े हो जायें तथा निम्नलिखित मन्त्र बोलकर आशीर्वाद दें और यजमान पर फूलों/चावलों की वर्षा करें।

ओ३म् सफला सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओ३म् पूर्णाः सन्तु यज्ञमानस्य कामाः
ओ३म् स्वस्ति! ओ३म् स्वस्ति। ओ३म् स्वस्ति।

हे प्रभो! इस यजमान को सब प्रकार से नीरोग करके इसकी कामनाओं को सफल करो। आपकी कृपा से इसका सदा कल्याण हो।

वैवाहिक वर्षगांठ पर दी जाने वाली आहुतियाँ

1. **ओ३म् समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।**
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ स्वाहा।।1।।

ऋग0 10/55/47

2. **ओ३म् मम व्रते ते हृदय दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु।**
मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् स्वाहा।।2।।

–पार0 1/8/8

3. **ओ३म् अन्नपाशेन मणिना प्राणसूत्रेण पृश्निना।**
बध्नामि सत्यग्रन्थिना मनश्च हृदयं च ते स्वाहा।।3।।

– ब्रा॰ 1/3/8

4. **ओ३म् यदेतत् हृदयं तव तदस्तु हृदयं मम।**
यदिदं हृदयं मम तदस्तु हृदयं तव स्वाहा।।4।।

5. **ओं अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमानाः।**
जात्या पत्ये मधुमती वाचं वदतु शान्तिवाम्।।

देश विदेश तथा दूरस्थ स्थान जाते समय विदाई समारोह हेतु दी जाने वाली आहुतियाँ

1. **ओ३म् ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावा पृथिवी संचरन्ति।**
ते मा जुषन्तां पयसा घृतेन यथा क्रीत्वा धनमाहराणि स्वाहा।।1।।

अथर्व0 3/15/2

2. **ओ३म् स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।**
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि स्वाहा।।2।।

3. **ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वायुनानि विद्वान।**
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।।3।।
यजु0 40/16

4. **ओ३म् तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वं में पाहि आयुर्दा**
अग्नेऽस्यायुर्मे देहि वर्च्चोदा अग्नेऽसि वर्च्चो में देहि।
अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्मऽआपृण स्वाहा।।4।। यजु0

5. **ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेच्छत ꣳ समाः।**
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे स्वाहा।।5।।
ऋग्. 10/85/47

मंगल गीत

सदा फूलता फलता भगवन, ये याजक परिवार रहे।
रहे प्यार जो किसी से इनका सदा आप से प्यार रहे।।
मिथ्या कर अभिमान कभी न जीवन का अपमान करे,
देवजनों की सेवा करके, वेदामृत का पान करे।
प्रभो आपकी आज्ञा पालन करता हर नर नारि रहे।।1।।
मिले सम्पदा जो भी इनको, उसको मानें आप की,
घड़ी न आने पाये इन पर कोई भी सन्ताप की।
यही कामना प्रभु आप से कर हम बारम्बार रहे।।2।।
दुनियादारी रहे चमकती, धर्म निभाने वाले हों,
सेवा के ढांचे में सबने जीवन अपने ढाले हों।
बच्चा-बच्चा परिवार का बनकर श्रवण कुमार रहे।।3।।
बने रहें सन्तोषी सारे जीवन के हर काल में,
हाल चाल हो ऐसा इन का रहें मस्त हर हाल में।
ताकि देश बसाया इन का सुखदायी संतान रहे।।4।।3/14

गृहस्थ-धर्म पञ्चक

(पारिवारिक यज्ञों में इन मन्त्रों की विशेष आहुतियाँ दें।)

सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।।1।।

हे गृहस्थो! तुम सब समान हृदय रक्खो। एक-दूसरे को ऐसे चाहो जैसे गाय सद्यः जात बछड़ को प्यार करती है।।1।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवान्।।2।।

पुत्र पिता का आज्ञाकारी हो, माता में श्रद्धा रक्खे। पत्नी मधुरभाषिणी हो, पति शान्त और मधुर व्यक्तित्व वाला हो।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रताः भूत्वा वाचं वदत भद्रया।।3।।

भाई, भाई के साथ, बहिन, बहिन के साथ तथा भाई-बहिन परस्पर द्वेष न करें। आपस में सदा ही सुखदायक, कल्याणकारी वाणी बोलें।।3।।

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनिज्म।
सम्यञ्चोऽ ग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः।।4।।

हे गृहस्थो! तुम्हारे जलपान, खानपान एवं यान आदि समान हों। तुम्हें चक्र के आरों की भाँति पारस्परिक कल्याण, सद्भाव और उन्नति के धर्मरूप केन्द्र से जोड़ता हूँ।।

सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्त्संवननेन सर्वान्।
देवाइवामृतं रक्षमाणाः सायंप्रातः सौमनसे वो अस्तु।।5।।

हे गृहस्थो! मैं तुम्हें धर्मकृत्य के सेवन के साथ-साथ एक-दूसरे के उपकार में नियुक्त करता हूँ। सायं-प्रातः प्रेमपूर्वक मिला करो। (परस्पर यथायोग्य अभिवादन किया करो) तुम्हारा शुद्धभाव सदा बना रहे।।5।। - अथर्व.काण्ड 3। सूक्त 30। मन्त्र 1, 2, 3, 6, 7

नामकरण संस्कार गीत

खुशी का दिन यह आया है, बधाई हो बधाई हो।
यह शुभसन्देश लाया है, बधाई हो बधाई हो।।
फले-फूले यह देवी, ईश की कृपा रहे इस पर।
ये बालक जिसने जाया है, बधाई हो बधाई हो।।
हो लम्बी आयु बालक की, रखा है नाम जिसका।
क्या सुन्दर यज्ञ रचाया है, बधाई हो बधाई हो।।
सदाचारी-चरित्रवान् हो बलवान् यह बालक।
प्रभु का इस पै साया है, बधाई हो बधाई हो।।
रखा है नम जो सुन्दर, करे यह सार्थक इसको।
हर्ष सब ने मनाया है, बधाई हो बधाई हो।।
करे यह नाम को रोशन, उठाये कुल परिवार अपना।
सभी का मन हर्षाया है, बधाई हो बधाई हो।।
बधाई दे रहे मिलकर, हम इस परिवार सारे को।
सभी ने गीत गाया है, बधाई हो बधाई हो।।

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। यजु. अ. 22 मन्त्र 22

ब्रह्मन्! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्मतेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी।।
होवें दुधारु गौएँ, पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही।।
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवें।।
फल-फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी।
हो योग-क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

भावार्थ :- हे प्रभु! तुम ही माता हो, तुम ही पिता हो, तुम ही बन्धु हो, तुम ही सखा हो, तुम ही गुरु हो, तुम ही आचार्य हो, तुम ही विद्या हो, तुम ही धन हो, हे प्रभु! मेरा यह सम्बन्ध आपके साथ सदा बना रहे।

आर्य-ध्वज गीत

जयति ओम् ध्वज व्योम-विहारी।
विश्व-प्रेम-प्रतिमा अति प्यारी।।1।।

जयति0.....

सत्य-सुधा बरसाने वाला, स्नेह-लता सरसाने वाला।
साम्य-सुमन विकसाने वाला, विश्व-विमोहक भवभयहारी।।2।।

जयति0.....

इसके नीचे बढ़ें अभय मन, सत्पथ पर सब धर्म-धुरी जन।
वैदिक-रवि का हो शुभ उदयन, आलेकित होवें दिशि सारी।।3।।

जयति0.....

इससे सारे क्लेश शमन हों, दुर्मति-दानव द्वेष दमन-हों।
अति उज्ज्वल अति पावन मन हों, प्रेम-तरंग बहे सुखकारी।।

जयति0.....

इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊंच नीच का भेद भुलाकर।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर, पन्थाई पाखण्ड विसारी।।5।।

जयति0.....

इस ध्वज को हम लेकर कर में, भर दें वेद-ज्ञान घर-घर में।
सुभग शान्ति फैले जग भर में, मिटे अविद्या की अंधियारी।।6।।

जयति0.....

विश्व-प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य-अहिंसा को अपनायें।
जग में जीवन ज्योति जगायें, त्यागपूर्ण हो वृत्ति हमारी।।7।।

जयति0.....

आर्य-जाति का सुयश अक्षय हो, आर्य-ध्वजा की अविचल जय हो।
आर्य-जनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी।।8।।

जयति0.....

जयघोष

1.	जो बोले सो अभय-	वैदिक धर्म की जय।
2.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द जी की	जय
3.	महर्षि स्वामी दयानन्द जी की	जय
4.	भारत माता की	जय
5.	गौ माता की	जय
6.	संसार के श्रेष्ठ पुरुषों की	जय
7.	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी की	जय
8.	योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र जी की	जय
9.	धर्म पर बलिदान होने वाले वीरों की	जय
10.	ओ३म् का झंडा	ऊंचा रहे।
11.	आर्य समाज	अमर रहे।
12.	सत्यार्थ प्रकाश	अमर रहे।
13.	कृणवन्तो	विश्वर्मायम्
14.	वेद की ज्योति	जलती रहे।
15.	वैदिक ध्वनि	ओ३म्
16.	वैदिक अभिवादन	सबको नमस्ते जी

।। ओ३म।।

आर्यसमाज के नियम

(विश्व शान्ति के स्तम्भ)

1- सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

2-ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, और सष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

3- वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

4- सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

5- सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

6- संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

7- सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

8- अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

9- प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

10- सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

लेखक परिचय

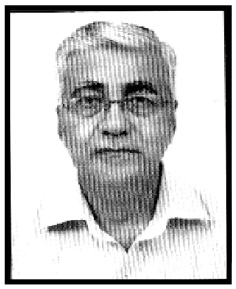

श्री मदन लाल अनेजा का जन्म 10 मार्च 1952 को जिला रामपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। सुप्रीम कोर्ट ऑफ इण्डिया में 22 वर्ष सेवा करने के बाद संयुक्त रजिस्ट्रार के पद से वी0आर0एस0 के अंतर्गत सेवानिवृत्त हुये। 1999 में पुनः राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग में संयुक्त रजिस्ट्रार (विधि) के पद पर 12 वर्ष 6 मास एवं सलाहकार (विधि) के पद पर 2 वर्ष 6 मास तक आयोग की सेवा की।

प्रभु के आशीर्वाद व प्रेरणा से योग व ध्यान में आपकी विशेष रुचि है।

आपके द्वारा पूर्व में लिखित छः पुस्तकें (1) योग चिन्तन-जप एवं ध्यान, (2) वैदिक सन्ध्या व यज्ञ विधि, (3) जीवन-निर्माण एवं उपासना,(4) प्रार्थना उपासना विधि, (5) वैदिक विचार संग्रह भाग-1 एवं (6) वैदिक विचार संग्रह भाग-2 पाठकों के बीच काफी लोकप्रिय हुईं। सभी पुस्तकों में समाज में फैली अनेक भ्रान्तियों पर सरल भाषा में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। उपरोक्त पुस्तकों को www.manavsanskar.com से निःशुल्क डाउनलोड करके दूर-दूर तक भारत व विदेशों में साधक इनका स्वाध्याय कर रहे हैं और अपने जीवन को वेदानुसार चलाने में अग्रसर हो रहे हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लेखक ने सभी धार्मिक एवं नित्य कर्मों में प्रयोग होने वाले वैदिक मन्त्रों का एक स्थान पर संकलन करने के साथ-साथ मन्त्रों के उच्चारण हेतु सरल पाठ और उनका सरल भावार्थ हिन्दी व अंग्रेजी में भी दिया है।

आशा है सामान्य व्यक्ति भी इस पुस्तक से वैदिक मन्त्रों के उच्चारण व सरल भावार्थ को सरलता से सीख सकेगा, उनको कंठस्थ कर सकेगा, धार्मिक व नित्य कर्म स्वयं भी कर सकेगा और यह पुस्तक समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए-भारत व विदेश में-उपयोगी सिद्ध होगी।

सी-79, तक्षशिला अपार्टमेन्ट,
प्लाट नं0-57, आई.पी. एक्सटेंशन,
दिल्ली-110092

विक्रान्त कुमार (मंत्री)
मानव संस्कार फाउन्डेशन